क्रम

बुद्धि की बलिहारी

किसी समय दिल्ली में मोतीचंद नामक एक व्यापारी महाजन रहता था। उसके सिर से माँ-बाप की छाया टल चुकी थी। मरते समय माँ-बाप उसको अनर्गल लक्ष्मी का मालिक बना गये थे। इतनी अधिक दौलत थी कि खर्च करते-करते भी कम नहीं होने पाती थी। तहखाने में एक ओर असली मोतियों की ढेरी लगी हुई थी। दूसरी ओर जिसे कहते हैं जड़ाऊ रत्नों के ढेर लगे हुए थे। एक कोने में असली सोने के पासे रक्खे थे और दूसरी ओर असली चांदी की सिल्लियाँ चिनी हुई थीं। हीरा, माणिक, नीलम और पुखराज की गिनती नहीं थी। नकद रुपयों का तो वहाँ ठिकाना ही नहीं था। बिना प्रकाश के भी जवाहरात जगमगा रहे थे। छप्पन के ऊपर झंडे लगे हुए थे।

ऐसी कहावत है कि बनिया एवं बोहरा ये ही

लोग लक्ष्मी जुटा सकते हैं। बाकी अन्य के यह काम शक्ति के बाहर है। कभी भूले-चूके ईश्वर ने दूसरों को लक्ष्मी दे दी हो तो भी वे उसे पचा नहीं सकते, तुरन्त ही उनमें अफलातूनी आ जाती है।

अनर्गल लक्ष्मी के धनी मोतीचंद सेठ को देखकर कोई अनजान आदमी तो पहली नजर में यही कह देगा : 'होगा यह कोई हल्ली मवाली !' ऐसे थे उनके रंग-ढंग। कोई भी उसका अनुमान लगा ही नहीं सकता।

मोतीचंद के पिता का देहान्त हो जाने के वाद पहली वार ही दरबार भरा गया था। इस कारण उसको दरवार में गये बिना छुटकारा नहीं था। उसने तो समरथ सेठानी से कहा कि : 'वैठी हो जाओ, मैं वादशाह के दरबार में जा रहा हूँ।'

सेठानी ने कहा कि : 'सेठ ! दरवार में इस तरह मत जाना, कोई अपनी दिल्लगी करने लगेगा। जरा बन-ठन के चार घोड़ों की वग्गी में वैठ कर जाना। साख होने पर ही वनिया बनता है और साख नहीं होने पर बनिया मारा जाता है। बादशाह को ऐसा लगना चाहिये कि हमारे नगर में प्रभावशाली वनिया रहता है। रास्ते घिसटते हुए भिखारी के समान

जाओगे तो कोई चपरासी भी तुम्हारी बता नहीं पूछेगा।

मोतीचंद ने तो हीरे के किनारे वाली धोती पहन ली, चीनी रेशम का अंगरखा पहना, माथे पर टेढ़ी बंदेज वाली पगड़ी बांधी। कंधे पर खंभाती खेस डाल लिया। गले में नवलखा कंठा और दसों उंगलियों में जड़ी हुई अंगूठी और पैरों में मखमली जूते पहन लिये। फिर चार सजे हुए घोड़ों की बग्गी में बैठ कर वह जब बाहर निकला, तब ऐसा जान पड़ता था मानों किसी देशी राज-रजवाड़े का दीवान ही जा रहा है।

उस समय राजमहल के झरोखे में चाँद के टुकड़े के समान बादशाह सलामत की चांदबीबी नामक बेगम पड़दा डाल कर मार्ग पर दृष्टि का जाल बिछाये हुए बैठी थी। उसकी नजरों में मोतीचंद सेठ बस गया!

आँखों में बसा ही रहा। जवानी दीवानी होती है। बेगम चाँदबीबी भले-बुरे का विचार खो बैठी। उसने मन में ठान लिया कि इसके लिये यदि आसमान के तारे भी तोड़ने पड़ें तो भी एक बार इस मोतीचंद को हमारे महल में बुलाना ही पड़ेगा।'

मोतीचंद तो बादशाह की कचहरी में चला गया।

बादशाह सलामत सोने के सिंहासन पर विराजमान थे। दरबार ठसाठस भरा हुआ था, सब कोई अपने-अपने योग्य स्थान पर बैठे हुए थे।

थोड़ी देर बाद ही मदमस्त नृत्यांगना पायलों का झंकार करती हुई दरबार में आ खड़ी हुई, मानो मृत्यु-लोक में उतर पड़ी हुई इन्द्रलोक की अप्सरा ही हो। बाजों ने तान छेड़ी और नर्तकियों ने मुजरा शुरू कर दिया। उनकी एक-एक अदा पर दरबारी फिदा होने लगे।

उसके बाद सभी उपस्थित लोगों ने भेंट-सौगात का नजराना बादशाह के चरणों में निछावर कर दिया। देखते-ही-देखते आकाश को छूने वाले नजराने का ढेर लग गया।

बादशाह ने पूछा कि: 'अरे लोगो, अपने नगर में आजकल क्या हाल-चाल है ?'

लुवा ने सात बार कोरनिश करके कहा कि: 'जहाँपनाह ! खुदाताला की रहमो-नजर से अपने नगर में सब जगह आनन्द ही आनन्द है।'

राज्य के संचालन की, न्याय की और दूसरी आड़ी-टेड़ी बातें होकर कचहरी बरखास्त हो गयी।

मोतीचंद चार घोड़ों की बग्गी में लपक कर जैसे ही बैठने वाला था उसी समय चांदबीबी की बाँदी

आकर खड़ी हो गई। उसने कहा कि : 'बेगम साहिबा का हुक्म है कि मुझसे मिलकर जावें।'

'...परन्तु मैं क्या किसी का... ?'

अधबीच में बात काट कर बाँदी ने कहा कि : 'जो कुछ कहना हो वह बेगम साहिबा के आगे ही कहना। उनका हुक्म, इसलिये हुक्म ! हुक्म मस्तक पर चढ़ाकर इज्जत करने पर ही छुटकारा होगा, नहीं तो बुरी बीतेगी।'

मोतीचंद को लगा कि : 'मारे गये बापजी ! यह बला कहाँ से टपक पड़ी ?' फिर यह तो ठहरा राज्य का मामला ना तो कहा ही नहीं जा सकता। होगा जो देखा जायगा। ऐसा विचार करके उसने बेगम के महल की ओर बग्गी हाँकने की आज्ञा दे दी।

मोतीचंद तो फट-फट करता हुआ महल की सीढ़ियों पर चढ़ गया। हुस्न की परी सरीखी चाँदबीबी सोने की सांकल वाले हिंडोले पर झूल रही थी। उसने मोतीचंद को आदाब किया। मोतीचंद ने देखा तो चाँदबीबी की आँखों में कामदेवी मछलियाँ छलाँग मार रही थीं। उसको लगा कि : 'हे भगवान ! यह कैसी लीला है, मैं कहां आ फँसा ?'

बेगम ने कहा : कि 'आओ बैठो, यह सब तुम्हारे

लिये ही है। ये हिन्दुस्तान के असली आम हैं। तुम खाओ और मुझे खिलाओ।'

मोतीचंद के कलेजे में कंपकंपी होने लगी। उसने टालमटोल करना शुरू किया, परन्तु हड्डियों से हथिनी के समान चाँदबीबी छोड़ कैसे देती। उसने तो हाथ पकड़कर मोतीचंद को बगल में बैठा लिया और एक आम की फांक उसके मुख में दे दी।

मोतीचंद भी आम की फांक लेकर चांदबीबी के मुख में डालने जा रहा था तभी हाथ में पकड़ा हुआ चाकू बेगम के तालु में जा घुसा। तालु फट गया और प्राण निकल गये। पिंजर पड़ा रह गया।

मोतीचंद के तो मोती ही निकल गए। वह तो मुँह बाँये देखता ही रह गया, यह क्या हो गया ?

काले कौवे को भी मालूम नहीं पड़े, इसलिये मोतीचंद ने तुरन्त बेगम की लाश को बग्गी में रख लिया और बग्गी तुरन्त ले गया लालभाई तम्बोली के घर।

लालभाई तम्बोली था दिल्ली का नामी ठग। इसके अनेक किस्से थे। किसी का उतार कर किसी को पहना देता तो भी कुछ जानकारी नहीं होने देता, ऐसा उस्ताद।

आधी रात को जाकर मोतीचंद ने लालभाई तम्बोली के घर का दरवाजा खटखटाया ।

'अरे ! यह कौन आ गया ? दो घड़ी सुख से सोने भी नहीं देते ।'

'लालभाई ! यह तो मैं हूँ, जरा दरवाजा खोलो ।'

लालभाई तम्बोली ने आवाज पहचान ली कि निश्चय ही मोतीचंद की आवाज है तो तुरन्त ही छोटी खिड़की खोल दी ।

'अहो हो हो ! सेठ, चोर की सहायता माँगने के लिये इतनी रात को किसलिये पधारे !'

'भाई ! रुपया छिपाने का स्थान तो मिलता है, किन्तु बात छिपाने का स्थान नहीं मिलता ।'

'परन्तु हुआ क्या ? सिर पर आकाश टूट पड़ा क्या ?'

'अनजाने ही अपराध वन गया है । क्या से क्या हो गया । यह वेगम की लाश है, इसको कहीं रफा-दफा करना है ।'

लालभाई तम्बोली को लगा कि हा…वनिया वहुत दिन वाद फंदे में फंसा है !

उसने कहा कि : 'तुम तो शेर के मुख में हाथ

डाल आये हो। रुपया एक हजार नकद लगेंगे।'

'अरे! हजार के चाचा! लो गिन लो, इसी समय!'

लालभाई तम्बोली ने तो पहले एक हजार रुपया गिनकर तिजोड़ी में रख दिये, फिर मोतीचंद से कहा कि: 'जाओ, घर जाकर कान में उंगली डालकर निश्चित होकर सो जाओ, फिर क्या-क्या करना है, यह मेरे मन की बात होगी।'

मोतीचंद को लगा कि: 'चलो, बला टली!'

लालभाई तम्बोली ने तो बादशाह के बाग में पड़े हुए एक बाँस के टोकरे में लाश को रख दिया। बादशाह जिस मस्जिद में नमाज पढ़ने जाया करता था, उसके चौक में उस टोकरे को जा रक्खा।

समय होने पर बादशाह नमाज पढ़ने के लिये आया। जिस जगह टोकरा रक्खा हुआ था वहीं पहुँच कर भूमि में रथ का पहिया टोकरे से जा घुसा।

बादशाह को शक हुआ कि ऐसा क्यों कर हो गया? उसने खुदवा कर देखा तो चाँदबीबी की लाश! उसके तो होश उड़ गये। उसको लगा कि: 'हमारे घर में ही सेंध लगाने वाला यह दो माथे वाला कौन पैदा हो गया।'

बादशाह ने आवाज लगाई : 'है कोई हाजिर ?'

एक को पुकारने पर इक्यासी पहरेदार हाथ में नंगी तलवार लिये उपस्थित हो गये ।

'जाओ ! यह टोकरा किसका है, इसी समय तलाश करो ।'

'अच्छी तरह तलाश करने पर मालूम हुआ कि वह टोकरा बादशाह के बाग के माली का था ।' इस पर बादशाह ने पूछा : 'पूरे दिल्ली नगर में माली कितने हैं ?'

'एक हजार ।' बस्ती की गिनती करने वाले ने उत्तर दिया ।

'हजारों ही मालियों को अँगूठा पकड़ाकर छप्पर पर लटका दो । बुरे काम करने वाले को कैसे छोड़ा जा सकता है ।'

बिना अपराध के ही मालियों की बुरी दशा होने लगी । इसलिये इन्होंने भी लालभाई तम्बोली को बुलवा लिया । इनको आशा थी कि लालभाई तम्बोली के बिना दूसरा कोई हमें छुड़ा नहीं सकता ।

कहावत है कि : 'दाम करे काम और बीबी करे सलाम, कुतिया के आगे रोटी डाल दो ।' बादशाह के सिपाही-प्यादों को खुश करके मालियों को पिछले

दरवाजे से तम्बोली ने भगा दिया। अब लालभाई तम्बोली को लगा कि—'अब बेटा ठीक ठिकाने पर आ पहुँचे हैं।'

लालभाई तम्बोली ने कहा कि : 'रुपया एक हजार नकद दो तो तुम्हें छुड़ाना मेरे बांये हाथ का काम है।'

'तुम्हारे एक हजार तो हमारे एक हजार के ऊपर इक्यावन और। परन्तु हमें छुड़ाओगे कब ?'

'आज शाम को तुम्हें छुड़वा दूंगा। मन में धीरज रखना। अब मुझे जो खेल खेलना है, उसको मैं खेल लूंगा।'

लालभाई तम्बोली ने पदचिह्न खोजने वालों को तलाश किया। उनको उलाहना देना शुरू किया कि : 'भाई पदचिह्न खोजने, तुम मात गये हो। टोकरा तो बांसफोड़ाओं ने बनाया था। इसलिये उनको ही पकड़ना चाहिये। वे ही अच्छी तरह बता सकेंगे कि हमने टोकरा अमुक व्यक्ति को बेचा था। सत्य बात का पता जिस दिन बादशाह को लग जायेगा, उस दिन बादशाह तुम्हारे राई-राई के समान टुकड़े करवा डालेगा।'

पदचिह्न खोजने वालों ने काम का सिरा पकड़

कर कबूल किया कि : 'बात सोलह आना सत्य है···परन्तु हमारी गलती से बिचारे माली मारे जायें, ऐसा क्यों होंवे ?'

'फिर से अच्छी तरह जाँच करने पर मालूम हुआ कि टोकरा मालियों का नहीं है, परन्तु बाँसफोड़ों का है।'

खोजी गये कचहरी में और बादशाह सलामत को कोरनिश करके उन्होंने कहा : 'टोकरा मालियों का नहीं परन्तु बाँसफोड़ों का है।'

बादशाह बोला कि : 'अपने नगर में बांसफोड़ों के घर कितने हैं ?'

'सात सौ सत्तर।' बस्ती के गिनती करने वाले ने उत्तर दिया।

'दौड़ कर तुरन्त जाओ और एक-एक बांसफोड़ों को पकड़ कर हवालात में बन्द कर दो। सूअर के बच्चे ! बिचारों को गरीब समझ कर रहम रक्खो तो वे सिर पर ही चढ़ गये। और गरीब मालियों को छोड़ दो।'

हुक्म हो गया सो हुक्म, उसमें आगे पीछे कुछ नहीं हो सकता। मालियों को छोड़ दिया गया और बाँसफोड़ों को हवालात में बन्द कर दिया। बाँसफोड़ों

ने हाथों से कलेजा थाम लिया। 'अरे भाई! अब यहां से छुटकारा कैसे हो?'

सिपाही सपरों का रौब झेलना बड़ा कठिन होता है। बांसफोड़ा तो खड़े-खड़े ही सूखने लगे। सबने विचार किया कि: 'भाई! यदि इस तरह मारे गये तो बीवी-बच्चों का क्या होगा? सब इसमें से छूटने का कुछ उपाय करो।'

धीरे-धीरे सिपाही सपरा और बांसफोड़ों का श्वास चलने लगा।

'अरे भाई हाथ ढीले होवें तो काम बने' उन्हें सिपाही लोगों ने रस्ता बताया कि लालभाई तम्बोली को तैयार करो तभी तुम्हारा काम बनेगा।'

लालभाई तम्बोली के पास संदेशा भेजा गया। लालभाई तब पान चबाते-चबाते वहां आ पहुँचा।

बाँसफोड़ा तो उनकी विनती करने लगे कि: 'आप हमें इस विपत्ति से बचाओ।'

'रुपया एक हजार नकद चाहिये।'

'हजार रुपये की क्या बात है?' परन्तु अब इसमें से बाहर निकालो।'

'चलो पांच सौ ही दे देना।' गरीब-गरबों पर दया करनी ही पड़ती है। शक्ति देखकर ही बोझा

लादना पड़ता है ।'

लालभाई तम्बोली ने विचार किया कि : अब क्या करना चाहिये ? कुछ देर बाद उसने कहा कि : 'अरे भाई ! तुमसे जब पूछा जाये, तब तुम बेधड़क कह देना कि लालभाई तम्बोली ने ही बेगम साहिबा का खून किया है । उसके बाद तो यह बादशाह है या मैं हूँ । अब तक इसको कोई सिरफिरा मिला ही नहीं है ।'

'शाम के समय बादशाह ने बांसफोड़ों को बुला कर पूछा : 'सात सौ सत्तर में से किस काफिर ने बेगम का खून किया है ? उसको ही पेश किया जाये ।'

बाँसफोड़ों ने तुरन्त ही बेधड़क उत्तर दे दिया कि : 'बादशाह सलामत ! खून हमने नहीं किया है, लालभाई तम्बोली ने किया है ।'

बादशाह को जोश आ गया । लालभाई तम्बोली किस खेत की मूली है । लालभाई तम्बोली ! पकड़ लाओ उस सूअर की औलाद को । और बन्द कर दो उसे हवालात में ।'

सिपाही लोग दौड़ पड़े और लालभाई तम्बोली को पकड़कर अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया । दूसरे

दिन सबेरे ही बादशाह ने हुक्म दे दिया कि लालभाई तम्बोली को फाँसी पर चढ़ा दिया जाये।'

लालभाई ने तो सिपाहियों को अपना बना लिया था। उनके जरिये उसने कहला भेजा कि उसकी एक अंतिम इच्छा है।

बादशाह ने पूछा कि : 'लालभाई तम्बोली ! तुम अब घड़ी दो घड़ी के मेहमान हो, बोलो तुम्हारी क्या इच्छा है ?'

लालभाई तम्बोली ने कोरनिश बजाते हुए कहा कि : 'मरते-मरते अन्तिम बार मैं अपने भाई-बंधु व यार-दोस्तों से मिलना चाहता हूँ।'

'मिल लो, परन्तु तुम एकान्त में नहीं मिल सकोगे। हमें तुम पर विश्वास नहीं होता है। कई बार तुम निगाह बचाकर भाग निकले हो तो यह निश्चित नहीं है कि अब भी तुम वैसा नहीं करोगे, इसलिये मैं वेश बदल कर तुम्हारे पास ही रहूँगा।'

रात हो गई तब लालभाई तम्बोली अपने भाई बन्धु और यार दोस्तों से मिलने के लिये तैयार हो गया। वेश बदल कर बादशाह भी पास ही खड़ा था।

पहले पहल वह गया मोतीचंद सेठ के घर। मोतीचंद ने तो उसका स्वागत करने में देर ही नहीं

की। मुख से स्वागत किया और आपस में गले लग कर मिले। फिर पूछा कि : 'मेरे लायक कोई काम-काज हो तो बताओ ?'

लालभाई तम्बोली ने तो हलके से कहा कि : 'कह रहा हूँ भाई ! आने वाले कुछ समय बाद ही मुझे बादशाह फाँसी पर चढ़ा देगा, यह अन्तिम मुलाकात करने आया हूँ।'

'बादशाह तुमको फाँसी पर चढ़ाने वाला है। इस बादशाह को तो मैं खरीद लूंगा। यह बेचारा तुम्हें फाँसी पर कैसे चढ़ा सकता है ? अभी से गाड़ी-गाड़ा जोड़कर माल चलता कर दूंगा। साढ़े तीन छदाम के बादशाह की छाती फट जायेगी। इसमें मेरा क्या बिगड़ेगा ? दूसरे समय उतना ही मैं फिर कमा लूँगा।'

बादशाह ने भी सब कुछ सुन लिया। वह तो अवाक रह गया। उसको लगा कि इसके पास जितना धन है उसका दसवां भाग भी राज्य भर में नहीं है।

फिर लालभाई तम्बोली और बादशाह दोनों गये दादभा दरबार के दरवाजे पर। लालभाई तम्बोली और दादभा दोनों आपस में बात कर गले मिले।

असल राजपूती ठाट-बाट से दादभा का दरबार

लगा हुआ था। विश्वास दिलाने के बाद माथा कट जाये तो भी पीछा नहीं हटने वाले ऐसे दिलावार दिल के थे दादभा। कावा कसुँबा निकाले, आगे पीछे की बातें हुई। बातों ही बातों में लालभाई तम्बोली ने कहा कि : 'बापू ! यह अन्तिम समय की जुहारू करने आया हूँ। कल सुबह तो मुझे बादशाह सूली पर चढ़ा देंगे।'

दादभा दरबार का हाथ तुरन्त तलवार की मूठ पर जा पड़ा। उसकी आँखों में केसरिया रंग घुल गया। जंगल का सिंह गरजे इस प्रकार उन्होंने गर्जना करके कहा कि : 'लालभाई ! तुम्हारी खातिर नंगे सिर कुरबान करने पड़ें तो भी क्या ? अरे ! मेरे सात वेटे : हरीसिंह, वनेसिंह, फतेहसिंह, महोबत सिंह, मानसिंह, केसरीसिंह और रामसिंह के भी सिर कट-वाने पड़ें तब भी क्या ? परन्तु तुमको मरने नहीं दूंगा। घबड़ाओ मत। कल सवेरा होने दो, कचहरी में ही बादशाह को कल का दिन भारी पड़ेगा।

बादशाह ने यह बात भी कानोंकान सुन ली। उसको तो पूरे शरीर में पसीना आ गया। उसको लगा कि : 'मारे गये मेरे बाप ! ऐसे भाई-बंधु जिसके पास हों उसे फांसी पर कैसे चढ़ाया जा सकता है ? ये लोग तो मेरे ही टुकड़े-टुकड़े कर डालें, ऐसे हैं।

लालभाई तंबोली ने बादशाह से कहा कि : 'खड़े रहो ! एक आदमी से और मिलना है ।'

बादशाह को लगा कि : 'न जाने वह कैसा होगा ?'

चलते-चलते वे नदी के किनारे पहुँचे । लालभाई तम्बोली ने तो आगे बढ़कर आवाज लगा दी :

'अरे ओ जुमला भाई, अरी ओ जुमली भाभी···।'

जुमला वाघरी और जुमली वाघरन नदी के बीच में घुसे हुए तरबूजों की बाड़ी में काम कर रहे थे ।

'मननन······!' करते हुए नदी के बीच से निकल कर एक काले स्याह बाघरी ने आकर लालभाई तंबोली के आगे पड़कर राम-राम की ।

फिर जुमली भाभी का मधु मीठा शब्द सुनाई पड़ा : 'अरे भाई ! कहाँ से आया और यहाँ ही क्यों खड़ा हुआ है ? काली रात का समय है । चलो घर चलें ।'

'जुमली भाभी ! तुम्हारे सोने-चाँदी के तार खींचने वाले औजारों से बड़ा डर लगता है ।'

'भाई ! यह तुमको क्या पहले से जानकारी नहीं थी । चेतावनी दे दी सो तो ठीक है नहीं तो चोरी करने वाले की खोपड़ी के दो टुकड़े तुरन्त कर डालती हूँ ।'

जुमला और जुमली दोनों आगे बढ़कर लिवाने आये और घर ले जाकर पलंग बिछाकर उस पर दोनों को बिठा दिया। 'लालभाई तम्बोली ! चोर को पकड़ने के लिये इतनी रात को क्यों तकलीफ की ?'

'जुमली भाभी ! कुछ मौका ही ऐसा आ पड़ा। कल सबेरे बादशाह मुझे फाँसी पर चढ़ा देगा।'

'अरे ! तो इस प्रकार पहले ही क्यों नहीं कहा। मूर्ख ! बादशाह की देवी को हमारा सुवावड का घाघरा पहना दूँगी ! अरे जुमला ! ले जा अपनी चंदन धो ! और अपनी पाडा जीभी कटार लेकर चल दे। चढ जा सडसडाट करता हुआ महल की छत पर और बादशाह का सिर काट कर ला देगा तभी तुझे मर्द समझूँगी।'

सज-धज के जुमला तो चल पड़ा बादशाह का मस्तक काटने।

बादशाह तो थर-थर कांपने लगा।

घड़ी भर में जाने कहाँ जाकर जुमला हाथ में माथा उछालता हुआ आ पहुँचा।

जुमली के पैरों के आगे मस्तक को जोर से फेंकता हुआ जुमला कहने लगा : 'यही तुम्हारा बादशाह है या और कोई ?'

बादशाह ने देखा तो अपने शाहजादे का मस्तक। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया।

बादशाह ने मन ‹ कहा कि : 'लालभाई तम्बोली को फाँसी पर चढ़ा कर स्वयं मुझे जीवित रहना है या मर जाना है? जिसके ऊपर प्राण निछावर करने वाले ऐसे जिगरी दोस्त हैं उसे मार डालने से क्या मिलेगा? बेगम और शाहजादा दो तो खो दिये। जीवन बचेगा तो और हो जायेंगे।'

बादशाह को लगा कि जिसका डर हो उसी को बख्तर बना लूं तो?

बादशाह ने तब कहा कि : 'लालभाई तम्बोली! तुम्हारा कसूर माफ। आज से तुम ही दिल्ली के दीवान बनाये जाते हो।'

योगराज चावडा

वनराज का पुत्र योगराज चावडा बहुत ही नेक दिल और नीतिपरायण मनुष्य था। भगवान से हमेशा डरता और कभी कोई वुरा करने की नहीं सोचता था।

वनराज का अवसान हुआ तब इनकी आयु अस्सी वर्ष से भी ऊपर थी। इतनी अधिक आयु में वह गुजरात की राजगद्दी पर बैठकर राज्य करने लगा। इतनी उम्र में भी उसमें शक्ति और समझदारी में कोई कमी नहीं थी।

योगराज के मन में एक बात बहुत खटका करती थी। चावडों के राज्य को कोई चोरों का राज्य कहे, यह जानकर इनका रोम-रोम काँप उठता था।

वे तो इस कलंक को दूर करने के लिये रात-दिन सचेत रहते थे। और राज्य में कोई भी चोरी, लूट-पाट न करे या कोई किसी को सतावे नहीं, इसका

विशेष ध्यान रखते थे। ऐसा कोई अपराधी होता तो उसको दण्डित करने से कभी नहीं चूकते। उनको तो अपनी धाक जमानी थी। और चावडों के राज्य में रामराज्य के नाम का डंका बजा देना था।

अमलदारों के लिये भी ईमानदारी रखने के प्रति सख्त ताकीद कर रक्खी थी कि सभी प्रजा के साथ अच्छा व्यवहार करें और किसी को भी हैरान नहीं करें।

उसी प्रकार अपने कुटुंबियों और तीनों पुत्रों को भी पूरी ताकीद कर रक्खी थी कि किसी के पास से कोई भी वस्तु नाजायज तरीके से लेने का प्रयत्न नहीं करें या किसी को भी परेशान नहीं करें, बने जहां तक सबका भला ही करते रहें।
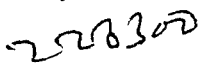
वह तो हमेशा इसी चिन्ता में रहते कि चावड़ों के राज्य के प्रति कोई जरा भी हल्की बात कर सके ऐसा काम कदापि न होने पाये।

वे तो भगवान से बराबर यही प्रार्थना करते रहते कि भगवान हमारे ऊपर चोरी का कलंक मत लगाना।

एक दिन योगराज के पास बड़ा पुत्र आया, उसके साथ उसके दोनों छोटे भाई भी थे।

क्षेमराज ने पिता से कहा : 'किसी परदेशी राजा

के जहाज समुद्र के तूफान में फँस गये हैं और सोमनाथ पाटन के दरया में रुके हुए हैं। सोमनाथ का समुद्र तो अपने राज्य की सीमा में ही है। अपनी आज्ञा के विना वहाँ कोई भी जहाज नहीं आ सकता। यदि आ जाये तो उसको कुछ सजा देने का भी रिवाज है।

क्षेमराज आगे बोला : 'बापू अपने गुप्तचर खबर लाये हैं कि इन जहाजों में दस हजार के लगभग अच्छे किस्म के घोड़े, अट्ठारह हाथी और करोड़ों रुपये का माल लदा हुआ है।'

फिर आगे की बात कहने की हिम्मत नहीं पड़ी हो, इस कारण चुप हो गया। तब योगराज ने क्षेमराज को अपनी बात पूरी करने का इशारा किया।

क्षेमराज भी समझ गया। अब पूरी बात कहे बिना काम नहीं चलेगा। तब उसने आगे कहा : 'बापू ऐसा अवसर तो ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा। यह तो भगवान की बड़ी कृपा है! आप आज्ञा दीजिये, इतनी ही देर है, ये सब हाथी-घोड़े और दूसरा माल आपके सामने लाकर रख दूंगा, आप आज्ञा दो!'

योगराज इन बातों को सहन नहीं कर सके। उन्होंने तुरन्त ही उत्तर दिया : 'ऐसे कामों के लिये मेरी ओर से साफ मना है। तुममें से कोई भी इस काम में

हाथ मत डालना, यह सब नाजायज कहलाता है। इनसे भगवान प्रसन्न नहीं होता है, और वंश के ऊपर कलंक भी लगता है। इन सब बातों के अतिरिक्त हमारे ऊपर लगा हुआ लोक-कलंक अभी तक मिटा नहीं है। तब भी तुम ऐसा अयोग्य काम करोगे तो यह कलंक वज्र के समान पक्का हो जायेगा। और लाख बात की बात यह कि तुम मेरे पुत्र हो, इसको नहीं भूलना। इसलिये पुत्रो! ऐसे लोभ में तुम मत पड़ो और इस लूट को करने का विचार तुम छोड़ दो, तुमको मेरी यही सलाह है।'

तीनों पुत्र सुनते रहे। उनको लगा कि इस विषय में इस बुड्ढे के साथ जबाँदराजी करना बेकार है। और वे तुरन्त चले गये।

पुत्रों के लक्षण देखकर योगराज बड़ी चिन्ता में पड़ गये। उन्होंने सोचा : 'भगवान इस ढलती उम्र में यह एक बड़ा कलंक और लगना ललाट में लिखा है।' परन्तु वह क्या कर सकता था ?

बेटों ने विचार किया : 'इस बुड्ढे की जरूर साठे बुद्धि नष्ट हो गई है। और डर ने इनकी ताकत भी हर ली है। इस कारण ऐसी छोटी, ओछी और अनोखी बातें कर रहे हैं! ऐसा अवसर कोई

वार-वार थोड़े ही आता है। यह अवसर चूका औ
डूवा।'

ऐसा विचार करके अपने साथियों के साथ जहाः
पर जा चढ़े और जहाज का सभी माल लूट लिया।

उनको लगा कि इतना अधिक माल वापू देखेंगे
तो वे हमारा अपराध भूल जावेंगे, वल्कि उलटे अपन
को शावाशी देंगे। अरे ! सोने को देखकर तो मुनिवर
भी ललचा जाते हैं, तो यह तो एक संसारी जीव ही
हैं। और सभी मालमत्ता लेजा कर पुत्र अपने पिता के
पास जा पहुँचे और शावाशी की वाट देखते रहे।

योगराज तो यह सव देखकर स्तव्ध रह गये।
उनके जीव को इतनी अपार वेदना हुई कि उस समय
वेटों को डांट लगाना या शावाशी देना उनको
वेकार लगा। उन्होंने तो मौन धारण कर लिया।

परन्तु क्षेमराज से नहीं रहा गया। उसने पूछा
कि वापू, आप इस काम से राजी हो अथवा नाराज ?

उसको विश्वास था कि इस काम से नाराज होने
जैसी कोई वात नहीं है, तो भी योगराज ने कुछ उत्तर
नहीं दिया। फिर भी योगराज ने कहा : 'पुत्रो ! इस
में मैं क्या वोलूँ ? जो खुश हुआ हूँ, ऐसा कहूँ तो
तुम्हारी लुटारू वुद्धि और उत्तेजित हो, और जो

नाराज हुआ हूँ, ऐसा कहूँ तो तुम नाराज हो जाओ इसका डर है, इसलिये इस बात में तो मौन रहना ही ठीक है।'

बेटों को और अधिक बात करना ठीक नहीं लगा और वे चले गये।

क्षेमराज ने अपने दो भाइयों से कहा: 'यह तो अभी ताजा घाव है, इस कारण चुप ही रहना ठीक है। परन्तु कुछ दिन बीतने पर यह सब अपने आप ठीक हो जायेगा और घी के घड़े में घी भरा ही रहेगा। 'दु:ख की औषधि शान्ति' यह जो कहावत है, गलत नहीं है।

योगराज तो गहरे विचारों में पड़कर पुतले के समान स्थिर हो गये। उनके हृदय में मानों वेदना की आग जल रही थी। यह आग न जाने कब शांत होगी और किसका भक्षण करेगी ?

परिचारक ने आकर योगराज को विचारों से जगाया तब उनसे केवल इतना ही बोला जा सका: 'भाई, हमारे पुत्र तो मेरे लिये आज मृत्यु का निमंत्रण लेकर आये हैं। हे भगवान ! आपने क्या सोचा है ?'

परिचारक बिचारा मानो खिसियाना बन कर सुनता रहा। कुछ भी बात उसकी जबान पर नहीं

योग्य नहीं है, तब फिर मैं ही रह गया, मैं ही इस महादोष का प्रायश्चित करूँगा। इस प्रकार उन्होंने यह अपने मन ही मन निश्चय कर लिया।

फिर उन्होंने राज्य के शस्त्र भंडार में से अपना धनुष मंगवाया और अपने पुत्रों को बुलाया। वृद्ध योगराज ने अपने युवा पुत्रों से कहा : 'तुम्हारे में से जिसमें शक्ति हो वह इस धनुष की डोर चढ़ा दे।'

तीनों पुत्रों ने एक-एक करके जोर आजमाया, परन्तु कोई भी डोरी नहीं चढ़ा सका। तब योगराज ने खेल-खेल में डोरी चढ़ा दी।

पिता के बुढ़ापे की अशक्ति के प्रति बेटों का भ्रम दूर हो गया। और मूक होकर खड़े रहे। शरमा गये। अन्त में वृद्ध ने स्वस्थ और शक्तिशाली आवाज में कहा : 'पुत्रों! तुम्हारा दोष भी हमारा ही दोष गिना जाता है। इसलिये इस दोष के प्रति मैं मरणोपर्यन्त अन्न-जल का त्याग करता हूँ और मैंने चिता में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया है। इस महादोष के निवारण करने का केवल यही मार्ग है। अब हमारे कुल की कीर्ति को कलंक लगाने वाला ऐसा कोई भी काम तुम मत करना। और कुल का नाम उज्ज्वल हो, उसके प्रति सदा जागृत रहना।

एक वृद्ध महिला उसे देखकर कहने लगी : 'तुम केवल यह थैला सुनहरी मोहरों से भर कर यदि घूमो तो बहुत सुन्दर लगोगे ।' जवान ने पूछा : 'यह दौलत कहाँ मिलेगी ?' वृद्ध महिला ने कहा : 'यदि तुम मेरी बातों को ध्यान से सुनो तो मैं तुम्हें दौलत प्राप्त करने का उपाय बता सकती हूँ ।' जवान सहमत हो गया और उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनने लगा । यहाँ एक ही पीपल का वृक्ष है जो इस देश की सीमा पर है । उसके पास जाओ, उसके अन्दर एक गड्ढा है। इस गड्ढे में कूदो और अन्दर चले जाओ । वहाँ तुमको एक बहुत सुन्दर महल मिलेगा । महल के अंदर की ओर एक बड़ा बरामदा होगा । उस बरामदे में तुम्हें एक कुत्ता मिलेगा, जिसकी आँखें नींबू की फांक के समान होंगी, जैसे ही वह कुत्ता तुम्हें देखेगा, भौंकना शुरू कर देगा, और तुम्हें खाने को दौड़ेगा । उस समय तुम उसके मुख पर कपड़ा डाल देना, वह कपड़ा तुमको मैं दे रही हूँ । तब वह तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा । इस कपड़े को मुख पर ढककर उस कुत्ते को नीचे फर्श पर बिठा कर बक्स को खोल डालना । बक्स बहुत सी कीमती चीजों से भरा होगा। उन चीजों को जितनी तुम्हें चाहिये एकत्र कर लेना

और तब कुत्ते पर से कपड़ा हटाकर उसे पहली स्थिति में ही कर देना। फिर तुम पीछे लौटना। वहाँ तुम्हें दूसरा बरामदा मिलेगा। वहाँ भी तुमको दूसरा कुत्ता मिलेगा। उसकी आँखें आड़् के समान होंगी जो एक लकड़ी के बक्स पर बैठा हुआ होगा। पहले के समान ही उस कुत्ते के मुख पर भी तुम कपड़ा डाल देना।

और कुत्ते को फर्श पर बैठा कर वह बक्स खोलना और उस बक्स में से भी जितनी तुम चाहो कीमती

चीजें ले लेना। फिर वहाँ से वापिस लौटकर तुम तीसरे बरामदे में पहुँचोगे। वहाँ भी तुम्हें एक लकड़ी का बक्स मिलेगा, जिस पर एक कुत्ता बैठा होगा, उस कुत्ते की आँखें नारंगी के समान बड़ी होंगी। तुम उससे बिल्कुल मत डरना। वह कपड़ा उसके चेहरे पर डालकर उसे भी फर्श पर बिठा देना। और बक्स खोलकर उसमें से भी बहुमूल्य चीजें चाहो जितनी निकाल लेना। जब तुम वापिस लौटोगे तब तुम्हें एक दियासलाई की डिब्बी मिलेगी जो आम के पेड़ के पास पड़ी होगी। उसको भी ले लेना और लाकर मुझे दे देना। वहाँ पर ही तुम्हारी यह यात्रा समाप्त हो जाती है। यह एक रस्सा मैं तुम्हें और दे रही हूँ। इसका एक सिरा लौटते समय तुम अपनी कमर से बाँध लेना तथा दूसरा सिरा मुझे पकड़ा देना।

सिपाही ने उसकी सभी बातें बड़े ध्यान से सुनीं। उस रस्से का एक सिरा उसने अपनी कमर से बाँधा और दूसरा सिरा महिला को पकड़ा दिया। उसने वह कपड़ा भी अपने साथ ले लिया जो उस वृद्ध महिला ने उसको दिया था। और महल के अन्दर चला गया। उसने कुत्ते के मुख पर उसका चेहरा ढकने के लिये, वह कपड़ा डाल दिया और बक्स को खोल डाला।

बक्स पूरा तांबे के सिक्कों से भरा हुआ था। उसने सिक्कों को अपने थैले में भर लिया और आगे बढ़ गया। वहाँ उसे दूसरा बक्स मिला और कुत्ता भी जिसकी आंखें आड़ू के समान बड़ी थीं। उसने पहले की तरह ही सब काम करके बक्स को खोल डाला। उस बक्स में चाँदी के सिक्के भरे हुए थे। उन सिक्कों से भी उसने अपना थैला भर लिया। और वापिस लौटकर तीसर बरामदे में पहुँच गया। वह तब तीसरे बक्स के पास आया। उसे खोला तो उसमें सोने के सिक्के भरे हुए थे। उसने अपना तीसरा थैला उन सोने के सिक्कों से भर लिया। वह इसके बाद वापिस लौट पड़ा। जब वृद्ध महिला ने उसे देखा, उसने दियासलाई के बक्स के बारे में उससे पूछा। उसने कहा : 'मैं उसे लाना भूल गया।' ऐसा कहकर वह वापिस लौटा और दियासलाई का बक्स ले आया। उसने दियासलाई का बक्स उस महिला को माँगने पर भी नहीं दिया। और उसे बेकार बता दिया। वृद्ध महिला ने उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया। उसने तब वृद्ध महिला का सिर काट डाला और भाग गया। सिपाही ने कुछ समय तक तो अपना जीवन बड़े आराम से बिताया।

जो रुपया उसे प्राप्त हुआ था, उसने लगभग सब

खर्च कर डाला। एक रात जब वह बहुत भूखा था उसने तलाश करना शुरू कर दिया। उसने अपने घर का कोना-कोना छान डाला कि कोई सिक्का कहीं पड़ा हुआ तो नहीं है। उसने फिर दियासलाई की डिब्बी उठाई और उसके सिरे को घिस लिया। सींक जली अवश्य, परन्तु तुरन्त ही बुझ गई। एक नींबू की आँखों वाला कुत्ता उसके सामने प्रकट हुआ और नमस्कार करके बोला 'स्वामिन्! यह सेवक आपकी आज्ञा प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा है।' सिपाही बहुत खुश हुआ बोला : 'मैं बहुत भूखा हूँ। कहीं जाकर मेरे लिये खाने को ले आओ।' कुत्ता अन्तर्ध्यान हो गया और तुरन्त ही एक तांबे के सिक्कों से भरा हुआ थैला लेकर वह प्रकट हुआ। सिपाही ने जब तांबे के सिक्के देखे, तब वह बोला, 'ओह! तुम्हें सोने के लाने चाहिये थे।' तब कुत्ते ने उत्तर दिया : 'कि मैं तो केवल तांबे के सिक्कों का ही रक्षक हूँ। यदि आपको सोने के सिक्के चाहिये तो आपको तीन दियासलाई घिसनी चाहिये।' सिपाही तब चुप हो गया और कुत्ता वहाँ से भाग गया।

दिन बीतने लगे। सिपाही को धीरे-धीरे ज्ञात हो चला कि यहाँ की राजकुमारी बहुत खूबसूरत है और

यह भी उसके विषय में ज्योतिषियों ने बताया है कि उसका विवाह किसी सेना के सिपाही के साथ होगा। वह उसको देखना चाहता था। एक रात को उसने तीन माचिस एक साथ जला दीं। तुरन्त ही एक कुत्ता जिसकी आंखें नारंगी के समान मोटी थीं वहां आ पहुँचा और बोला: 'श्रीमान्! यह सेवक आपकी आज्ञा प्राप्त करने की प्रतीक्षा में है, जिसका पालन मैं तुरन्त हो कर डालूंगा।' सिपाही ने कहा: 'मैंने सुना है कि यहाँ की राजकुमारी बहुत ही सुन्दर है। तुम जाओ और राजकुमारी को यहाँ ले आओ।' कुत्ता दौड़ा हुआ महल में गया और सोती हुई राजकुमारी को वहां से उठा कर ले आया। सिपाही ने उसको देख लिया और तुरन्त उसे महल में वापिस भेज दिया। कुत्ते ने उसकी आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन किया।

दूसरे दिन राजकुमारी ने पूरी कहानी अपनी माता से कह सुनाई। लेकिन उसकी माता ने कहा: 'तुमने आज रात को सपना देखा होगा।' तब उसने यह भो हुक्म दे दिया कि अब रात में राजकुमारी के पास कुछ दासियां भी रक्खी जावें, जो रात में उसकी देख-रेख और सेवा भी कर सकें।

अगली रात भी सिपाही ने यही काम फिर किया। कुत्ता गया और राजकुमारी को ले आया। एक दासी ने भी कुत्ते के इस काम को देखा। और उस जगह को भी ध्यान से देखा, जहां राजकुमारी ले जाई गई थी। जब कुत्ते ने देखा कि उस मकान पर निशान बना दिया गया है, तब उसने उस लाइन के सभी मकानों पर वैसा ही निशान बना दिया। जब दूसरे दिन वह दासी उस मकान को दिखाने राजा को बुलाकर लाई तो वह उस मकान को नहीं जान सकी, जिस पर उसने निशान लगाया था। क्योंकि वहाँ के सब मकानों पर उसी तरह के निशान बने हुए थे।

तीसरे दिन राजकुमारी की माता ने सूराख किया एक थैला आटे से भरकर राजकुमारी की कमर से बाँध दिया। जब कुत्ता उसे ले जाने लगा, तब उसने देखा कि कोई सड़क पर उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। किन्तु वह उस आटे को नहीं देख सका जो राजकुमारी की कमर से बँधे हुए थैले में से निकलकर सड़क पर गिर रहा था। राजा के आदमियों ने तब उस सिपाही को जा पकड़ा और उसे राजा के सामने पेश कर दिया। राजा ने उसको मौत की सजा सुना दी।

राजा के आदमी उसे फाँसी पर लटकाने को तैयार खड़े थे। एकाएक उस सिपाही ने कहा : 'महाराज ! मुझे सिगरेट पीने की बुरी आदत है। मैंने सुबह से ही कोई सिगरेट नहीं पी है। कृपा कर आप मुझे एक सिगरेट पीने की आज्ञा दे दें। उसके बाद आप फांसी पर लटका देना।'

राजा ने कहा : 'तुम सिगरेट पी सकते हो।' तब सिपाही ने एक के बाद एक करके तीन माचिस जला डालीं। तीनों कुत्ते उसी समय प्रकट हो गये और जो रक्षक वहां मौजूद थे, उन सभी को काट खाया। इसके बाद उन्होंने, जो तमाशगीर वहां मौजूद थे उन सबको काटना शुरू किया। इसके बाद कुत्ते राजा और उसके आदमियों पर झपटे। राजा तब डर गया और बोला : 'कृपया कुत्तों को मेरी ओर बढ़ने से रोक दें। मैं अपनी पुत्री का विवाह आपके साथ कर दूँगा।' सिपाही ने यह सुनते ही कुत्तों के मुख पर कपड़ा डाल दिया। कुत्ते वहां से अन्तर्ध्यान हो गये। राजा ने तब अपनी पुत्री का विवाह उस सिपाही के साथ बड़ी धूमधाम से कर दिया। सिपाही और उसकी पत्नी लम्बे समय तक खुशी और शान्ति के के साथ जीवन व्यतीत करते रहे।

कछुवे का डंक

आजी नदी, किनारे का दहीसरा गाँव। वहाँ कुछ वर्ष पहले प्रभाशंकर नाम के एक पटवारी आये। जात का ब्राह्मण और दया धर्म का मनुष्य। प्रतिदिन सवेरे नदी में नहाने आता। प्राकृतिक सुन्दरता का पुजारी प्रभाशंकर नदी के तट पर बैठ कर उसकी हरियाली का आनन्द लिया करता।

तभी तीखी बरछी के समान समुडी की नजर प्रभाशंकर के हृदय को भेदकर आरपार निकल जाती और प्रभाशंकर 'ॐ भूर्भुव : स्व : तत् सवितुर्वरेण्यं' कह गायत्री का फिर एक बार जप जपना शुरू कर देता।

फिर तो ऐसा रोज का नियम प्रभाशंकर का बन गया और समुडी का बकाला को पानी पिलाने निकलना। समुडी कभी-कभी बकाला को गोद में भर-कर प्रभाशंकर के पास नीची नजर करके छोड़ जाती और ऊपर को निगाह किये बिना प्रभाशंकर कुणा-

कुणा चोली टमाटर भिंडी आदि को रूमाल में बाँध लेते और समुडी ति९छी नजरों से देखती-देखती पानी के बहाने छव-छव करती हुई चली जाती ।

प्रभाशंकर घर आकर खा पीकर वजेरी में आकर लेट जाते परन्तु इस बेकार की झंझट के कारण चित्त को चैन नहीं था। स्वप्न में भी समुडी ही दिखाई पड़ती। वही निर्दोष चेहरा, मोटी-मोटी आँखें। कुछ भी चैन पड़े बिना मन के भाव मुख पर आ ही जाते।

इस प्रकार हृदय में बसी समुडी ने प्रभाशंकर को विह्वल का रक्खा था। ब्राह्मण जाति, गोरा वर्ण, दुनिया की नजरों में अनुपयुक्त हो जाये ऐसी अयोग्यता के डर से प्रभाशंकर ने फिर नदी में नहाने जाना भी वंद कर दिया।

सामने ही आजी नदी के बीच में बाघरियों की जात का कुँआ बना हुआ था। उस कुंए में से सत्तरह अठारह वर्ष की एक कन्या समुडी नाम की प्रतिदिन प्रभाशंकर के नहाने के समय भेड़-बकरियों को पानी पिलाने आ जाती। सवेरे का दिन उगते ही सूरज की किरणें जगमगातीं, उनके साथ ही आजी नदी के वहाव में झलकती रहती। सुवह की शीतल पवन का एक हलका झकोरा देकर लीली कुँजार खड़ी हुई पानी की झलक में लहरें उछलने लगतीं। कछुवे आधे पानी में और आधे बाहर गरदन निकाल रहे थे। मछलियाँ जल में दौड़ लगा रही थीं। ऐसे समय समुडी अपने झोंपड़े में से हाथ में तसला लेकर वकरियों को पानी पिलाने निकलती। माथे पर ओढ़नी को कस कर बाँध लेती। खोल में तसला भर कर भेड़-वकरियों के ऊपर छाँटती। घाटी की नितरती नमकीन काया, आंखों में फँस जाने वाली ठूंस-ठूंस कर भरी हुई

जवानी छायी हुई थी। वह पहाड़ की पुत्री के अंग-अंग में फूट रही थी। नदी के तट पर से घूमती-फिरती प्रभाशंकर की नजरें अनायास ही सुमडी पर जा पड़ें ऐसा हृदय में एक शीतल भाव आ रहा था। टेढ़ी गर्दन करके समुडी भी प्रभाशंकर के सामने मन लगा कर देखती रहती।

बाघरियों की इकलौती बेटी समुडी की उमर ब्याह लायक हो गई। इस कारण इसके बाप ने इसका विवाह कर दिया। पाँच-सात बाघरियों के कुटुंबी जनों ने इकट्ठे होकर समुडी की बलायें लीं। बाप के घर से निकल कर समुडी चल पड़ी परन्तु हृदय में घर बनाकर बैठे हुए प्रभाशंकर की मूर्ति उसकी आंखों के आगे नाचने लगी। तिलक छापे लगाये, वदन में गोरे और गोरे मुख की माया में बंधी हुई समुडी गाड़ी के किनारे आकर लुढ़क पड़ी। तब सबको ऐसा लगा कि बाप का घर छोड़ते हुए सबको दुःख होता है। माँ और दूसरी सभी स्त्रियों ने घूंघट ऊँचा करके दो चार आह भर के कहा : 'ले बेटी ! अब गाड़ी में बैठ जा, परन्तु समुडी के पैर वहीं अड़ गये, उठे नहीं। बाप ने उसको गोद में उठा कर गाड़ी में बैठा दिया। परन्तु गाड़ी आजी नदी के पार पहुँची नहीं थी कि

फिर समुडी ने गाड़ी से छलांग लगा दी। हाथ में बँधा हुआ कंगण एक झटके में तोड़ डाला। और गाड़ी में बैठे हुए वाघरी से कहा : 'ले वाघरी, अब मेरी तुम्हारे साथ राम-राम, भूल-चूक कर भी मेरा नाम लेवे तो तुम्हें माता मेलडी की कसम है।' और दौड़ कर समुडी एक सूखे कुँए में जा पड़ी।

वाघरियों की बारात को दो दिन और रोक रक्खा। समुडी के बाप ने पगड़ी उतार कर विनती की परन्तु समुडी एक से दो नहीं हुई। लड़की तो जिद्दी हो गयी है, यह कहकर वाघरी बारात वापिस चली गई।

दहीसरा गांव में भी इस बात की चर्चा फैली 'समुडी ने कंगण डोरा तोड़ डाला और सासरे नहीं गई। बाप के घर में लाड़-प्यार से बड़ी हुई तो उसे सासरे जाना अच्छा नहीं लगा। कहीं वह मर कर फिर वाघरी में ही जन्म नहीं ले लेवे।

इस प्रकार वह सासरे जाने से बच गई। इसमें उसने अपनी वीरता समझी।

इस प्रकार गांव में अनेक तरह की बातें होने लगीं। और प्रभाशंकर को भी ज्ञात हो गया कि समुडी सासरे नहीं गयी। तब इसका मन घबड़ा

गया। अरे ! मैं बामण का बेटा और स्त्री-बच्चों वाला आदमी। फिर सरकारी अमलदार, गांव में इज्जत वाला गिना जाता हूँ। यह बला मेरे गले पड़ती है तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ। और प्रभाशंकर ने दहीसरा से तुरन्त बदली करवा ली। आठ दिन में घरबार का सब सामान गाड़ी में भरकर प्रभाशंकर ने दहीसरा से बिदा ली। गाँव में उसने अच्छा व्यवहार किया था इसलिये उसे गाँव के सभी मुख्य व्यक्ति उस समय बिदा करने आये। गाड़ी नदी के बीच में आयी तब समुडी प्रभाशंकर को कुंए से देख रही थी। वह ऊपर आ कर गाड़ी के साथ-साथ चलने लगी। प्रभाशंकर ने डाँट कर उससे पूछा : 'अरे, तुम्हें कहाँ जाना है ?' खाली हाथ नंगे पैरों से चलती समुडी ने उत्तर दिया : 'तुम्हारे साथ !' समुडी ने एकदम निर्भय होकर कहा। गाड़ी के उसी ओर बैठे हुए प्रभाशंकर ने यह सुन कर समुडी के सामने देखा। चार आंखें फिर एक हो गयीं। समुडी की आँखों से पानी की धार बह रही थी। उसमें मानो एकदम लाचारी भरी हो ऐसी समुडी की आँखें देखकर प्रभाशंकर को बड़ी ठेस पहुँची।

'अरे छोकरी ! तू वापिस चली जा। हमारा

तुम्हारा साथ नहीं बन सकता ।' प्रभाशंकर ने पूरी शक्ति लगा कर उससे कह दिया ।

बस वह रुक गई । समुडी के पैर टूट गये । 'वह कैसा डाँटता है ?' ऐसे प्रभाशंकर के अप्रिय वचनों से उसका शरीर टूट कर शून्य हो गया । उसके लिये बनाई वरमाला भी समुडी ने आजी नदी में बहा दी । पहले बाघरी को राम-राम की, बाप को जाति से बाहर करवा दिया, जात-बिरादरी का प्रकोप झेला और अब प्रभाशंकर इस प्रकार उसे डाँट फटकार कर चले गये । आँखों में सावन भादों का जल बहने लगा । प्रभाशंकर की गाड़ी समुडी को छोड़ धूल की घटाओं में छिप गयी और समुडी भारी पैरों से अपने घर वापिस आ गयी ।

समुडी को क्या खबर थी कि समाज के नात-जात के बंधन उसके निर्दोष प्रेम को इस प्रकार ठुकरा देंगे । समुडी के मस्तक पर मानो आकाश टूट पड़ा ।

केना पाडे, केना पोडिये, केना गाडे भराय ।
अमणा दुःखना आज, बाण भरये विंझरा ।।

डूँगर जैसा दुःख माथे पर डालकर ब्राह्मण चला गया । समुडी कुँए के पास आकर दोनों पैरों के बीच माथा रखकर फूट-फूट कर रोने लगी । बाप ने आकर

पूछा : 'बेटी, क्या हुआ ?' समुडी ने कहा : 'बापू ! मुझे कछुआ डंक मार गया।' 'अररर' कहकर समुडी की उंगली मुख में लेकर बाप चूसने लगा।

समुडी को दूसरे ही दिन ज्वर आ गया और उतार-चढ़ाव प्रतिदिन बढ़ता ही गया। समुडी के बाप ने जोगी बुलाये, डाकलां बैठाये, दाणा देखे, परन्तु समुडी ठीक नहीं हुई। ठीक दो माह में समुडी मर गई। उसको आजी के किनारे जलाकर समुडी का बाप खड़ा हुआ चुपचाप देखता रहा। समुडी इस प्रकार तन्दुरुस्त थी, थोड़े ही मंद ज्वर से किस प्रकार मर गई, बाप की समझ में नहीं आया, केवल प्रभाशंकर के सिवा यह बात किसी ने नहीं जानी।

प्रभाशंकर को समुडी के मर जाने की खबर कई वरस बाद लगी। तलहटी की नौकरी से छुटकारा पाने के बाद उसने पेन्शन ले ली और अन्तिम जीवन प्रभाशंकर ने दहीसरा गाँव में बिताया। और पूरी जिन्दगी प्रभाशंकर समुडी को याद करता रहा। समुडी को जहाँ जलाया गया था, वहाँ एक कलश पानी और दो फूल प्रति वर्ष चढ़ाया करता था। देव की पूजा के साथ भी उसने जिन्दगी भर समुडी की पूजा की और समुडी के प्रेम का अनादर किया था, उसका प्रायश्चित इस भाँति प्रभाशंकर ने किया।

बहू को दण्ड

एक बहुत छोटा गाँव जिसका नाम मुयाता पोयायी था, में एक पति-पत्नी रहते थे। स्त्री बड़ी क्रूर थी और गरीब पति उसकी प्रत्येक इच्छा को पूरी कर दिया करता था चाहे वह गलत ही क्यों न हो। बीवी की माँ और पति की माँ दोनों उनके साथ ही रहती थीं।

बीवी अपनी सासु को बहुत तंग करती। वह उससे पूरे दिन अपने घर का सारा काम कराया करती थी। वृद्धा होने के कारण वह अधिक काम करने के लायक नहीं थी, परन्तु उसे पूरा करने के लिए विवश होना पड़ता था। नहीं तो बहू उसको कांजी नहीं देती। कांजी चावलों का उबाला हुआ पानी होता है। दक्षिण भारत की गरीब जनता कांजी को नमक मिलाकर पीती है।

धीरे-धीरे सासु इतनी वृद्ध हो गयी कि उससे

एक जगह से दूसरी जगह जाना भी नामुमकिन था। बहू ने तब एक बहुत खतरनाक योजना बना डाली। उसने अपने पति को आज्ञा दी कि तुम अपनी माँ को ले जाकर एक जंगल में छोड़ आओ, तभी तुम इस घर में शान्ति से रह सकोगे।

पति के पास इससे सहमत होने के सिवा दूसरा मार्ग नहीं था।

दूसरे ही दिन सुबह ही दोनों माँ बेटा अपनी यात्रा

पर चल पड़े। बहू बड़ी प्रसन्न थी। उसने एक पैकिट कट्टुचदम का अपने पति को खाने के लिए दिया। और एक अपनी सासु के लिये। कट्टुचदम का मतलब है चावल और कढ़ी को मिलाकर बनाये हुए पकवान का और स्वाद के लिये उसमें नमक भी मिला दिया जाता है। अपनी सासु के लिये था गीली मिट्टी का पैकिट।

माँ और बेटे दोनों ने उस गाँव की सीमा पार की। वे अब एक घने जंगल से गुजर रहे थे। वे एक छोटे से नाले के पास पहुँच गये। वे नाले के पास बैठ गये। वे बहुत थक गये थे इसलिये कुछ समय के लिये आराम करने लगे। क्योंकि मां जो बहुत थकी हुई थी, इसलिये उसे नींद आ गयी। बेटा बैठा हो गया और उसने देखा कि मां सो रही है। उसने अपने खाने का पैकिट उठाया और वापिस घर चला गया।

मां कुछ देर बाद जागी और देखा कि उसका पुत्र वहां नहीं है। उसने उसको पुकारना शुरू किया पर पुकारना अब बेकार था। उसका बेटा पहले ही वहां से चला गया था। उसने रोना शुरू कर दिया।

उस समय जंगल की देवी वहां आ पहुँची, पानी के नाले का आनन्द लेने। उसने उसको रोते हुए

देखा । उसने पूछा : 'माता ! तुम रो क्यों रही हो ?' मां ने कहा कि : 'मैं अपने बेटे के साथ परदेस जा रही थी, हम इसी रास्ते से जा रहे थे क्योंकि हम बहुत थक गये थे, इसलिए हम यहां कुछ देर आराम करने रुक गये । मैं जब जागी तो मुझे अपना बेटा यहाँ नहीं मिला ।' ऐसा कहकर वह फिर रोने लगी ।

जंगल की देवी ने कहा : 'माता आप चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारी मदद करूँगी । इस पैकिट में आपने क्या बाँधा हुआ है ?' वृद्धा ने कहा कि : 'इसमें चावल और कढ़ी के अतिरिक्त कुछ नहीं है ।' जंगल की देवी ने वह पैकिट खोला और दोनों ने खा लिया । उस पैकिट में गीली मिट्टी की जगह चावल और कढ़ी ही थे । क्योंकि बेटा गलती से अपनी माता वाला पैकिट ले गया था जिसमें गीली मिट्टी बँधी हुई थी । जंगल की देवी ने बुढ़िया से अपने वर्तमान जीवन का पूरा वृत्तान्त कह सुनाने को कहा । वृद्धा ने जंगल की देवी से अपने जीवन सम्बन्धी पूरी कहानी कह सुनाई जिसमें अपनी पुत्रवधू का अपने साथ किये हुए क्रूर व्यवहार का भी विवरण था । जंगल की देवी को उस पर दया आ गई, उसने कहा : 'मैं तुमको बुढ़िया के बदले जवान बना देती हूँ तथा ताकतवर भी । तुम अपने घर वापिस

चली जाओ। तुम्हारा बेटा तुम्हें प्यार करेगा। तुम्हारी पुत्रवधु भी तुम्हारी देख रेख करेगी, जबकि वह देखेगी कि अब उसकी सासु पूरी ताकत प्राप्त कर चुकी है' ऐसा कहकर जंगल को देवी ने उस वृद्धा को जवान स्त्री के रूप में बदल दिया। उसको उसने गहने भी दे दिये। उसके गहनों में कड़े आदि सभी कुछ थे।

जंगल की देवी ने नई रेशमी साड़ियाँ भी उसे दीं और ब्लाउज भी। उसने साड़ी और गहने पहन लिये और देवी के आगे झुककर उसे प्रणाम किया। तथा उससे छुट्टी लेकर अपने घर चली गई। जब वह घर पहुँची तो उसका पुत्र बहुत खुश हुआ। परन्तु उसकी पुत्रवधु तो उसे देखकर ईर्ष्या से जल उठी क्योंकि उसकी माता तो एकदम बूढ़ी थी। वहू यह चाहती थी कि उसकी मां भी सासु के समान ही फिर जवान वन जाये और उसी के समान चलनें-दौड़ने लगे।

दो दिन गुजर गये। उसने अपने पति को पुकारा और कहा : 'तुम्हारी माँ तो अब फिर जवान हो गयी है। क्या तुम यह नहीं चाहते कि मेरी मां भी तुम्हारी मां की भांति ही फिर जवान वन जाये। कल तुम मेरी मां को लेकर फिर जंगल में चले जाओ और उसी स्थान पर जहां अपनी माँ को छोड़कर आये थे

मेरी मां को भी छो आओ और तुम अपने को वहीं किसी पेड़ की ओट में छिपाकर रुके रहना। जब जंगल की देवी मेरी मां को भी वरदान दे दे, तो तुम मेरी माँ को वापिस ले आना।'

पति ने यह बात मान ली।

दूसरे दिन सुबह ही पति और उसकी सासु दोनों जंगल की यात्रा करने चल दिये। पुत्रवधु ने एक पैकिट चावल और कढ़ी अपने पति को तथा उसी तरह का दूसरा पैकिट अपनी माता को बांधकर दे दिया। जब वे दोनों घने जंगल में जा पहुँचे जहाँ वह नाला था तो दोनों ने वहाँ ही आराम करने का विचार किया। वे वहाँ कुछ देर बैठे रहे। सासु, जो कि बहुत थक गई थी, सो गई। उसका जमाई तमाशा देखने के लिये स्वयं एक वृक्ष के पीछे जा छिपा। जब उसकी सासु नींद से जागी, तब उसे अपना दामाद वहां नहीं मिला। उसने जोर से रोना शुरू किया। जंगल की रानी पहले की भाँति ही वहां आ गई। उसने पूछा : 'माता ! आप क्यों रो रही हैं ?' उस बुढ़िया ने उत्तर दिया, 'जिसके साथ में जंगल में आई थी, वह मेरा दामाद मुझे नहीं मिला, इसलिए मैं रो रही हूँ।' जंगल की देवी ने कहा, 'तुम चिन्ता मत करो, तुम्हें अपना दामाद शीघ्र मिल

जायेगा। इस पाकिट में क्या है ?' बुढ़िया ने उत्तर दिया : 'इसमें चावल और कढ़ी बंधी हुई है।' देवी तव बोली : 'चलो हम दोनों मिलकर इसे खा लें।' और ऐसा कहने बाद देवी ने वह पैंकिट खोल लिया लेकिन जब उसने पैंकिट में चावल और कढ़ी के स्थान पर गीली मिट्टी बँधी हुई देखी, उसे क्रोध आ गया। देवी ने कहा : 'तुमने मुझे यह बताकर धोखा दिया है कि इसमें चावल और कढ़ी बंधी हुई है, जबकि इसमें केवल गीली मिट्टी है। और बुढ़िया को शाप दिया कि 'तुम औरत के बजाय टट्टू बन जाओगी जैसे ही तुम घर पहुँचोगी' और वह अर्न्तध्यान हो गयी। उस बुढ़िया को बड़ा दु:ख हुआ। वह उठ खड़ी हुई और घर की ओर वापिस लौट पड़ी। उसके पैर टट्टू के पैरों के समान चार पैर हो गये। उसका चेहरा भी टट्टू के चेहरे के समान बन गया। धीरे-धीरे क्रमशः उसकी पूंछ भी निकल आयी और कान उगने शुरू हो गये। उसको धीरे-धीरे टट्टू के रूप में बदलते हुए देखने को वहाँ जनता एकत्र हो गई। जैसे ही टट्टू ने ... की भीड़ को देखा उसने लात मारना शुरू कर द[illegible]।

जब वे अपने घर पहुँचे तब घर की मालकिन ने

दरवाजा खोला और उनको देख कर पूछा । : 'मेरी माँ कहाँ है और टट्टू कहां से आ गया ?' उसका पति कुछ देर तक हक्का-बक्का रह गया, वह उसे कुछ उत्तर नहीं दे सका। फिर अन्त में उसे कहना ही पड़ा कि यह टट्टू ही वास्तव में तुम्हारी माँ है। ऐसा कह-कर जंगल में देवी के साथ जो कुछ बीता था वह सब वर्णन कर दिया।

कुछ समय के बाद जंगल की देवी को उस पर दया आ गई और टट्टू को फिर उसकी सासु के असली रूप में बदल दिया।

चालाक नौकर

एक कचारी ब्राह्मण एक नौकर के साथ अपनी सुसराल जा रहा था। ब्राह्मण, अपनी रिवाज के अनुसार सासु को भेंट करने के लिये कुछ केले और खाने की दूसरी चोजें अपने साथ ले जा रहा था। उसने भेंट देने की चीजें एक टोकरी में रक्खीं और वह टोकरी नौकर को ले चलने के लिये दे दी। उसने उस नौकर से कह दिया था कि इन केलों में से तुम बिल्कुल मत खाना। मैं सब काम पीछे की ओर भी उसी तरह देखता रहता हूं जैसा कि सामने की ओर।

इस चेतावनी के बावजूद उस नौकर ने, जो ब्राह्मण के पीछे चल रहा था, कुछ दूर तक चलते रहने के बाद, भूख लगने पर केले के गुच्छे में से एक केला तोड़ कर खा लिया। इसी प्रकार वह चलता रहा और जब तक केले खतम नहीं हो गये, बराबर खाता रहा।

जब ब्राह्मण ने देखा कि केलों का गुच्छा टोकरी में नहीं है तो वह बहुत गुस्सा हुआ और नौकर से पूछा कि : 'उन केलों का क्या हुआ।' 'क्यों' नौकर बिना घबड़ाये बोला—'आपने ही तो मुझ से कहा था कि पीछे की ओर भी अच्छी तरह देख सकता हूँ, इसलिये

आपने ही हर एक केला स्वयं खाया है। आप इस पर और कुछ नहीं कह सकते। मैं यह कैसे जान सकता हूँ कि आपको गुस्सा भी आता है।' तब तो ब्राह्मण कुछ कह नहीं सका।

दोपहर को वे खाना खाने के लिये एक जगह रुके। उनके साथ कुछ भुनी हुई मछलियाँ भी थीं। वे मछली ब्राह्मण ने स्वयं ही पकायीं, क्योंकि वह नौकर के हाथ से पकाई मछली नहीं खाता था। ब्राह्मण ने एक मछली नौकर को परोस दी और शेष अपने लिये रख लीं। जब वे खाने लगे तब नौकर ने धृष्टता से पूछा: 'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यह खवाई मछली अकेली ही तैरती है या अपने झुंड के साथ?' 'क्यों?' 'निश्चय ही अपने झुंड के साथ' ब्राह्मण ने उत्तर दिया। तुरन्त ही नौकर ने जो मछली उसे दी गई थी वह ब्राह्मण की प्लेट में रख दी और कहा: 'ऐसा है तो यह मछली भी अपने झुंड के साथ ही रहनी चाहिये।'

ब्राह्मण ने तुरन्त ही अपना खाना छोड़ दिया क्योंकि नौकर द्वारा छुआ खाना वह नहीं खा सकता था। नौकर ने सब मछलियों का डटकर भोजन कर लिया। ब्राह्मण दिन भर भूखा ही रह गया।

अपने रास्ते में उन्हें कुछ सिमुल वृक्ष मिले। नौकर ने ब्राह्मण से पूछा: 'ये कौन से वृक्ष हैं?' ब्राह्मण पढ़ा लिखा था। उसने उत्तर दिया: 'ये वृक्ष सिरमोला कहलाते हैं।' 'नहीं, नहीं, ये तो हिमोला हैं।' नौकर अपनी बात पर जमा रहा और पाँच मुक्कों

की शर्त लगा ली कि यदि ऐसा नहीं हुआ तो।' आगे उनको कुछ ग्वाले मिले। नौकर ने उनसे उस वृक्ष का नाम पूछा। वे पढ़े लिखे नहीं थे, इसलिये उन्होंने कह दिया कि इस वृक्ष का नाम हिमोलु। और जैसे ही उनके मुख से हिमोलु शब्द निकला, नौकर ने ब्राह्मण को पाँच घूंसे जमा दिये। अगले दिन कुछ गडरिये उस रास्ते से गुजर रहे थे। नौकर ने पूछा : 'श्रीमान् ये कौन से जानवर हैं ?' 'ये चाग हैं।' 'नहीं, नहीं, ये चगाली हैं।' नौकर ने उत्तर दिया 'और इन पर भी आपके लिये पाँच मुक्के' उसने फिर ब्राह्मण को पाँच मुक्के जमा दिये।

दूसरे दिन उन्होंने ने एक सारस का झुंड देखा। नौकर ने ब्राह्मण से पूछा : 'श्रीमान् ये कौन सी चिड़ियाँ हैं ?' ब्राह्मण ने उत्तर दिया : 'यह तो दलदल हैं।' 'अरे नहीं, आप कुछ नहीं जानते। ये वोगुली हैं' 'और इस बार फिर आप पाँच मुक्के हार गये' नौकर ने कहा और फिर उसने ब्राह्मण के पाँच मुक्के जड़ दिये।

जब कि ब्राह्मण की हालत बहुत गिरी हुई थी वे रात के समय अपनी सुसराल जा पहुँचे। ब्राह्मण बहुत भूखा था, इसलिये उसने नौकर को अन्दर भेज

कर कहलाया कि मेरे लिये कुछ खाना तुरन्त तयार कर दें। नौकर अपने मालिक से पहले ही मकान में पहुँच गया और लोगों से कहा कि वे उसके लिये एक बत्तख पका दें। और जब कि माँस पकाया जा रहा था, उसने उसमें चुपके से केले के पेड़ का नमक डाल दिया।

ब्राह्मण बहुत भूखा था। यद्यपि नमक की अधिकता से उसका मुख जल रहा था तो भी वह अपना भोजन किये जा रहा था। उसको अब अन्दाजा हो गया था कि नौकर कुछ चाल चल रहा है। वह नौकर के द्वारा बराबर सताया जा रहा था और अब उसने नौकर से बदला लेने का विचार कर लिया था।

उसने अपने भाई को एक लम्वा पत्र लिखा और शीघ्र ही दूसरा नौकर भेज देने के लिये सूचित कर दिया। नौकर पढ़ा हुआ नहीं था परन्तु उसने पत्र के विषय में अन्दाजा लगा लिया था। वह मार्ग में रुक गया और एक मुसाफिर से उस पत्र को पढ़कर सुना देने के लिये कहा। उस आदमी ने उस पत्र को पढ़ा जिसमें ब्राह्मण ने अपने भाई को लिखा कि वह इस नौकर को तुरन्त मार डाले। उसने यह पत्र सुना

और तुरन्त फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उसने उस अजनबी मुसाफिर से निवेदन किया कि वह इसी प्रकार का दूसरा पत्र उसे लिख दे, उसमें उसने लिखवाया कि, 'प्यारे भाई ! जैसे ही यह पत्र आपको मिले मेरी भतीजी का विवाह इस नौकर से कर देना। मैं इस शादी में हाजिर नहीं हो सकूंगा। लेकिन आप मेरी इच्छा को तुरन्त पूरी कर देना।'

नौकर ने उस पत्र को ब्राह्मण के भाई को दे दिया। वह अपने बड़े भाई की ओर से ऐसा पत्र पाकर बहुत निराश हुआ, परन्तु वह अपने भाई की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सका और उसने अपनी बेटी का विवाह उस नौकर के साथ कर दिया।

ब्राह्मण अपने भाई के पास कुछ महीनों के बाद पहुँचा। उसने सोचा था कि नौकर को मरवा दिया होगा। लेकिन तब उसके अचरज का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने नौकर को अपने दामाद के रूप में वहाँ देखा। उसने निश्चय कर लिया कि इसी रात वह नौकर को मार डालेगा। परन्तु किसी तरह यह बात उसकी भतीजी को मालूम हो गयी और उसने अपने पति से कह दिया कि वह दूसरी जगह अपने सोने का प्रबन्ध कर ले। उसने उसे यह भी समझा

दिया कि अपने पलंग पर वह अपना सिर पैंताने को रक्खे तथा सिरहाने की ओर तकिया पर अपना साफा या और कोई चीज रख दे।

ब्राह्मण रात होने पर अपनी भतीजी के कमरे में उसके पति को मार डालने को प्रविष्ट हुआ। उसने तलवार चलाई और उसको मार डाला। सबेरा होने पर उसे अपनी गलती मालूम हुई। वह ब्राह्मण था। और ब्राह्मण के लिये किसी पशु की हत्या करना भी महापाप था। अपने को पाप से बचाने के लिये उसने गांव के सभी निवासियों को भोजन करने का निमन्त्रण दे दिया।

इसी बीच उसने अपने नौकर से कहा, जो इस समय उसका दामाद था कि वह एक गाय को बाग में गाढ़ दे। उस आदमी ने गाय को बाग में गाढ़ तो दिया, किन्तु उसकी पूँछ बाहर ही निकलती छोड़ दी।

जैसे ही मेहमान वहां आये और भोजन करने बैठे, नौकर बाग में भागा हुआ गया और गढ़ी पूँछ दिखाकर वह सबसे कहने लगा कि इसने तो गऊ की हत्या की है।

मेहमान सब क्रोधित हो गये और भोजन करने से इनकार कर दिया। अरे पाप, महापाप! ब्राह्मण ने गौहत्या की है। और वे अपने घर चले गये। □

हिन्दी लोक-कथा कोश

खण्ड–III
(भाग दो)

क्रम

कठौती में गंगा

किसी समय एक गाँव में एक पंडित रहता था। वह गंगा का बड़ा भक्त था। वह प्रत्येक माह में इस पवित्र नदी में स्नान करने जाया करता था। एक दिन जब वह किसी पर्व के दिन गंगा-स्नान करने जा रहा था, उसके जूते फट गये थे। उनकी मरम्मत करवाने को वह एक चमार के पास गया। यह प्रसिद्ध भक्त रैदास था, जिसकी जाति चमार थी। जब रैदास ने उसके जूते ठीक कर दिये, तब पंडित ने उससे कहा : 'क्या आप लोग गंगाजी के भक्त नहीं हैं? अगर आप गंगा जी के भक्त होते तो आपके सभी रंजोगम दूर हो जाते और आप चमार नहीं बने रहते?'

रैदास बोले : 'यदि मन शुद्ध है, तो एक कठौती भी गंगा बन जाती है, इसलिए मुझे इतनी दूर जाकर गंगा-स्नान करने की क्या जरूरत है?'

पंडित को रैदास की धर्म सम्बन्धी इस व्याख्या को

सुनकर, उन पर बड़ी दया आयी। जब वह रैदास के पास से जाने लगा, तब रैदास जी ने पंडित को दो नारियल दे दिये और कहा : 'मेरी ओर से ये नारियल गंगाजी को भेंट कर देना। लेकिन तभी देना, जब वह अपना हाथ नारियलों को लेने जल से बाहर निकाले।' रैदास की इस मूर्खता से भरी बात सुनकर हँसते हुए पंडित ने उन नारियलों को ले लिया और आगे चल दिया। नहाने के बाद पंडित ने अपनी पूजा समाप्त की और जब वह चलने लगा तब उसे रैदास की भेंट और उसका कहना याद आ गया। उसने नारियलों को बाहर निकालकर अपने हाथ में लिया और बोला : 'गंगा माता ! रैदास ने ये नारियल आपकी भेंट करने भेजे हैं।' तुरन्त ही एक सुन्दर हाथ जो कमल के समान कोमल था और एक सुन्दर कड़ा, जिस पर रक्खा था, जल के ऊपर दिखाई पड़ा। पंडित इस दृश्य को देखकर एकदम चकित हो गया। उसने दोनों नारियल उस हाथ पर रख दिये। अंगुलियों ने उन्हें थाम लिया और कड़ा पंडित को दे दिया। वह कड़ा बेशकीमती जवाहरात से जड़ा हुआ था। गंगा जी ने कहा : 'यह कड़ा रैदास को दे देना।'

पंडित जी को जब गंगाजी ने रैदास जी को देने

के लिये कड़ा दिया, तब उन्हें बड़ा अचंभा हुआ । जब वे वापिस आ रहे थे, तब उनके मन में एक गंदा विचार उत्पन्न हो गया ।

उसने सोचा यदि यह कड़ा मैं राजा को दे दूँ और कहूँ कि गंगा माता ने यह कड़ा मुझको दिया है, तो मैं राजा के द्वारा बड़ी इज्जत तथा अच्छा इनाम प्राप्त कर सकूँगा । जिसके साथ मुझे धन और दौलत दोनों प्राप्त होंगे ।

पंडित ने वह कड़ा रैदास को नहीं दिया । उसके बजाय वह राजा के पास चला गया और कड़ा राजा को भेंट कर दिया । राजा कड़े को देखकर खुश हो गया परन्तु उसने कहा, 'यह बहुत सुन्दर कड़ा है, परन्तु अकेला एक कड़ा हमारे क्या काम का ! गंगा माता आपकी भक्ति एवं पूजा से आप पर प्रसन्न हैं । मैं आपको अपने साथ ले चलता हूँ । हम लोग वहाँ समय पर पहुँच जायेंगे ।'

पंडित काँप उठा । परन्तु इस पर वह कुछ कह नहीं सकता था । गंगा के किनारे पहुँच कर उसने गंगा जी को प्रसन्न करने के अनेक प्रयत्न किये, आँसू भी बहाये, परन्तु कुछ फल प्राप्त नहीं हुआ, सब बेकार गये ।

यह सब देखकर राजा गुस्से में भर गया। उसने कहा : 'तुम झूठे हो, धोखेबाज और कपटी हो। सच बताओ यह कड़ा तुम्हें कहाँ मिला ? नहीं तो मैं तुम्हें कड़ी सजा दूँगा।' आँसू बहाते हुए पंडित ने सच्ची बात सब कह दी।

राजा पंडित को साथ लेकर रैदास के यहाँ पहुँचा उसके साथ अपने अंगरक्षक भी थे। उसने रैदास को पूरी कहानी कह सुनायी और फिर कहा : 'मुझे आप यह कड़ा दे दीजिए और गंगा माता से इसकी जोड़ी का दूसरा कड़ा भी प्राप्त करके मुझे दे दें। मैं आपको कुछ ही देर में गंगा के किनारे पहुँचा देता हूँ, जहाँ आप देवी से इसके लिये प्रार्थना कर सकते हैं।'

रैदास जी ने उत्तर दिया : 'मुझे गंगा नदी के पास जाने की क्या जरूरत है ? यदि मन शुद्ध है तो गंगा जी कठौती में भी आ जाती हैं। परन्तु मैं आपको दूसरा कड़ा इस शर्त पर दे सकता हूँ कि आप इ पंडित जी को छोड़ देंगे।'

राजा ने ऐसा ही करने का वायदा किया। रैदा जी ने एक कठौती में पानी भरा और कहा : 'गंगा माता हमारे राजा आपका दिया हुआ कड़ा तथा उसकी जोड़ी को चाहते हैं। कृपाकर मेरी प्रार्थना पर इन

दूसरा कड़ा भी प्रदान करें।' सुनते ही वैसा ही कमल के समान हाथ कठौती के पानी पर तैरता हुआ दिखाई पड़ा और उस पर दूसरा कड़ा भी, पहले ही जैसा रक्खा हुआ था। रैदास ने कड़े को ले लिया और राजा को दे दिया, तब हाथ अन्तर्ध्यान हो गया।

तमाम सिपाही, पंडित और राजा नीचे झुके और रैदास के पैरों पर गिर पड़े।

बुद्धि का चमत्कार

गुजरात में त्रंबावटी नाम का एक नगर है। उसमें त्रंबकसेन नाम का राजा राज्य करता था। राजा के प्रेमाशा नाम का दीवान था। प्रेमाशा की अवस्था पूरी हो गई थी। इस कारण काल पाकर उसका अवसान हो गया। प्रेमाशा के पद पर डाह्याशा नामक नया दीवान हो गया।

मरने वाले प्रेमाशा दीवान के वीरचंद नामक पुत्र था। कहा गया है कि लड़का जब दस वर्ष का हो जाये तब तक उसमें समझदारी नहीं आती। सोलह वर्ष का होने तक सान-मान नहीं आता और बीस वर्ष होने तक शारीरिक गठन ठीक नहीं होती। उसके वाद ही उसके गुणों का चमत्कार देखने को ।मलत है।

वीरचन्द ने अपनी माँ से पूछा कि 'मेरे पिता क्या काम करते थे?'

'बेटे ! तुम्हारे पिता राज्य के दीवान थे। इस समय के समान तब हमारी स्थिति नहीं थी। उस समय तो हमारी बड़ी शान-शौकत थी। सली सलाम करते थे। समय-समय की बात है। आजकल अपनी दशा गिरी हुई है, इस कारण कोई भी बात नहीं पूछता। घर पुराना हो गया है, लक्ष्मी के विना शोभा
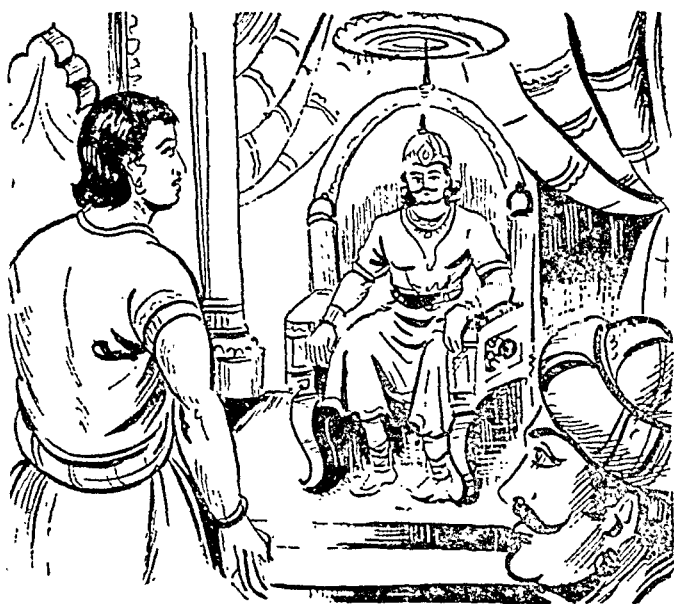
कैसी ? तुम्हारे पिता के साथ सब कुछ चला गया। ऐसा कहकर बुढ़िया ने गहरा निःश्वास छोड़ा।

वीरचंद ने कहा : 'माँ ! चिन्ता-फिकर मत करो। मालिक की कृपा होगी, तो फिर सब कुछ पहले जैसा हो जायेगा। गया हुआ वापिस आयेगा तथा नये रूप से शोभा बढ़ेगी।

वीरचंद तो लिख-पढ़ कर बहुत चतुर हो गया था। चौदह विद्या और चौंसठ कलाओं में प्रवीण था। बाप-दादा से विरासत में मिला चतुराई का खजाना उसमें उसमें ठूंस-ठूंस कर भरा हुआ था। इस प्रकार पूर्ण रूप से तैयार हो चुकने के बाद उसने भाग्य आजमाने का निर्णय कर लिया।

वीरचंद ने एक दिन अपनी माँ से पूछा कि : 'माँ! मेरे पिता कौन सी पोशाक पहना करते थे ?'

माँ ने तब सन्दूक में हिफाजत से रक्खी उसके पिता के पहनने की सभी चीजें निकालकर दे दीं।

वीरचन्द सबसे पहले बजाज के यहाँ गया। जाकर वह बोला : 'दीपचन्द सेठ ! इस तरह का कपड़ा तुम्हारे पास है ?'

दीपचन्द सेठ ने कपड़ा हाथ में लेकर ध्यान से देखा। फिर बोला : 'पैसा खरचोगे तो मिल जायेगा, क्यों नहीं मिले ?'

वीरचन्द ने महंगे मूल्य का बढ़िया कपड़ा लिया

और दाम चुकता कर दिये ।

उसके बाद गया गिधा दरजी के यहाँ । गिधा दरजी तो रजवाड़ों के ही कपड़े सिया करता था । इस कारण उसके बाप की जैसी सिलाई पूरी त्रंबावटी में कोई नहीं कर पाता था । इस कारण वह मुंहमांगे दाम लेकर ही कपड़े सिया करता था ।

वीरचन्द ने उससे कहा : 'गिधा दरजी ! मुझे इसी प्रकार के कपड़े सीं दो । तिलभर भी फरक नहीं होना चाहिये ।'

गिधा दरजी ने उत्तर दिया : 'हम हैं राज-रजवाड़े दरजी, इस काम के विषय में आपको कहना नहीं पड़ेगा ।'

फिर वीरचन्द मावजी मोची की दुकान पर गया । अपने बाप के जूते दिखाकर उसने कहा : 'कारीगर ! बिल्कुल ऐसे ही जूते बना दो ।'

मावजी मोची ने कहा : 'इसमें क्या बड़ी कारीगरी दिखानी है । ऐसे ही, बल्कि इनसे भी अच्छे जूते मैं बनाना जानता हूँ ।'

वीरचन्द को इसकी बातों में मजा आ गया, इसलिये उसने पूछ लिया : 'कैसे ?'

'कैसे तो जब पैरों में पहनोगे तब मालूम पड़ेगा :

'राम···राम··· के शब्द सुन लोगे ।'

'वाह ! कारीगर, तुम्हारी कला को। हमारे लिये तो ऐसे ही जूते बना दो ।'

'असली को भी नीचा दिखा दें तो कहना, परन्तु रुपया पच्चीस लगेंगे ।'

'पच्चीस ही लो काका, अपनी ओर से कोई ना नहीं । कब लेने आऊँ ?'

वीरचन्द तो गिधा दरजी द्वारा सिले हुए कपड़े रेशम के जड़े हुए और बढ़िया ढंग से पगड़ी बांधकर तथा मावजी मोची द्वारा सिले हुए मखमल के जूते पहने और हाथ में सिरोही की बनी तलवार लेकर अपनी माता को नमस्कार करके दरबार में चल दिया।

दरबार ठसाठस भरा हुआ था । सोने के सिंहासन पर राजा विराजमान थे । प्रधान, सामन्त, दरबारी और भाई बंधु बैठे हुए थे । अमलपानी हो रहा था, हुक्का भी फिराया जा रहा था । बारैठ लोग दरबार का रंग बढ़ा रहे थे । ऐसे अवसर पर वीरचन्द कचहरी में जा पहुँचा । वह तो एक कोने में, जहां जूतों का ढेर लगा हुआ था, वहां जाकर बैठ गया । समय बीतने पर कचहरी बरखास्त हो गई । उसके बाद वीरचन्द उठकर घर चला गया ।

एक दिन, दो दिन, तीन दिन……इस प्रकार दिन ऊपर चढ़ने लगे। कोई उसके साथ बोले न चाले। सरदार मुख से मुख भिड़ाकर आपस में घुस-घुस करते रहते : 'बाप दीवान था, इसलिये बेटा भी दीवान पद प्राप्त करने के लिए चक्कर लगा रहा है। ऐसे क्या दीवान के पद मार्ग में बिखरे पड़े हैं, जो मिल जावें।'

एक दिन पूरा दरबार भरा हुआ था। इतने में बाहर की ओर बैठे हुए वीरचन्द पर राजा की नजर जा पड़ी। उसने कहा : 'तुम प्रतिदिन आते हो। कुछ भी न तो बोलते हो, न चालते हो, चुपचाप बैठे देखते रहते हो। तुम्हें क्या कहना है ?'

वीरचंद ने विनयपूर्वक खड़े होकर कहा : 'मालिक ! आप आज्ञा दें तो कुछ पूछूं ?'

राजा ने कहा : 'पूछो न भाई ?'

उस पर वीरचन्द बोला : 'महाराज ! बुद्धि क्या खाती है ?'

'हत्त रे की ! बुद्धि ठिकाने है या बहक गई है ? बुद्धि क्या बकरी है, जो उसे खाने को चाहिये।'

एक दरबारी बोला : 'महाराज ! यह गरीब कुछ दिन से गांव में चक्कर काट रहा प्रतीत होता है। इसलिये इसकी अललटप्पु सरीखी बात मत सुनो।'

'राजा विचारों के चक्कर में पड़ गया। थोड़ी

देर बाद राजा ने पुकारा : 'प्रधान जी !'

'जी महाराज !'

'इस लड़के का सवाल ठुकराये जाने लायक नहीं है। बुद्धि को ठिकाने लाकर इसका उत्तर दो। तुम तो चतुर सुजान हो।'

'महाराज ! कुछ सोचना-विचारना पड़ेगा, ऐसी बात है। यह लड़कपन भी कहा जा सकता है, इस कारण टाल देने जैसा सवाल पूछ बैठा है, परन्तु मैं कुछ ओछा उत्तर नहीं दे सकता। इस कारण दो दिन विचार करने के लिये छुट्टी प्रदान करें।'

'दो दिन ये भी सही। इसमें हरारा क्या बिगड़ता है, बस ठीक।'

फिर कचहरी बर्खास्त हो गई।

डाह्याशा दीवान को चैन नहीं पड़ रहा था। उसको बैठते-उठते तनिक भी चैन नहीं था। खाना-पीना भी अच्छा नहीं लग रहा था। उसकी बुद्धि शून्य हो गयी थी। उसे लगा कि : 'यह मच्छर फल-रूप भेजा में से ऐसा सवाल पूछ बैठा है। मेरे लिये तो दीवान पद बचाने का सवाल पैदा हो गया है। यदि कल उठकर इस सवाल का उत्तर नहीं दे सका तो राजा इस दीवान पद को छीन लेगा तो......?'

दीवान के तो तलुओं में आग लग गई।

बकरी के मुख में जीरा। डाह्याशा को कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ रहा था। उसको तो दीवान पद की कुर्सी डोलमटोल करती दिखाई पड़ी। इस कारण वह तो सबसे लुक-छिपकर जैसे तैसे वीरचन्द के घर पहुँच गया।

वीरचन्द तो पलंग बिछाकर गद्दी-तकिया लगाये लेटा हुआ था। दूध जैसी चादर पलंग पर बिछी हुई थी, जिस पर डाह्याशा दीवान को बड़ी इज्जत के साथ उसने बैठाया और घर की इज्जत के अनुसार आदर सत्कार किया।

डाह्याशा दीवान ने कहा : 'बेटे तुमने जो सवाल पूछा है, उसका उत्तर तुम्हारे सिवा और कोई नहीं दे सकता। तुम मुझे बताओ कि : 'बुद्धि खाती क्या है ?'

वीरचन्द भांप गया कि डाह्याशा दीवान कितने पानी में है। उसको तो उसने फटकार कर के कह दिया कि : 'इसका उत्तर मुझे नहीं मालूम।'

'परन्तु तुम बता दो। तुम कहोगे वह दे दूँगा।'

'ऊँहूँ' कहकर वीरचन्द नें गर्दन हिला दी।

'रुपया एक हजार नगद गिना दूंगा।'

'ना।'

'दो हजार दे दूं ?'

'वे भी नहीं।'

'पांच हजार दे दूं ?'

'नहीं जी नहीं।'

'तो ! दस हजार दे दूं ?'

वीरचंद ने विचार किया: 'दस हजार में उत्तर देना कम नहीं होगा।'

इस कारण उसने कहा: 'सुनो ! वुद्धि गम खाती है।'

डाह्याशा ने वीरचंद से सवाल का तफसील से उत्तर सुन लिया।

दूसरे दिन दरवार भरा गया।

राजा ने पूछा कि प्रधान जी सवाल का उत्तर दो: 'बुद्धि खाती क्या है ?'

'महाराज ! वुद्धि गम खाती है। बुद्धिशाली मानव समय देखते हैं। संजोग पहचान कर और गम खा जाते हैं। समय देखकर ही चोट करते हैं। इस कारण बुद्धिमान गम खा जाते हैं।'

राजा ने कहा: 'शावास, प्रधान जी !'

वात की गाँठ बैठ चुकी थी, इस कारण दरवारी लोग गर्दन हिला हिला कर कहने लगे: 'भाई ! कहना

ही पड़ेगा कि दीवान का उत्तर बावन तोला पाव रत्ती ठीक है।'

फिर राजा ने वीरचंद को कहा कि : 'और क्या पूछना है ?'

'हाँ महाराज ! बुद्धि गम खाती है, किन्तु पीती क्या है ?'

राजा ने कहा : 'प्रधान जी !'

'जी महाराज !'

'दे दीजिये उत्तर।'

'महाराज ! दो दिन की मोहलत दीजिये।'

'दो दिन बाद सही। हमारे यहां क्या दो दिन में अकाल पड़ जायेगा।'

'फिर तो कचहरी बरखास्त हो गई।'

डाह्याशा दीवान को लगा कि : 'मेरा बेटा ! भारी पड़ा। पहले सवाल का उत्तर देने के लिये तो दस हजार खर्च करने पड़े, अब इसका उत्तर देना है तो यह जितने मांगेगा, उतने देने पड़ेंगे। यदि सिर सलामत है तो पगड़ियों की क्या कमी है। हमारे सामने तो दीवानपने का प्रश्न है।'

डाह्याशा तो दबे पांव पहुँच गया वीरचन्द के घर। वह बैठे, कुछ इधर-उधर की बातें हुई, फिर-

डाह्याशा कहने लगे : 'बुद्धि पीता क्या है ?'

'नहीं बताऊँगा ।'

'दस हजार नगद गिन दूंगा ।'

'ऊँ......हूँ ।'

'पन्द्रह हजार दूँगा ।'

'......तो बता देता हूँ । सुनो : 'बुद्धि बात पीती है ।'

डाह्याशा ने वीरचंद के पास से पूरा उत्तर समझ लिया ।

अगले दिन दरबार भरा गया ।

राजा ने पूछा : 'प्रधान जी ! उत्तर दीजिये कि बुद्धि पीती क्या है ?'

डाह्याशा दीवान ने तो वीरचन्द का बताया हुआ उत्तर बताना शुरू किया : 'महाराज ! बुद्धि गम खाती है और बात पीती है । दो आदमी बात करते हों तो चतुर सुजान आदमी तुरन्त बात का तत्व प्राप्त कर लेता है । आधे अक्षरों में ही पूरा अर्थ समझ लेता है, बात का मर्म प्राप्त कर लेता है । फिर तो पौबारह, विजय का डंका ।'

राजा ने फिर कहा : 'शाबाश, प्रधानजी !' ऐसा कह कर डाह्याशा का कंधा थपथपाया । दरबारी भी

कहने लगे : 'वाह, डाह्याशा ! बलिहारी है तुम्हारी बुद्धि को।'

फिर राजा वीरचंद से बोले : 'अब और क्या पूछना है ?'

वीरचंद ने खड़े होकर विनय सहित कहा : 'आपकी आज्ञा हो तो पूछूं ?'

राजा ने कहा : 'पूछो, पूछो, हमको भी जानने एवं समझने को मिलता है। हमारे दीवान डाह्याशा उसका भी उत्तर दे देंगे।'

वीरचंद ने कहा : 'बुद्धि रहती कहां है ?'

राजा ने कहा : 'दीवान जी ! दे दो उत्तर।'

डाह्याशा दीवान बोले : 'महाराज ! विचार करने के लिये समय दीजिये। ऐसे क्या अंधाधुँध अधूरा उत्तर थोड़े ही दिया जा सकता है।'

'विचार कर लो दो दिन बाद सही। हमें क्या जल्दी है।'

कचहरी बरखास्त हो गई।

डाह्याशा दीवान की तो बुद्धि मंद पड़ चुकी थी। उसने तो अपने को वीरचंद के यहाँ गिरवी रख छोड़ा था। इस कारण वह तो रात होते ही जा पहुँचा वीरचन्द के घर।

डाह्याशा दीवान को देखकर वीरचन्द के मन में आया कि : 'आने दो ! बोरडी के ऊपर से टपाटप बेर झाड़ लिये जाते हैं उसी प्रकार मैं भी झाड़े ले रहा हूं। आता है नहीं और गद्दी पर बैठ गये। ऊपर का माल खाली है और बैठ गये दीवानपना चलाने। कितने बीसी सौ होते हैं, इसकी खबर तो अब पड़ेगी।'

डाह्याशा दीवान कहने लगे कि : 'बेटा ! अभी से चादर तानकर भले ही सो जाओ, परन्तु यह तो बता दो कि बुद्धि रहती कहाँ है ?'

'नैवेद्य में नौ हजार !'

'इतने ही में कौन हाथ डाले ?'

'पंदरह हजार दे दूं ?'

'ऊँ हूँ।'

'बीस हजार दे दूँ।'

'ऊँ हूँ।'

'अरे ! पच्चीस हजार ले ले और क्या ?'

'...तो उत्तर देता हूँ, सुनो, बुद्धि पंचों में रहती है।'

वीरचंद ने तो चीरफाड़ कर उत्तर दे दिया और डाह्याशा रटता रहा।

अगले दिन दरबार लगा। राजा ने पूछा : 'प्रधान

जी ! पहले इस सवाल का उत्तर दो कि बुद्धि रहती कहाँ है ?'

फिर तो डाह्याशा जिस प्रकार पढ़ाया हुआ तोता बोलता है, उसी प्रकार कहने लगा कि : 'बुद्धि पंचों में रहती है, पंच ही परमेश्वर कहलाते हैं। अकेला आदमी तो स्वार्थ की बात कर सकता है कि किसी का पक्ष लेकर वह अन्याय करने लगे, परन्तु पंच बैठे हों तो वहाँ न्याय ही होता है, पंचों की बुद्धि कदापि नहीं बिगड़ती। लड़ाई-झगड़े या गाली गलौज में पंचों का आश्रय लिये बिना छुटकारा नहीं मिलता। इसलिये कहा जाता है कि बुद्धि पंचों में रहती है।'

'वाह, प्रधान जी ! वाह ! चतुरता का समुद्र तो यहीं भरा हुआ है।'

ऐसा कहते हुए दरबारी-गण भी चिल्ला उठे।

परन्तु अन्दर का भेद तो डाह्याशा का दिल ही जानता था।

इस प्रकार समझदार डाह्याशा वीरचंद की बुद्धि पर न्यौछावर हो गये। वे अपने आप कहने लगे : 'भाई छोटे से छोटा तो भी राई का दाना तेल पूरित।' इसका बाप कौन था ? बाप की अपेक्षा बेटा सवाया बने यही तो इसका नाम।'

7-11-93

राजा ने फिर वीरचंद से कहा : 'भाई अब क्या पूछना है ?'

वीरचंद ने कहा : 'हाँ बापू ! प्रधान से पूछिये कि बुद्धि देती क्या है ?'

डाह्याशा दीवान की तो छाती फटने लगी। उसको लगने लगा कि इसकी बुद्धि के खजाने ने तो हमारी लक्ष्मी का खजाना लूट लिया। अब क्या घरबार भी बेचना पड़ेगा ?

डाह्याशा दीवान ने कहा कि : 'महाराज ! सवाल कुछ अटपटा है इसलिये एक सप्ताह की अवधि दीजिये।'

'तुम्हारा सप्ताह तो मेरी ओर से एक पक्ष; बोलो अब ?'

फिर कचहरी बरखास्त हो गयी।

डाह्याशा दीवान की बुद्धि का दिवाला निकल जाने के कारण उसको चैन नहीं था। जीव व्याकुल हो रहा था। मुख पर चिन्ता की रेखायें स्पष्ट दीखने लगीं। डाह्याशा दीवान की घरवाली समजु सेठानी समझ गयी कि दीवान के मन में दुखों का डूंगर खड़क रहा है।

जीमते हुए दीवान के हाथ से ग्रास छूट कर थाली में गिर गया। सच्चे मोतियों का पंखा डुलाते

हुए समुजु सेठानी ने कहा कि : 'सेठ ! मानो या न मानो, परन्तु आप किसी भारी चिन्ता के चक्कर में पड़े हुए हो।'

डाह्याशा ने अपने हृदय के अन्दर छिपाया हुआ रहस्य अंत में प्रकट कर ही दिया।

'प्रेमाशा दीवान का बेटा वीरचंद नित्य दरबार में आकर सवाल पूछ-पूछ कर मेरी खाल खींचे डालता है। उसके सवाल मस्तक को जला डालने वाले होते हैं। मैं मुंह माँगे पैसे देकर उसके पास से सवालों के जवाब जान लेता हूँ। यदि ऐसा ही बराबर चलता रहा तो कुबेर का भरा हुआ भंडार भी खाली हो सकता है।'

चतुर सुजान समजु सेठानी ने कहा कि : 'तब आप ऐसा करो न ! अपनी बेटी का सम्बन्ध उसके साथ कर दो। अपनी इकलौती बेटी है, और ऐसा सुन्दर लड़का दीपक लेकर खोजने पर भी क्या आसानी से मिल सकेगा ? फिर तो बेड़ा पार ! अपने तो एक कंकरी से दो पक्षी मार लिये जायेंगे। विनशोधा मुहूर्त्त तेरस या तीज। किसी ब्राह्मण को भी पूछने की जरूरत नहीं। कर दो टीका !'

डाह्याशा के दिल में भी बात जँच गई। समजु

सेठानी की बरछी-धार के समान तेज बुद्धि पर वह न्यौछावर हो गया ।

नित्य चोरी छिपे कदमों से जाने वाला डाह्याशा अब तो चौड़ेधारे दौड़ पड़ा । वह तो गया सीधा वीरचंद की माँ के पास और मँगनी कर दी ।

बुढ़िया ने रुक कर कहा कि : 'मुझे अपने बेटे की राय लेनी पड़ेगी । इस कारण मैं अभी कुछ नहीं कह सकती ।'

शाम को वीरचंद घर आया, तब बुढ़िया ने उससे सलाह की ।

वीरचंद ने कहा : 'अपने को रहने के लिये दीवान अपनी आधी हवेली दे दे तो बात पक्की करना ।'

अगले दिन दीवान डाह्याशा सबेरे ही आशा लगा कर आ पहुंचा ।

वीरचंद की माँ ने कहा : 'वीरचंद ने ऐसा कहा है कि दीवान जी अपनी आधी हवेली हमें दे दें तो बात पक्की ।'

'आधी ही क्यों ? पूरी दे दूं तो....। हमें तो बेटी देकर बेटा लेना है ।'

रुपया और श्रीफल दे दिया गया ।

ढोल नगाड़े बज उठे । टें...टें...करते चबूतरे पर

शहनाई के स्वर बजने लगे। हरे सूखे बांसों की चौंरी चितराई गयी और वर-कन्या का अच्छी विधि से विवाह हो गया।

पूरा पक्ष बीत जाने पर दरबार लगा। डाह्याशा दीवान के बराबर वीरचंद का भी आसन लगा हुआ था। राजा ने पूछा : 'दीवान जी! उत्तर दो कि 'बुद्धि देती क्या है?'

डाह्याशा दीवान ने कहा : 'बापू! आज सवालों के उत्तर मेरे जमाई राजा देंगे।'

राजा चकित हो गये। प्रायः सभी दरबारी-गण अपनी आँखें मलने लगे कि हम नींद में सपना तो नहीं देख रहे हैं। यह क्या हो गया?

वीरचंद विनयपूर्वक खड़ा हो गया। फिर कहने लगा : 'बापू! आज्ञा हो तो बोलूं?'

राजा ने कहा : 'बोलो! हम सुनने की प्रतीक्षा में तो बैठे ही हैं।'

वीरचन्द कहने लगा : 'बुद्धि विद्या देती है, बुद्धि से ही धन दौलत प्राप्त होती है और बुद्धि दीवान की बेटी भी देती है।'

इसके बाद डाह्याशा दीवान बोला : 'बापू! अब मुझ सरीखे तुच्छ सेवक की प्रार्थना सुनिये। अब आप

हमारे जमाईराजा को ही दीवान बनाइये। मैं तो बुड्ढा हो गया। काम-काज ठीक नहीं होता है। और ये ठहरे सरकारी काम। किसी भी समय कोई काम गलत-सलत हो गया तो···इस कारण अब तो मुझे भगवान की माला जपने दो। मेरे जमाई राजा चतुर सुजान हैं। फिर राज करने के दाव-पेंच इनकी नस-नस में भरे पड़े हैं, इसलिये यदि ये दीवान के पद का भार सम्भाल लेंगे तो इसमें राज्य का भला ही होगा।'

निगलते ही गले में जिस प्रकार हलुआ का ग्रास उतर जाता है, उसी प्रकार राजा के गले में यह बात उतर गई। राजा को भी जान पड़ा कि यदि वीरचंद दीवान बन जाता है तो हमारा दरबार चमक उठेगा। इस कारण उन्होंने डाह्याशा दीवान की प्रार्थना स्वीकार कर ली। दरबारी लोगों ने भी इस बात की सराहना की।

मंगल मुहूर्त्त दिखला कर राजा ने वीरचंद को दीवान पद सौंप दिया।

फिर वीरचंद ने यह भी कहा : 'बापू ! बुद्धि राज्य का दीवान पद भी प्राप्त करवाती है।'

सभी कोई गरदन हिला-हिला कर कहने लगे कि : 'मालिक ! यह बात बिल्कुल सत्य है, बुद्धि किसी के बाप की नहीं है।'

धन्य हैं रैयाभाभा को

पौष महिने की ठंडी हवायें धरती पर लहरा रही थीं। रसाल धरती के ऊपर उगी हुई डेढ़-डेढ़ गज ऊँची शेरडी की मीठी सनसनाहट सुनाई पड़ रही है। रैयाभाभा ने हृदय कटकने बाडी में शेरडी की खेती की है। रात-दिन उड़ती चिड़ियों की आवाज से सीमा गुंजार करती रहती है। घर के आदमी डोली बाँधकर हाथों-हाथ काम में फँसे हुए हैं। कुछ आदमी हाथ में खुरपा लेकर शेरडी की घास को साफ कर रहे हैं। कोई बाढ़ लगा रहा है तो कोई फिर माटी के वर्तन में गन्ने का रस डाल रहा है। धोती की लाँग चढ़ाये और बाँहें ऊँची करके पाँच पंद्रह आदमी काम में लगे हुए हैं। एक ओर दो-दो तवों में गन्ने का रस डाला जा रहा है, दूसरी ओर कूंड़ियों में ताजा गन्ने का रस डाला जा रहा है। जिससे देसी गुड़ की भेली बनती जा रही हैं और तीसरी भेलियों को चिना जा रहा है।

पाँच सौ वर्ष पहले की यह कथा है। सौराष्ट्र में आये हुए मोर की कलंगी के समान देरडी गाँव के कणवी पटेल अपनी बाडी की बाढ़ के निकट खाट बिछाकर बैठे हुए बेटों से काम करवा रहे थे।

माधा बेटा ! रस की भारी बड़ी धार आने दो। सिसोडा के पास रस काफी नहीं है। वेटे तुरन्त जाकर काली घास को काट डालो। यह घास रात-दिन बढ़ती जा रही है। गरीब गूंगे पशुओं के भी जान होती है।

बेटे इतने कारगर हैं कि भाभा के भले के लिये उनकी आवाज सुनते ही काया तोड़ कर काम करने लगते हैं।

रैया भाभा दिल के बड़े दिलावर थे। दूसरों को खिलाने-पिलाने में इन्हें बड़ा मजा आता। मार्ग में चले जाते हुए मुसाफिर को भी वे बुलाते और उनसे प्रेममय बर्ताव करते।

अजी आओ, बापनी, आओ। बाढ़ के आगे से इस प्रकार चुपचाप नहीं जा पाओगे। सूरज महाराज जब तक धूप चमका रहे हैं तब तक तो गन्ने का रस पीने सौ-सौ मानुसों को बाडी में आना ही चाहिये। रैया भाभा अच्छे साँठों में से निकाले हुए रस का गिलास हाथ में लेकर खाट पर से खड़े हो जाते

और अपने खेत में आने वालों को अपने हाथों गिलास भर-भर कर अमृत जैसा रस पिलाकर मानता। गन्ने के रस में उसके अंतःकरण की मिठास भी मिली ई होती इसलिये वह अमृत के समान प्रतीत होता था और पीने वाले के हृदय को भी मिठास से भर देता था। बारंबार रस पीकर तब वे बाडी से छुट्टी

पाते। मानवता के नाते आने वाले के साथ वे गन्ने के दो चार साँठे भी बाँध देते, तब आगंतुक कहने लगता :

'बापा ! पाँच गिलास अमृत के समान रस पी लिया, वह क्या कम है ?' तब रैया भाभा मीठा उलाहना देते :

'इस प्रकार अकेले पेट से ही क्या बनता है। घर में स्त्री और बच्चे भी तो हैं। देने वाले दीनानाथ ने हमें बहुत कुछ दिया है, तब खाओ पिओ न बापजी !' ऐसा कहकर बाडी से विदा होने वाले के पंद्रह वीस साँठे साथ बाँध ही देते।

झपाटे के साथ बाढ़ आ जाने के डर से रैया भाभा का कोल्हू चौबीस घंटे काम करता रहता। रात होने पर चौदस की चाँदनी में जंगल मानो चाँदी से मढ़ दिया गया था। नीरव शान्ति में सीमा पर घूमता हुआ कोल्हू की चिचूड आवाज कुंए की सीमा तक सुनाई दे रही थी। इस आवाज से दरबारगढ़ की मेढी में सो रहे काठी दरवार के कावे कुमार की नींद वैरन हो गयी थी। तब रणवास में से हुक्म छूटा :

'इस चिचूडिये की आवाज को बन्द करवा दो। कुमार की नींद इससे नष्ट हो रही है।'

दरबारगढ़ की ड्योढ़ी में गपशप करते हुए काठी दरवार ने कुमार की आवाज सुन ली। राज के दो चार सिपाही घोड़ों पर सवार होकर टपाटप-टपाटप

करते हुए सीमा की ओर दौड़ पड़े। कुछ देर में ही दरबारी घोड़े धरती कंपाते रैयाभाभा की बाडी में जाकर खड़े हो गये। एक सिपाही ने दरबार का हुक्म सुनाते हुए कहा कि :

'दरबार साहब का हुक्म है कि कोल्हू बन्द कर दो। कुँवर साहब की नींद इससे नष्ट हो रही है।'

इस बात को सुनते ही रैयाभाभा के रोंगटे खड़े हो गये। वह गंभीर शब्दों में बोले : 'जिस राज्य में किसान को खेती करने की छूट नहीं होती, वह राज्य चलेगा कैसे ? दरबार साहब से कहना कि मौसम का माल यदि मौसम में ही तैयार नहीं होगा तो खेती चल ही किस प्रकार सकेगी ? कोल्हू तो किसी प्रकार दिन रात बन्द भी रह सकता है, परन्तु क्या मौसम हमेशा कभी बन्द हो सकता है ?'

'परन्तु कोल्हू बन्द कर दो, यह सरकारी हुक्म है।'

'राजा तो क्या, यदि ऊपर से ईश्वर की आज्ञा भी हो जाये तो भी कोल्हू बन्द नहीं हो सकता।'

घुड़सवारों का दल तुरन्त टपाटप दौड़ता हुआ दरबारगढ़ वापिस जा पहुँचा। रैयाभाभा जैसे किसान का बचन सुनकर आकाश से बिजली छूटे ऐसे काठी

दरबार की आंखों में लाल डोरे फूट निकले। धनुष से
जिस प्रकार बाण छूटता है, उसी प्रकार दरबार ने
हुक्म दिया कि :

'पटेल को जाकर कहो कि कोल्हू बन्द कर दो
नहीं तो तीन दिन के भीतर अपना डेरा डंडा इस गाँव
से उठा कर बाहर निकल जाओ !'

जिसने हाड़ तोड़कर काम किया है, उसके लि
तो इतना बड़ा मुल्क पड़ा हुआ है। जहां जायेंगे व
खाने के लिये मुट्ठी भर नाज तो पैदा कर ही लेंगे
परन्तु अब इस राज में एक दिन भी नहीं रहना है। ऐ
मन में दृढ़ निश्चय कर लिया। कोल्हू बंद हुआ औ
गाड़ियों में घर व खेती का सब सामान भी लद गया

काठी दरबार के जुल्म और जो हुक्मी की ब
अरडोई के दरबार के कानों में भी पड़ी। उन्हे
रैयाभाभा जैसे पुरुषार्थी किसान के सामने चलकर
अरडोई आ जाने का नोता भेज दिया। अरडोई से
आने वाले दो प्यादों ने रैयाभाभा को समाचार दे
दिया।

'भाभा ! जरा भी घबड़ाना मत। अरडोई के
दरबार ने आपको कहनावत भेजी है कि : तुम सीधे
यहीं चले आओ। दरबार तुमको रहने के लिये मकान

और खेती बाड़ी के लिये जितनी चाहो जमीन कुंआ आदि सब कुछ दे देंगे।'

यह सुनकर रैयाभाभा का हृदय एकदम शान्त हो गया।

दूसरे ही दिन देरडी गांव में से खचाखच भरे हुए दस पंद्रह गाडे रवाना हो गये। रैयाभाभा अपने सभी कुटुम्व के साथ पूरा माल असबाब लाद कर अरडोई को चल पड़े। उस समय काठी दरवार ने सीमा में आकर अट्टहास करते हुए कहा :

'देखा न पटेल ! दरवार की हुक्मअदूली करने का कैसा फल भोगना पड़ता है ?'

दरवार की वेशरमी देखकर रैयाभाभा को कालझाल क्रोध चढ़ आया परन्तु झगड़ा करने का मौका न देखकर कोडासूज वाले रैयाभाभा ने एक शव्द नहीं बोला।

मंजिल-दर-मंजिल चलते-चलते रैयाभाभा के गाडा नाश्ता-पानी करने के लिये दोपहरी निकालने को एक छायादार नीम के वृक्ष के नीचे रुक गये। इसी वीच गाँव-वाहर से वापिस लौटते गोंडल के राजा भाकुंभा की नजर वृक्ष के नीचे रुके हुए गाडों के समूह के ऊपर पड़ी। राजा की तेज नजर ने तुरन्त ही परख

लिया कि कोई एक दुखिया आदमी गाँव छोड़कर चल निकला है।

भाकुँभाजी अपने साथियों के साथ गाड़ियों के पास आ पहुँचे। और राम-राम करते हुए रैयाभाभा को पहचान लिया। जैसे ही रैयाभाभा ने भाकुंभाजी को राम-राम किया, उन्होंने पूछा :

'रैयाभाभा ! इस प्रकार घर-गृहस्थी लेकर कहाँ जा रहे हो ? आपके ऊपर कोई मुसीबत तो नहीं आ पड़ी ?'

रैयाभाभा ने कहा :

'बाडी में घूमते हुए कोल्हू से देरडी के दरवार साहब के कुंवर की नींद टूटती थी, उस गाँव में किसान कैसे जीवित रहे ? अब अरडोई के दरबार ने निमंत्रित किया है इसलिये अरडोई की तरफ जाने को निकले हैं।

भाकुंभाजी सहानुभूति के साथ बोले : 'रैयापटेल ! अरडोई तो अभी बहुत दूर है। तुम अब गोंडल राज्य में रह जाओ। राज्य तुम्हें जो भी चाहिये वह सब कुछ देगा। किसान तो करोड़ों को जीवन देता है। तुम अब यहां से जाओगे तो गोंडल के आश्रय का धर्म नष्ट होगा।

रैयाभाभा भाकुंभाजी का निमंत्रण नहीं ठुकरा सके और गोंडल चले गये। गोंडल में उनको छः बीघे जमीन, रहने के लिये मकान और वंश परंपरागत पटेलाई मिल गई।

पवन के वेग के समान चार-पाँच चौमासे आकर बरस गये, परन्तु देरडी दरबार द्वारा किया हुआ अपमान का डंक रैयाभाभा के कलेजे को काटे डाल रहा था। एक दिन रैयाभाभा ने यह बात भाकुंभाजी से कही।

'अब देरडी के ऊपर चढ़ाई करके देरडी का पानी भी माप लेना चाहिये।'

भाकुंभाजी ने रैयाभाभा की बात का समर्थन करते हुए कहा : 'सप्तमी के सोमवार के समान अच्छा दूसरा मुहूर्त्त और क्या होगा ?'

सूरज महाराज ने उदय होने की दिशा में लाली फैलाई। घड़ी दो घड़ी दिन चढ़ते ही पाँच सौ घोड़े धपाटप करते हुए लम्बा सफर पार करके देरडी की सीमा पर जाकर कूदने लगे। सत्तर वर्ष के बुड्ढे रैयाभाभा ने फाड की आगवानो लीनी। दरबार के दरवाजे पर पहुँचकर रैयाभाभा ने दरबार को जा ललकारा :

'दरवार देरडी गोंडल को सौंप दो, नहीं तो युद्ध करने के लिये तैयार हो जाओ।'

गाँव में सडसडाट करती यह वात फैल गई। गोंडल से धावा देरडी पर कब्जा करने के लिये हो गया है। नागाड़ों के ऊपर धड़ाँग-धड़ांग डंडा मारते हुए देरडी के लड़वैया हाथों में हथियार लेकर निकल पड़े। नदी के मैदान में आमने-सामने युद्ध होने लगा रैयाभाभा ने युद्ध के घमासान में अपनी घोड़ी झोंक दी। डेढ़ हाथ की तलवार द्वारा पाँच सात जवानों को मार कर रैयाभाभा भी जमीन पर गिर पड़े। गोंडल के योद्धाओं ने काठी की सेना को पीछे खदेड़ना शु किया, इसी बीच तलवारों की तेज चोटों के द्वारा रैयाभाभा ने वोरोचित्त मृत्यु प्राप्त कर ली। दिन मा के ऊपर चढ़ने के समय तक तो देरडी के योद्धाअ का जुनून नदी की बाढ़ के समान खतम हो चुका था वे अव पड़दूक-पड़दूक करते हुए भागने लगे गाँव छो कर। उस दिन से देरडी गाम गोंडल के राजा भाकुं जी की हुकूमत में आ गया। तभी से देरडी भाकुं जी की देरडी के नाम से पुकारा जाता है। एक दंत कथा कहती है कि देरडी में रैयाभाभा ने राजवा नाम की एक पवित्र बाई को वहन बना कर रख

था। युद्ध में रैयाभाभा तो वीरगति को प्राप्त हो गये, इस बात की राजबाई को खबर पड़ी तब वे भी भाई के साथ सती हो गईं। जहाँ वे सती हुईं, वहाँ नदी के पास राजबाई की छतरी आज भी इस बात की साक्षी देती हुई खड़ी है। राजबाई आजकल सतीमाता के नाम से पूजी जाती है। गोंडल और जेतलसर में निवास करते रैया के कुटुंब के लोगों को आज भी वर घोड़ियों की छेड़ा छेड़ी छोड़ने और नैवेद्य रखने के लिये इस धरती पर जाना पड़ता है।

कलाकारी सुनार

एक छोटा सा गाँव था। उसका नाम था गोकुल। उसमें दलसुख नाम का एक सोनी रहता था। पूरे प्रदेश में दलसुख प्रसिद्ध था। सोने चाँदी के गहने बनाने पर उसका हाथ अच्छा जमा हुआ था। जैसा देखे वैसा ही फूंककर, गलाकर एवं छील-छालकर बना देता और सामने के ग्राहक को विश्वास में लेकर पानी-पानी कर डालता तथा भीतर से जब तक थोड़ा बहुत काढ़ नहीं लेता, तब तक उसे चैन नहीं पड़ता। किसी ने कहा भी है कि : 'सोनी सगे भाई का तो क्या, परन्तु सगी बहन का भी चुरा लेवे।'

......और यह बात तो दलसुख सोनी के साथ कस कर लागू होती थी। दलसुख के हंसा नाम की एक बहन थी। उसने भाई के पास एक हार घड़ने को दिया। दलसुख के मन में लगा कि : 'अपनी बहन के लिये हार, जिसे लोग देखते ही रह जायें, ऐसा घड़

देना है।' उसने तो भगवान को साक्षी रखकर हार घड़ दिया। सो टंच सोने का, कलात्मक हार देखकर हंसा बाग-बाग हो गयी।

किन्तु फिर दिन जैसे बीतते गये चिंता की चिता में दलसुख सूखने लगा। उसके मन की दुविधा मिट नहीं पा रही थी कि : 'अरेरे ! मैंने ज्यों का त्यों सोना चले जाने दिया ! अंदर की लीपा पोती करके कुछ चोरी नहीं की' ऐसा सोचते-सोचते वह सूख कर काँटा

हो गया। फिर तो सभी कहने लगे कि : 'दलसुख के गले राज रोग लग गया है।'

परन्तु अन्दर की वात तो केवल दलसुख ही जानता था।

एक दिन उसने अपनी हंसा वहन से कहा कि : 'वहन ! तेरा हार ले आ, उसे नये नमूने का घड़ दूं।' नई तर्ज का हार घड़ते समय दलसुख को अन्दरूनी कला से मनमाना सोना निकाल लेने पर चैन पड़ा।

चोरी कर लेने की कला तो उसकी रग-रग में व्याप्त थी। रुधिर में मिली हुई। ऐसे ही काम करते हुए दलसुख अवस्था के किनारे आ पहुँचा था। स्वयं रंडुआ था। उसको आराम से खिलाने पिलाने वाले तथा ऐसा कहने वाले कि : 'अव तुम शान्ति से बैठे रहो' ऐसे चार वेटे : 'तनसुख, मनसुख, धनसुख और परमसुख वाप की अपेक्षा सवाये।'

दलसुख मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ था। अटक आता है और निकल जाता है परन्तु प्राण नहीं जाते चारों ही वेटे आ वैठे थे। उन्होंने पूछा कि : पिताजी मन में यदि कुछ आया है तो उसे कह दो, वड़वड़ा क्यों रहे हो ? हमारे होते हुए आपको क्या दुःख है ?'

तव दलसुख ऐसे कहने लगा : 'वेटा अपने धन्धे में

रहकर तुम दुरंगी चाल कैसे चल सकोगे ? यह बात मुझे साफ-साफ कहो ?'

सब से बड़ा बेटा कहने लगा : बापू!जो आदमी सेर भर सोना घड़ाने आयेगा तो उस में से अन्दरूनी तौर पर मैं पाव सेर निकाल लूंगा ।'

मनसुख ने कहा : 'बापू ! मैं सेर सोने में से आधा सेर गायब कर दूँगा ।'

धनसुख ने कहा : 'बापू ! मैं सेर सोने में से पौन सेर पटा लूँगा ।'

सबसे छोटा बेटा परमसुख बोला : 'बापू ! आपकी सिखाई हुई कला के द्वारा मैं सेर में से सेर ही डकार जाऊँगा। इस बात का आप पछतावा मत रखना ।'

दलसुख सोनी ने कहा : 'तू हमारा सबसे चतुर बेटा है। अगले दिनों में तुम हमारा नाम उजागर करोगे। तू यदि मेरे मुख में अंत समय गंगाजल डाले तो मेरा जन्म सुधार जाये ।'

परसुख ने गंगाजल डाला और दलसुख सोनी के प्राण-पखेरू उड़ गये ।

पास में ही एक नगर भी था। उसमें परवतसेन नाम का राजा राज्य करता था। उड़ती-उड़ती

सुनारों की कलाकारी क बात उसके कानों में भी टकराई। परवतसेन का मन इस बात की परीक्षा लेने को हुआ। राजा, बाजा और बानर तीनों ही एक समान। ये जिद्द पकड़ लें तो परवतसेन क्यों नहीं? उसने तो परमसुख को पकड़ बुलाया।

परमसुख बनठन कर दरबार में पहुँचा। राजा को सिर झुकाकर जुहार की और अदब के साथ एक ओर खड़ा हो गया। राजा ने उसको आदर के साथ आसन देकर बैठाया।

व्यावहारिक बातें होने के बाद परवतसेन ने कहा कि : 'देव सेवा में पूजा करने के लिये एक हाथी घड़वाना है, तो क्या तुम घड़ दोगे ?'

परमसुख ने उत्तर दिया : 'आप जैसे राजा-महाराजा जो काम हाथ में लें और हमें आज्ञा दें, वह काम हम क्यों नहीं करेंगे ? इससे अच्छा और क्या ? हमें ग्राहक भी नहीं तलाश करने पड़े।'

'......तो सुनो हमारी बात। आज से ही तुम्हें राजमहल की सातवीं मंजिल में एक कमरे में तुम्हें हाथी घड़ने के लिये बैठ जाना पड़ेगा। राजा के खजाने में से तुमको सवा सेर सोना मिल जायेगा। औजार एवं अन्य साधन-सामग्री चाहिये वे सब तुम्हें यहीं ले

आनी पड़ेगी। सवेरे आने के बाद और शाम को जाने के समय तक तुम्हें कहीं आगे पीछे जाने नहीं दिया जायेगा और न किसी से मिलना होगा। शाम को घर जाते समय तुम्हें तलाशी देनी होगी, फिर तुमको घर जाने दिया जायेगा। बोलो! तुमको यह शर्त मंजूर है? तो मैं तुम्हें हाथी घड़ने का काम दे दूँ।'

परमसुख को बुरा तो बहुत लगा, परन्तु राजा का बड़ा काम होने से हाँ कर ली।

दूसरे दिन से ही परमसुख सोनी ने काम का श्रीगणेश कर दिया। राजा के हुक्म मूजन सब व्यवस्था हो गई। खजांची ने राज्य के खजाने में से तोलकर सवा सेर सोना दे दिया। मंजिल के ऊपर सख्त चौकी पहरा बैठा दिया गया। चौकीदार भी प्रतिदिन नये बदल दिये जाते। इस कारण किसी भी प्रकार की गड़बड़ी होने का भय नहीं रहा। जब कभी राजा पर्वतसेन भी कितना काम हो चुका, इसको देखने के लिये चला जाता था।

रूपहरी हुक्के की नली हाथ में लिये हुए, धुँए के छल्ले उड़ाता हुआ पर्वतसेन रेशमी तकिये का सहारा लेकर, अधमिची आँखों से इस प्रकार बड़बड़ा रहा था : 'देखूं मेरा बेटा! ठीक फंदे में फंस चुका

है। अब या तो यह है और या मैं हूँ। देखूँगा इसकी कला। देखें किस प्रकार पूरा सोना हजम कर लेता है, इसकी खबर इसे अब लगेगी।'

ऐसा होते करते हाथी बहुत दिन तक घड़ा जाता रहा। सोनी ने हाथी घड़ने में अपनी पूरी कला लगा दी। उसने सीखी हुई पूरी कारीगरी, भाँति-भाँति के बेल-बूटे आदि ठाँस-ठाँस कर हाथी में चित्रित कर दिये थे। उड़-उड़ कर आँखों में रम जावे ऐसी अनुपम सांगोपांग कलाकृति देख कर पर्वतसेन राजा का हृदय भी भर गया।

परमसुख ने पर्वतसेन से कहा : 'महाराज! अब इसमें अंतिम पालिश करने का काम बचा है, फिर देखना इसकी कलागिरी। इस पालिश के लिये इसको पानी में रगड़ कर धोना पड़ेगा।'

'यहाँ पानी की क्या तंगी है? जितना चाहो, पानी ले लो।'

'नहीं महाराज! सोने को चमकाने के लिये तो अपनी सीमा के मोतीसर तालाब के पानी की समानता कोई भी पानी नहीं कर सकता। उसके पानी में कुदरत ने ऐसा कोई गुण दिया है। पूरे गाँव के सभी सुनार उसी पानी को अच्छा समझते हैं।'

'ऐसी बात है ?'

'बिल्कुल ।'

'तो हमारी ओर से भी क्या ऐतराज है ? कल प्रातःकाल ही कोई अच्छे ज्योतिषी के पास मंगल मुहूर्त्त शुधवाकर बाजे-गाजे के साथ धूमधाम से हाथी को नहालाओ और चमकाओ फिर दूसरी बात होगी ।'

इस प्रकार की व्यवस्था पक्की करके परमसुख सुनार अपने घर गया ।

दूसरे दिन सवेरे धूमधाम से सोने के हाथी की सवारी निकली । मंगल बाजे बज रहे थे । स्त्रियाँ मंगलाचार गाती जा रही थीं । राजमहल से लेकर मोतीसर सरोवर तक राजमार्ग सजाया जा चुका था । अवीर, गुलाल और कुँकुम की तरंगों की लहरें हवा में उड़ रही थीं । घुड़सवार चौकीदार हाथी का पहरा दे रहे थे । खुद पर्वतसेन राजा भी इस जुलूस में शामिल था ।

मोतीसर तालाब के गहरे पानी में परमसुख ने डुबकी देकर हाथी को रगड़-रगड़कर चमकाना शुरू किया । हाँ......या अभी काम पूरा होने वाला है, ऐसा करते कहते हुए रगड़ माँजकर वह हाथी लेकर बाहर आया । मोतीसर का महँगा पानी सोने के अनुकूल

पड़ता था इसलिए और अधिक जगमगा रहा था। उसकी चमक और झलक बहुत अधिक थी। फिर सब कोई दरबारगढ़ में वापिस आ गये। मिठाई, बताशे और श्रीफल का प्रसाद ले लेकर सब अपने घर चले गये। इस प्रकार वह दिन व्यतीत हो गया।

अगले दिन परवतसेन राजा का पूरा दरबार लगा। लोग एक दूसरे को पीसे डालते थे इस प्रकार मनुष्यों की दरबार में भीड़ हो रही थी। यदि छोटी सी सुई भी जमीन पर गिर पड़े तो उसकी आवाज भी सुनाई पड़ सकती थी, ऐसी शान्ति वहाँ छाई हुई थी।

राजा ने सर्राफ को बुलाकर कहा कि : 'हाथी के सोने की कस कर जाँच करो।'

सर्राफ यह तो जानते ही थे कि कड़े बन्दोबस्त में हाथी घड़ा गया है, इस कारण सहज में ही मिलावट या हेरा-फेरी क्यों कर हो सकती है ?

सर्राफ ने कहा कि : 'महाराज ! हाथ के कंकण को आरसी को क्या जरूरत है। यह तो अचरज की बात है। आपकी नजरों के आगे हाथी घड़ा गया है इसलिये हम लोग इसमें मिलावट या हेरा-फेरी कैसे नकाल सकते हैं।'

फिर राजा ने परमसुख सोनी से कहा कि :

'सोनी महाजन ! अपने बाप को गंगा जल पिलाते समय तुमने प्रतिज्ञा ली थी कि 'मैं पूरा सोना हजम कर सकता हूँ। तुम्हारी प्रतिज्ञा तो टूट गई अब क्या ?'

परमसुख सोनी ने नीचे की ओर देखते हुए कहा कि : 'चींटी भी प्रवेश नहीं कर सके ऐसे सख्त प्रबंध में हमसे से चोरी किस प्रकार हो सकती थी ? यह क्या नाना का खेल समझा है ?'

'इसका मतलब यह है कि पादने की तमीज नहीं और तोपखाने का नाम क्यों लेते हो ? बाप से कहे हुए वचन का पालन कहाँ हुआ ?'

'महाराज ! आप इस प्रकार इतनी शीघ्र आपे से बाहर क्यों जा रहे हैं ? हाथी को कसवाकर तो देखो यह असली सोने का है या इसमें मिलावट हुई है।'

राजा ने सर्राफों से कहा : 'ऐसे ऊपरीपन से काम नहीं चलेगा। कसौटी से परीक्षा करो।'

सर्राफ ने तपातपू कर कसौटी पर अच्छी तरह कसकर परीक्षा की तो हाथी एकदम पीतल का साबित हुआ। आश्चर्य की सीमा नहीं रही। सब लोग दंग रह गये। राजा चकित होकर देखता रह गया। सभी को लगा कि मेरे बेटे ने यह कैसे किया ?

परवतसेन राजा ने कहा : 'दोस्त ! हमारी आंखों में धूल झोंककर तुमने पूरा हाथी हजम कर लिया, यह

कैसे हुआ ? जाओ, हमारी ओर से अभयदान है। सब बात स्पष्ट बता दो।'

परमसुख सोनी ने खँखार कर कहना शुरू किया: 'सुनो महाराज ! शाम को यहां से छुट्टी पाकर घर जाता और वहाँ वालू पानी करके असल गलाये हुए पीतल में से हाथी घड़ने बैठ जाता। जैसा और जितना काम दिन में यहां करता उतना ही और वैसा ही काम मैं रात में कर डालता। पूरा हाथी घड़ जाने के बाद मैं इसे मज्जन करने और पालिश चढ़ाने को आपके साथ मोतीसर तालाब में ले गया था। इससे पहली ही रात को सबसे छिपाकर मैं पीतल के हाथी को सरोवर में छिपा आया था। सवेरे ही अन्तिम पालिश करते समय असली सोने का हाथी वदल कर उसकी जगह नकली हाथी रख दिया और रात होने पर असली हाथी निकाल लाया। असली हाथी तो मेरे घर पर रक्खा हुआ है। यह तो नकली हाथी है।'

फिर परमसुख सोनी राज्य के दो आदमियों के साथ असली हाथी दरबार में ले आया। असली और नकली हाथी बरावर पास में रखे जाने पर उनमें बाल भर फरक नहीं दिखायी दिया।

परवतसेन ने परमसुख को शावासी दी और कहा: 'धन्य है तुम्हारी कला को। आँखों से देखते हुए भी हमको ठग लिया।'

काला आबनूस

काला गंवार ओ नदी में नहाने जाय,
कृष्ण जी ने काला किया, कैसे वह गोरा थाय ?

'अरे आबनूस ! इस प्रकार रोज नहाने से गोरे नहीं बनोगे।'

'क्या सभी गोरे आदमी ही नहाते हैं ?'

'सबकी बात तो मैं नहीं जानती, परन्तु तुम तो गोरे होने से रहे, ऐसा लगता है।'

'गोरी ! मैंने सूरज दादा की पूजा करने का नियम ले रखा है, इसलिये रोज नहाता हूँ।'

'काला ! अब मैं समझी, तुमने ये हरा नीम ले रक्खा है कि सूरज दादा तुम्हारे ऊपर संतुष्ट हो जावें और गोरी बहू तुम्हें दे दें।'

'गोरी ! गोरा होकर जन्म लेना, और गोरी बहू का मिलना, यह तो कृष्ण जी के हाथ की बात है।'

'कालिया ! तुम कृष्णजी के हाथ की बात छोड़ो और अपने हाथ की बात कहो। तुमको गोरा बनना हो तो तुम्हें गोरा बनने की एक तरकीब बताऊँ।'

'बता देखो !'

'कलसार जाकर एकाध मन चाक ले आओ और फिर प्रतिदिन अपने शरीर पर चाक का लेप किया करो।'

'गोरी ! तू तो मुझे गँवार बनाने जैसी बात कर रही है।'

'आबनूस ! जो बनना चाहे वह बन, परन्तु गोरा हो जा। मुझे तुम्हारी बहू की फिक्र है। तुझ काले आबनूस को ब्याहेगी कौन ?'

'गोरी ! तुम इस प्रकार विचार करके दुबली क्यों हो रही हो ? क्योंकि जिसकी माँ ने मेरी परणहारी को जन्म दिया होगा, वह तुम्हारे समान गोरी नहीं होगी तो मेरे समान काली तो अवश्य होगी।'

कडियाली गाँव का हरिजन काला अगरिया बालपन छोड़कर अब चढ़ी जवानी में पैर रख रहा था। रोज सबेरे भट्टी भरता, काला सूरज दादा की पूजा करता और कहता : 'हे सूरज दादा ! मेरी आदत है, इसलिये मैं भले ही काला हूँ, परन्तु मेरा स्वर हमेशा-हमेशा के लिये जैसा है, वैसा ही बना रहे।'

काला अपने माँ-बाप का अन्तिम पुत्र था, इस कारण बहुत लाडला था। इसके दो बड़े भाई विवाह होने के बाद बहुओं के घर आते ही अलग रहने लगे

थे। इस कारण काला अपने माँ-बाप के घर का मुखिया बना हुआ था।

भगवान ने बहुतों को काला बनाया होगा, परन्तु काला की कालेपन की गहराई, अंधेरी रात की अंधियारी में काला एक रंग हो जाता था। एक बार काली अंगरखी पहन कर काला अपने खेत के किनारे तुरन्त गोडे हुए खेत में सोया हुआ था। उसी बीच कितने ही हिरण इसके पास से होकर चले गये। हिरण जैसी चौकन्नी जाति की आँख भी काला को काली मिट्टी के ढेंकों से अलग नहीं कर सकीं। यह घटना पास के खेत वालों ने भी अपनी नजर से देखी। फिर उसने गांव में भी इसकी चर्चा की। इसी बीच गाँव में आये हुए एक बारोट ने कहा : 'कि तुम्हारे गाम का कालिया काले आबनूस के लक्कड़ के समान काला है।'

बारोट ने काला को आबनूस के समान बताया, तभी से इसका नाम आबनूस पड़ गया।

काला का रंग ही काला था, परन्तु वह चेहरे-मोहरे से बड़ा सुन्दर था। इसकी काठी भी अच्छी थी। और सबसे बात तो यह अच्छी थी कि काला का स्वर कोयल जैसा था।

बैशाख उड़ गये बादरा अरु उड़ गयी लाल गुलाल।
जसोदाजी के कन्हैया, तुम आओ या काल।
गोकुल आवो न मुरार।

जेठ माह घनघोरिया, बिजली चमके आभ।
वर्षा देय वधामनां, इम देना हमें लाभ।
गोकुल आवो न मुरार।

काला ऊपर का गीत गाता, तब इस गीत को सुनने के लिये लोग उमड़ पड़ते थे। इसी राग के ऊपर गाँव के वाहरी हिस्से में रहने वली गोरी फिदा हो गयी थी। जब भी काला भजन या गीत गाता होता, तभी गीत सुनने के लिये गोरी वहाँ पहुँच जाती।

अपनी बेटी गोरी काले आबनूस के पीछे लगी रहती है, इस वात की उसके मां-वाप को खवर होते ही उसे रोका भी था। कारण कि धोली की मंगनी भेराई गाँव के अगरिया जवान के साथ हो चुकी थी।

एक वार गोरी पानी भरने जा रही थी। मार्ग में काला मिल गया। वहुत दिन वाद गोरी को देखा था, इस पर काला ने कहा: 'गोरी! तू आजकल मेरे भजनों में क्यों नहीं आती ?'

'मेरे माँ-वाप रात विरात घूमने के लिये मुझे मना करते हैं, इस कारण मैं कैसे आऊँ ?'

'धोली! तुम्हारे बिना भजन गाने में मजा नहीं आता।'

'काला! भजन की रंगत विठानी हो तो इसका एक ही उपाय है।'

'बताओ !'

'मैंने मन में निश्चय कर लिया है कि विवाह करूँगी तो तुम्हारे ही साथ।'

'गोरी ! तुम्हारी तो मंगनी हो चुकी है, इस पर ऐसी मूर्खता की बातें मत कर। फिर भेराई वाले अगरिया बहुत बलवान हैं, इस कारण उनके साथ बैर बाँधने के ऊपर विचार करना पड़ेगा।'

'काला ! तू हाँ कर दे फिर भले ही सहस्रार्जुन भी तुम्हारे सामने आवे तो भी हम दोनों ही उसे नीचा दिखा देंगे।'

'तो फिर धोली ! तुम कल सवेरे ही हमारे घर चली आना।'

दूसरे दिन जल्दी उठकर धोली नदी किनारे गई और घड़े को एकदम अच्छा माँज कर उज्ज्वल करके भर लिया और माथे पर रक्खा। सीधी मकवाणावास चली गई और काला के आंगन में जाकर पुकारा कि 'अरे काला ! मरद का बेटा है तो मेरा घड़ा उतार ले।'

धोली की पुकार सुनकर काला घर के बाहर आया और धोली के माथे पर से घड़ा उतार कर पणिहारे में रख दिया। फिर उसने मां को बुलाकर कहा—'माँ ! अपने बेटे को दूलह के रूप में ग्रहण कर ले।'

काला की वगल में धोली को खड़ी देखकर मां सव कुछ समझ गयी। उसने काला से कहा—'बेटा! धोली भले ही अपने घर, घड़ा माथे पर धर कर आ गयी। तुम्हें परछने के लिये मुझे ना भी नहीं है। परन्तु भेराई वालों के दलवल के साथ करने के लिये तुम्हें सदा सावधान रहना पड़ेगा।' इतने कह कहकर काला की मां ने वर और वधू को ग्रहण कर लिया।

यह वात कुछ ही समय में गांव भर में फैल गई, दूसरे ही दिन भेराई एक घोड़े पर सवार होकर आ पहुँचा और सीधा काला के घर गया। काला के पास में जाकर घोड़े के सवार ने काला को और उसके पड़ोसियों को कहा—'तुम्हारे पड़ोस के कालिया ने हमारी मँगेतर को अपने घर में वैठा लिया है। अब तुम सावधान रहना।'

थोड़े दिन वाद ही उड़ते समाचार आये कि भेराई के अगरियाओं में से दो जवान दक्षिण देश से आये हुये भीलों के पास धनुर्विद्या सीख रहे हैं।

फिर कुछ दिन निकल गये। एक सुवह काला आवनूस और धोली अपने खेतों में खारे पानी की क्यारी भर रहे थे। इसी वीच सनसनाता हुआ एक

तीर धोली के कान के पास होकर नदी में ज़ा पड़ा। तीर की आवाज सुनकर काला और धोली चेत गये और दौड़कर पाल की ओट में जा बैठे। कुछ ही देर बाद लगातार तीर छूटने लगें। परन्तु सभी तीरों के निशाने खाली गये, अन्त में थक कर भेराई वाले लौट गये।

एक समय काला पास के गांव में मीठे गन्ने और बाजरा लेने गया हुआ था। इस बात की खबर पड़ते ही भेराई के अगरिया काला का मार्ग रोक कर खड़े हो गये। मार्ग में लौटते समय चलते हुए काला के ऊपर भेराई के अगरियाओं ने काँटेदार लाठियों से हमला बोल दिया। परन्तु लाठियों की चोट बाजरे की पोटली के ऊपर पड़ जाने के कारण काला बच गया। पहला हमला झेलने के बाद काला सावधान हो गया। उसने लोहे के पोले जड़ी अपनी लाठी से दुश्मनों पर राजा भैकरण की भैंस के समान हमला कर दिया। फिर तो किसी की भी हिम्मत नहीं पड़ी कि काले की लाठी के चक्कर में आता। एक युवक हिम्मत करके काला के सामने आया भी, परन्तु वह जवान काला की लाठी के कुँडाले में आते ही जखमी होकर नीचे जा पड़ा। यह दृश्य देखकर भेराई वाले

जवान भाग खड़े हुए ।

दूसरे दिन भेराई वालों को अपना आदमी भेज कर काला ने कहलवाया कि मैं तुम्हारी मंगेतर को लेने नहीं गया था, वह स्वयं ही भरा घड़ा अपने सिर पर रख कर हमारे घर आ गई थी । अपनी जाति के नियम के अनुसार यदि मैं घड़ा नहीं उतारता तो मैं कायर कहलाता ।

फिर भी यदि अरमान हो तो मैं और धोली को जिस व्यक्ति के साथ मंगनी हुई थी, वह दोनों आपस में द्वन्द्व युद्ध कर लें ।

काला के साथ कडियाली लाठियों के युद्ध में भेराई के जवान दिन दहाड़े तारे देखने लगे थे । इस कारण भेराई वालों ने काला से सुलह कर लेना ही अच्छा समझा ।

थोड़े दिन बाद भेराई और कडियाली के बीच के बलाड देव के स्थानक में एकत्र हुए कडियाली एवं भेराई के जवानों के बीच सुलह हो गई ।

इस बात को आज चालीस वर्ष बीत चुके हैं । । आबनूस का बेटा बनजी अब भी जीवित है ।

लटूरा राजस्थान का

अमरा को मैं मरता देखा, भाजत देखे सूरा।
लक्ष्मी बीनै ऊपला, खसम लटूरा म्हारा।

राजस्थान के एक गाँव में जमींदार चौधरी रहता था। उसके पास ढेरों गाय और भैंस थीं। पैसे की कोई कमी नहीं थी। सभी रिद्धि-सिद्धि इसके घर में मौजूद थीं। इसका नाम था 'लटूरा'।

पति का ऐसा खराब नाम चौधरन के कान में काँटे के समान चुभता था। विवाह के बाद चार-पाँच माह तो बड़ी मुश्किल से निकाल दिये, परन्तु अन्त में उसने धीरज छोड़ ही दिया और एक दिन बोली—

'अपने घर में सभी चीजों का ठाठ है। तुम देखने में कितने सुन्दर हो? पूरे इलाके में तुम्हारे जैसा खूबसूरत मुख वाला दूसरा मनुष्य कोई है क्या? परन्तु तुम्हारा नाम कितना बुरा है? बोलते समय मानो जीभ में शूल चुभ जाते हैं। कोई अच्छा नाम रख लो, फिर किसी बात की कमी नहीं रहेगी।

पत्नी की बात सुनकर वह शान्त स्वर में बोला :

'बेवकूफ! नाम में क्या रखा है। बोलने में और

देखने में एकता रहती है, इसीलिये लोग मुझे 'लटूरा' नाम से जानते हैं। माँ ने प्यार और ममता से जो नाम रख दिया है, वही हमारे लिये सबसे मीठा है। माँ मुझे लटूरा कह कर जब पुकारती थीं, तब मेरे कानों में अमृत का छिड़काव होता था। याद करते समय मेरा मुख मानो माखन से भरा हुआ लगता था।'

चौधरी के बहुत समझाने पर भी उसकी स्त्री नहीं मानी, तब उसने कहा—

'मुझे तो दूसरा नाम नजर नहीं आता। इतने वर्ष बाद मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरा और कोई नाम हो ही नहीं सकता। फिर भी नाम बदलने की तुम्हारी इच्छा है ही तो तुम्हें ऐसी मामूली बात के लिये क्यों नाराज करूँ ? तुम्हीं कोई अच्छा नाम बता दो, तुम कहोगी वही नाम मैं रख लूंगा। पच्चीस बरस तो लटूरा नाम से बीत गये, अब बाकी बरस नये नाम से बिता दूँगा।

चौधरी की बात सुनकर उसकी पत्नी प्रसन्नता से भर गई। वह बोली—

'नाम का कोई टोटा है क्या ? एक के बदले साठ नाम खोज दूँगी। मेरे पीहर में बहुत सारे अच्छे-अच्छे नाम हैं। कल ही वहाँ जाकर तुम्हारे लिये एक सुंदर, अतिसुन्दर नाम चुनकर ले आऊँगी, फिर ऐसे बेहूदा

नाम से कोई पुकारे तो तुम उसका उत्तर दोगे तो मुझे मरी हुई समझ लेना।'

'बेवकूफ! नाम बदलवाने की जिद्द छोड़ दे तो तुम्हारे लिये बीस तोले सोने का हार घड़वा दूँ। तू कहे तो आज ही और इसी समय।'

ऐसा कहने पर भी चौधरी की पत्नी एकदम अटल थी। दूसरे दिन पति के लिये अच्छे नाम की खोज करने गाड़ी जुड़वाकर पीहर की ओर चल पड़ी। सुसराल से जैसे ही बाहर निकली, उसे मुरदा सामने

मिला । शकुन तो अच्छा हुआ । गाड़ी में से उतरकर उसने मुरदे को प्रणाम किया और एक आदमी से पूछा : 'भइया ! कौन चल बसा ?'

'अमरा ।'

यह नाम चौधरानी के कान में शंख-ध्वनि के समान गूँज गया, 'मरने वाले का नाम अमरा !' नाम तो अच्छा है, परन्तु मरने वाले का नाम 'अमरा' कैसे देखा-सुना जा सकता है ?

आगे बढ़ने पर उसको एक भिखारी मिला । मैला एवं फटी-पुरानी कमीज जो चारों ओर से फटी हुई थी । पैर नंगे थे, आँखों में गीड़ें भरी हुई थीं । उसके शरीर में धूल और पसीनों से जमा हुआ मैल जगह-जगह दिखाई दे रहा था । किसी तरह चौधरानी को हाथ जोड़कर रोटी का टुकड़ा माँगा । चौधरानी के पास बहुत रोटियां थीं । उसने भिखारी को चार-पांच रोटियां और ऊपर से चटनी दे दी, फिर उसका नाम पूछा । भिखारी बोला—'धनीराम' । 22/3/10

यह सुनते ही चौधरानी के कान में गरम लोहा मानों पड़ गया । उसके मन में आया कि ऐसा कौन ज्योतिषी था कि जन्म से इस अभागे भिखारी का नाम 'धनीराम' रख दिया ? नाम और गुणों का कुछ मेल तो होना ही चाहिये । नाम तो कुछ खराब नहीं है,

परन्तु भिखारी को तो जरा भी शोभा नहीं देता।

रास्ते में चलते-चलते वेश्या का अड्डा मिला। एक सुंदर वेश्या के साथ दो चार युवक छेड़छाड़ कर रहे थे। चौधरन के साथ गाड़ीवान भी था। उसने उन युवकों को समझाया कि किसी भली औरत के साथ छेड़खानी करना ठीक नहीं है। उस युवक ने तुरन्त उत्तर दिया कि यह खानदानी गृहस्थ स्त्री नहीं है। यह तो रंडी है। तभी चौधरानी ने उस रंडी से पूछा—'तुम्हारा नाम क्या?' वेश्या इठला कर बोली—'सीता'।

वेश्या का नाम सीता सुन कर उसे मानो बिच्छू ने डंक मार दिया। उससे वह बिल्कुल ही निराश हो गई। तिस पर भी वह हिम्मत नहीं हारी। पति के लिये कोई अच्छा नाम खोजने को पीहर की ओर आगे बढ़ी। मार्ग में गाँव आया। गाँव की सीमा पर एक सुन्दर मन्दिर था।

मन्दिर की सीढ़ियों पर बैठी हुई एक भिखारिण मक्खी उड़ा रही थी। और लोगों के झूंठे पत्तल चाट रही थी। चौधरण ने उसको दो पैसे दिये और उसका नाम पूछा तो ज्ञात हुआ कि उसका नाम लक्ष्मी है। चौधरण के कान में मानों सुईयां चुभने लगीं। नाम चाहे जितना अच्छा हो, परन्तु जिस किसी व्यक्ति के साथ जोड़ने से उसकी कीमत कानी कोड़ी भी नहीं रहती।

यह सब घटनायें देखकर चौधरणी की उमंग

समाप्त हो गयी, परन्तु पति के लिये एक सुन्दर नाम तलाश किये विना वापिस कैसे लौटे ?

कुछ दूर और चलकर उसने एक हताश आदमी को दौड़ते हुए देखा। आठ दस आदमी उसका पीछा कर रहे थे। अगले आदमी के हाथ में नंगी तलवार थी। किसी स्त्री के साथ छेड़खानी करते हुए वह छड़े चौक पकड़ा गया था। लोग उसको मारने के लिये पीछे लगे हुए थे। वह वापडा हाथ में नंगी तलवार लिये पागल की तरह जान बचाने के लिये भाग रहा था। भागने वाले आदमी का नाम था 'अर्जुन'

रास्ते में ही एक और आदमी मिला। वह एकदम ठिगना था। शरीर भी दुवला-पतला था। किसी की एक चपट भी लगे तो सात करवट खाकर गिर पड़े। इसकी आवाज लड़कियों के समान धीमी और पतली थी। चौधराणी ने उसका नाम पूछा तो उसके आश्चर्य का पार नहीं था। उसका नाम था 'भीम'।

चौधराणी कुछ समय तक भीम का तमाशा देखती रही। फिर तो उसने रास्ते में ही गाड़ीवान को गाड़ी वापिस ले चलने के लिये कह दिया।

घर आकर वह चौधरी से वोली—

'वास्तव में नाम का वुलाने के सिवा अन्य कोई अर्थ नहीं है। अव तो मुझे तुम्हारा नाम चीनी जैसा मीठा लगता है।' □

हिन्दी
लोक-कथा
कोश

खण्ड–III
(भाग तीन)

क्रम

स्वर्गीय यात्रा

एक समय की बात है। किसी गाँव में एक अनोखे नाम का आदमी रहता था। उसकी यह आदत थी कि वह हर एक से छेड़छाड़ करता रहता था। एक दिन उस गाँव के आदमी अनोखे की चालबाजियों से परेशान होकर उसके ताऊ के पास पहुँचे, जिसे वह नेक आदमी समझते थे और बड़ी इज्जत करते थे। उनसे कहा : 'श्रीमान ! अनोखे हमें बहुत कष्ट पहुँचाता है। वह जगह और समय का खयाल किये बिना हर समय बदमाशी करता रहता है। चाहे बूढ़ा हो या जवान, सबके साथ ही छेड़छाड़। कृपया उसे रोकिये अन्यथा हम स्वयं उसे सजा देंगे। वृद्ध आदमी ने कहा, 'चिन्ता मत करो, उसे मेरे पास आने दो। मैं उसको अभी अपने पास बुलाकर इन बदमाशियों को छोड़ देने के लिये कहूँगा। वह मुझसे बहुत डरता है, और मेरे कहने के विरुद्ध आचरण नहीं करेगा। ऐसा

कहकर सब आदमियों को विदा कर दिया। वह फिर अनोखे के पास गये और कहा : 'भले आदमी ! इस गाँव के आदमी तुम्हारी बदमाशी और छेड़छाड़ को पसन्द नहीं करते और वे लोग तुम्हें इस गांव से ही निकाल देना चाहते हैं। उनकी अवज्ञा करना ठीक नहीं है। इसलिये मेरी बात मानो और यह सब काम छोड़ दो।' इन सीख और शिक्षाओं का उस बदमाश लड़के पर कोई असर नहीं पड़ा और उसने सख्त लहजे में उत्तर दिया : 'आप क्या आसानी से मुझे इस गाँव के आदमियों से दबा सकते हैं। वे मुझे किस प्रकार इस गाँव से निकाल सकते है ? जबकि मैं किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता। यदि वे मेरी बदमाशियों को पसन्द नहीं करते, तो मुझे उनकी कोई परवाह नहीं है, मैं उनसे नहीं डरता। मुझे ग्रामवासियों का कोई डर नहीं है। वे चाहे जो कर सकते हैं। लेकिन उनको मेरी ओर से कह देना यदि वे मुझे एक सौ रुपये दे दें तो मैं उन रुपयों को मोहरों में बदल सकता हूँ।' बूढ़े ने जहाँ तक उससे हो सका था अनोखे को वश में लाने का प्रयत्न किया, लेकिन जब उसने अनोखे को अडिग देखा, वह लौट गया और गाँव के लोगों को इकट्ठा करके कह दिया : 'यह लड़का मेरी कुछ नहीं

सुनता है। वह अपनी चालाकियों को चालू रखने के लिये तुला हुआ है और यह भी कहा है यदि कोई मुझे सौ रुपये दे दे तो उनको मोहरों में बदल दूंगा। यह सुनकर गाँव के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और सोचने लगे कि क्या रुपयों को मोहरों में भी बदला जा सकता है? उसकी बदमाशियों से बचने के लिये तो यह अच्छा

ही है। उन्होंने सो रुपये इकट्ठे किये और बुड्ढे को देकर कहा : 'हम एक मोहर बनाने का तमाशा भी

देखना चाहते हैं। इसलिये अनोखे को यह रुपये दे देना। परन्तु उसने यदि इस सौदे का सच्चे रूप में पालन नहीं किया तो हम उसकी अच्छी पिटाई कर देंगे। बुड्ढा अनोखे के पास वापिस पहुँचा और कहा: 'बेटा! गाँव के लोगों ने तुम्हें यह सौ रुपये दे दिये हैं। वे मोहरों को इनके बदले में देखना चाहते हैं, जैसा कि तुमने मुझसे कहा था। इसलिये शीघ्र ही तुम अपना वायदा उन्हें पूरा करके दिखा दो। अन्यथा वे तुम्हारे साथ बुरी तरह पेश आयेंगे।' अनोखे सौ रुपये पाकर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी पत्नी से कहा: 'देखो मेरे ताऊ ने मुझे गाँव वालों से लाकर ये रुपये दिये हैं। और मुझसे कहा है कि इन रुपयों के बदले वे मोहरें देखना चाहते हैं। उनको में शीघ्र ही ऐसा करके दिखा दूंगा।'

उसकी पत्नी बोली: 'आप ऐसा खतरा क्यों सिर पर ले रहे हैं? मैं डरती हूँ कि गांव वाले आपको नुकसान भी पहुँचा सकते हैं। वे आपकी बदमाशियों को बिल्कुल पसन्द नहीं करते। आप उनका रुपया वापिस क्यों नहीं कर देते? और इस बात को सोचना बन्द कर दो।' अनोखे यह सुनकर हँस पड़ा और बोला— 'तुम कितनी सीधी औरत हो। तुम अनावश्यक रूप से

डर रही हो। अगर जैसा मैं कहूँ वैसा ही तुम करो तो मैं तुम्हारे लिये बहुत से गहने और अच्छी-अच्छी साड़ियाँ खरीद दूँगा।' यह सुनकर उसकी पत्नी का चेहरा खुशी से दमक उठा और वह बोली : 'मुझे शीघ्र बताओ कि मुझसे आप क्या कराना चाहते हैं ? मैं उसे तुरन्त पूरा कर दूंगी।' गहने और साड़ियों की तो उसे आवश्यकता थी। अनोखे ने कहा : 'सावधानी से सुनो जो मैं कहता हूँ। जब तुम कुंए पर पानी भरने जाओ तो रोती हुई और आँसू बहाती जाना। जब तुम्हारी सहेलियाँ रोने का कारण पूछें तो कह देना कि तुम्हारा पति सख्त बीमार है और उसके जीवित रहने की आशा नहीं है। रात में ही मर सकता है।' स्त्री ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था। जब उसने अपनी सभी सहेलियों में अनोखे की बीमारी का समाचार फैला दिया, उसकी सहेलियों ने उसके दुःख में पूरी सहानुभूति प्रकट की और कहा : 'भगवान उसकी रक्षा करे। वह एक अच्छा आदमी था और गाँव में उस जैसा दूसरा आदमी नहीं है।' उसका मतलब यह कि हर व्यक्ति को यह खबर मिल जाये और सब कोई अनोखे की बीमारी का समाचार जान लें। गाँव की औरतों ने उसको धीरज बँधाकर वापिस

अपने घर भेज दिया। जब वह अपने घर पहुँची, उसने अपने पति से कह सुनाया कि उसकी इच्छा के अनुसार काम हो गया है।

उसी दिन ऐसा हुआ कि गाँव में एक मुसलमान मर गया था। अनोखे ने अपना चेहरा ढक लिया और जब वे मुर्दे को कब्रिस्तान में ले जा रहे थे, उनके साथ चल दिया। उसको दफन करके जैसे ही और सब लोग वहाँ से चले गये, अनोखे ने उस कब्र को कुदाली से खोदकर लाश निकाल ली और अपने घर ले आया। तब उस लाश को उसने कफन से ढक दिया और उसे बरामदे में रखकर अपनी पत्नी से बोला : 'अगर कोई आदमी कफन उघाड़ कर मेरा चेहरा देखना चाहे तो उसे रोक देना और कहना कि मेरे स्वर्गीय पति की इच्छा थी कि मृत्यु के बाद उसका चेहरा कोई नहीं देखे। और मुझे डर है यदि किसी ने चेहरा देखा तो हमें नुकसान पहुँच सकता है।' इस पर विलाप करते हुए लोगों ने अर्थी तैयार की और उसे गाँव के श्मशान में ले जाकर जला दिया। ताऊ जी ज्यादा रोये जब कि नालायक लड़के की मृत्यु से अन्दर-ही-अन्दर वे प्रसन्न थे।

कुछ दिन बाद अनोखे अपने घर से बाहर निकला

और अपने ताऊ के घर का द्वार बाहर से जा खटखटाया। जब ताऊ ने उसे देखा तो वह एकदम भ्रमित हो गया और बोला : 'क्या ! तुम कौन हो ? तुम तो मर गये थे, यहां कैसे आये ?' अनोखे ने हँस कर कहा : 'मेरी मृत्यु के विषय में आप सच कहते हैं। मैं मर कर स्वर्ग में चला गया और अब मैं वहीं से आ रहा हूँ। जो चीज मैंने स्वर्ग में प्राप्त की हैं, उनका वर्णन करना मेरी सामर्थ्य से बाहर है। बढ़िया हवेली और उनमें बेशकीमती बिस्तर और कुर्सियाँ, प्यारे बगीचे, खाना ऐसा, जैसा मैंने पहले कभी नहीं चखा। सुन्दर अप्सरायें जो नाचती-गाती हैं। सब तरह के आराम आप वहां प्राप्त कर सकतें हैं। यह सुनकर उसके ताऊ लालच में भर गये और बोले : 'बेटा ! इस गाँव के आदमी मुझे बहुत दुःख देते हैं। मैं भी चाहता हूँ कि तुम मुझे अपने साथ स्वर्ग ले चलो और मैं वहाँ के सुख भोग लूं।' अनोखे ने उत्तर दिया : 'यह ऐसा आसान नहीं है जैसा कि आप सोचते हैं कि स्वर्ग में हर किसी को जगह मिल जाये। बहुत से लोग स्वर्ग में स्थान प्राप्त करना चाहते हैं और वे उसके लिये चाहे जितना रुपया भी खर्च करने को तैयार हैं। परंतु मैंने कुछ प्रबन्ध कर रक्खा है, यदि आप एक सौ रुपये

खर्च कर सकें तो मैं आपको एक स्थान दे सकता हूँ।' बुड्ढा स्वर्ग में स्थान प्राप्त करने के लिये इतना लालायित था कि उसने तुरन्त एक सौ रुपये लाकर अनोखे को दे दिये। अनोखे ने कहा : 'मैं कल इसी समय यहां आऊँगा। अगर मैं जगह प्राप्त कर सका तो कल ही आपको अपने साथ ले जाऊँगा।' उसके जाने के बाद ताऊ अपनी बीवी के पास गया और बोला : 'अनोखे अभी यहाँ आया था।' उसकी बीवी बोली : 'क्या वाहियात बातें आप करते हैं ? एक मरा हुआ आदमी वापिस कैसे आ सकता है ?'

बुड्ढा बोला : 'मैं तुमसे सत्य कह रहा हूँ। वह स्वर्ग से वापिस आया था और स्वर्ग में मुझे भी एक स्थान दिलाने का वादा कर गया है। क्या स्वर्ग के विषय में तुम कुछ जानती हो ?' और अनोखे ने स्वर्ग के बारे में ताऊ जी को जो कहा था, वह सब ताऊ ने अपनी बीवी को सुना दिया। स्वर्ग की इतनी तारीफ सुनकर बुढ़िया बोली : 'क्या मैं अनोखे की ताई नहीं हूँ ? वह पहले मुझे ले जायेगा। मैं उसे ऐसा करने के लिये दबाव डालूंगी।' ताऊ ने कहा : 'तुम गुस्सा क्यों होती हो ? अनोखे कल आयेगा और तब तुम उसी से बात कर लेना।' जब अगले दिन अनोखे

फिर आया, बुढ़िया चिल्लाती हुई उसकी ओर लपकी। और बोली : 'क्या तुम मुझे यहां अकेली छोड़ जाओगे ? क्या मैं तुम्हारी ताई नहीं हूँ। बल्कि कायदे से तो तुम्हें मुझे ही स्वर्ग ले चलना चाहिये।' अनोखे ने कहा : 'क्या तुम्हारे विचार से यह इतना आसान काम है कि स्वर्ग में हर किसी को स्थान मिल जाये ? मैंने ताऊजी के लिये बड़ी मुश्किल से स्थान प्राप्त किया है। अब तो वहाँ कठिनाई से ही कोई जगह बची होगी।' बुढ़िया ने अपनी अलमारी खोली और दो सौ रुपये लाकर अनोखे को दे दिये। ये रुपये लो और मुझे विश्वास है कि इनकी बदौलत तुम मेरे लिये भी स्थान प्राप्त कर लोगे। अनोखे ने रुपये अपनी जेब में रक्खे और बोला : 'ठीक है मैं कोशिश करूँगा। आधी रात को आप दोनों तैयार रहना। शाम को स्वर्ग-यात्रा का प्रबन्ध करने वह घर से बाहर निकल गया। रास्ते में धोबी के घर के बाहर बंधा हुआ गधा उसने देखा। उसने चुपचाप गधे को खोल लिया और अपने साथ ले चला। जब वह अपने ताऊ के घर के पास पहुँचा, उसने गधे को एक जगह बाँध दिया। और अन्दर चला गया और कहा : 'जल्दी करिये, नहीं तो वह जगह, जो मैंने आप दोनों को स्वर्ग में ठीक की है भर जायेगी।' जब वे लोग

चलने को थे, उसने कहा : मैं आप लोगों को पहले ही कहे देता हूँ कि स्वर्ग की यात्रा, जो हम शुरू करने ही वाले हैं आरामदायक बिल्कुल नहीं है। मार्ग बहुत खराब है। और यह भी निश्चित है कि यदि कोई गधे की पीठ पर सवारी करे तो यह कार में यात्रा करने के समान है। यदि आपको इतना कष्ट और तंगी उठानी पड़े तो उससे डरें नहीं। दूसरी ओर आपके सिर भी आपस में टकराने लगेंगे, अगर कार से नीचे की ओर देखना चाहेंगे तो। इसलिए मैं आप दोनों की आँखें कपड़े से बाँध दूंगा।' ऐसा कह कर उसने ताऊ और ताई की आँखें मजबूती के साथ बांध दीं। तब उसने ताई को आगे की ओर बैठाकर गधे के कान पकड़ा दिये और बोला : 'ताई ! इसको मजबूती के साथ पकड़े रहना। यही एक स्वर्गीय कार का झब्बा है।' उसके बाद उसने ताऊ को गधे पर ताई की ओर पीठ करके बैठाया और उसको गधे की पूँछ पकड़ा दी और कहा : 'ताऊजी ! यह स्वर्गीय कार की रस्सी है, इसको आप मजबूती से पकड़े रहना।' इस प्रकार दोनों को गधे पर बिठाकर अनोखे एक कुँए की खाई के पास ले गया और पास के एक पेड़ से टहनी तोड़कर गधे को जोर से मारा। गधा उस कुँए की खाई में नीचे और ऊपर की ओर

घूमकर चलने लगा ।

कुछ समय बाद गधे की साँस उखड़ गई और बिचारी सवारी भी अपार दुःख अनुभव कर रही थी । अंत में ताऊ ने पूछा : 'बेटा ! अब स्वर्ग कितनी दूर है ? मैं तो इस स्वर्गीय कार में बैठा हुआ थक गया हूँ ।' अनोखे चुपचाप हँसने लगा । 'कुछ समय और बैठे रहिये । हम लोग लगभग पहुँच ही गये हैं ।' कुछ समय के बाद ही गधा ताऊ के दरवाजे पर जा पहुँचा । 'आप जानते हैं कि स्वर्ग का राजा धर्मराज है और आपसे वही सम्पर्क करेगा ।' ऐसा कहकर अनोखे चला गया । ताऊ और ताई बाहर से पुकारने लगे : धर्मराज ! ओ धर्मराज ! ! परन्तु वहाँ कोई उत्तर नहीं मिला । इसलिये उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ कि यह क्या हुआ ? अब धर्मराज उसके बेटे का भी नाम था । वह इस समय अन्दर गहरी नींद में सोया हुआ था । जब उसकी बीवी ने उनकीआवाजें सुनीं, तो उसने अपने पति को जगाया और कहा : 'क्या तुम अपने पिता की चिल्लाहट नहीं सुन रहे हो, जो दरवाजे के बाहर खड़े हुए पुकार रहे हैं । उठो और देखो वे क्या चाहते हैं ।' बहुत हिलाने-डुलाने के बाद बेटा उठा और बाहर निकला और अपने माता-पिता को गधे पर बँधे हुए सवार देखकर चकित

रह गया, तब उसने पूछा : 'यह क्या मामला है ?' उसके पिता ने उत्तर दिया : 'ओह स्वर्ग के राजा ! हमें अपना स्थान दिखलाइये। देखो हम आपकी इस स्वर्गीय कार में सफर करते हुए कितनी दूर से चले आ रहे हैं।' बेटा गुस्से में भर गया अपने पिता की ऐसी बेवकूफी से और उनकी आंखों को बिना खोले ही उसने कहा : 'देखो, अपनी स्वर्गीय कार का सुख, जिसमें आप लोग इस समय बैठे हैं। वास्तव में स्वर्ग है या नहीं, आप स्वयं ही एक गधे पर इस तरह बैठे हुए अपने को देखोगे, तो शर्मिन्दा हो जाओगे। 'यही वास्तव में स्वर्ग है, जिससे कोलाहल मच गया है।' वह उन्हें अंदर ले गया और इस तमाम बेवकूफी के दृश्य को समाप्त कर दिया। उसके माता-पिता गधे से नीचे उतरे और आश्चर्य से उन्होंने देखना शुरू किया कि स्वर्ग में पहुँचने के बजाय वे वापिस अपने ही घर आ पहुँचे हैं। जहां से उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की थी और वह भी एक गधे पर। उन्होंने रोना और विचारना शुरू किया कि हम वास्तव में अनोखे की चाल का शिकार हो गये थे। जो उसने केवल तीन सौ रुपये ठगने के लिये ही हमारे साथ खेली थी।

अगले दिन उस गाँव की जनता एक जगह इकट्ठी

ई और अनोखे उनके सामने उपस्थित हुआ। जब उन्होंने अनोखे की इस चाल के विषय में सुना, वे रुपये लौटा देने के लिये उसे बाध्य करने लगे। लेकिन अनोखे ने उन्हें उत्तर दिया: 'मैंने पहले ही आपसे कह दिया था कि मैं एक कीमती चालाकी खेलूंगा। अब मैं रुपये क्यों वापिस करूँ, ये मेरे हैं।' गाँव की जनता और झगड़ा बढ़ाने को तैयार नहीं थी, जो कुछ उसने कहा उसे सुनकर चुप हो गयी। अनोखे हृदय में खुलकर हँसता हुआ अपने घर चला गया।

गूजरी रानी

उन दिनों मुगलों के बार-बार आक्रमण होते रहते थे। सिकन्दर लोदी और गायासुद्दीन खिलजी ने कितनी बार ग्वालियर के किले पर छापे मारे, परन्तु उनमें सफल नहीं हुए। तब उन्होंने आस-पास के गांवों को नष्ट करके उनकी फसल को लूटना शुरू किया। बहुत से मन्दिरों को तोड़ कर जमींदोज कर दिया, उस समय की ही यह कहानी है।

ग्वालियर के पास राई नामक गांव में एक किसान के यहां निन्नी नामक लड़की थी। वह बड़ी सुन्दर थी। सिकन्दर लोदी के आक्रमण के समय उसके माँ-बाप युद्ध में काम आ गये थे और एक भाई के सिवा संसार में उसका कोई भी नहीं था। भाई ही उसकी रक्षा एवं पालन-पोषण किया करता था। उसके पास एक कच्चा मकान और एकाध खेत भी था उन्हीं से उनका गुजारा हो जाता था। दोनों भाई बहनों को शिकार का शौक

था। वे पास के जंगल में जंगली जानवरों का शिकार किया करते थे। दोनों ही अपनी गरीबी में संतुष्ट रहते थे। गांव के सभी धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों में भाग लिया करते थे। उनके स्वभाव एवं व्यवहार के कारण दोनों ही बहन और भाई पर पूरे गांव का

प्रेम था। धीरे-धीरे पारिजात के फूल समान निन्नी के अनुपम सौन्दर्य की सुवास आस-पास के प्रदेशों में फैलने लगी। उड़ती-उड़ती यह बात एक दिन मालवे

के सुल्तान गयासुद्दीन के कानों में भी पहुँच गई। शराब और स्त्री; ये ही तो उसके जीवन थे। उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को बुलाया और राई गाँव की इस अपूर्व सुन्दरी निन्नी को अपने जनानखाने में ले आने की आज्ञा दे दी। इस काम के लिये कुछ घुड़सवार पसंद करके सुल्तान ने उनसे कहा : 'इस छोकरी को लाने में यदि तुम सफल नहीं हुए तो तुम्हारा माथा धड़ से जुदा कर दिया जायेगा, और जो सफल हो गये तो अच्छा इनाम दिया जायेगा।

ठीक उसी दिन निन्नी अपनी सखी लाखी के साथ जंगल में शिकार खेलने गयी हुई थी। उस दिन शाम तक उसे कोई शिकार नहीं मिला था। तब वह निराश होकर वापिस लौट रही थी। तभी कुछ दूर एक झाड़ी में उसने कुछ आवाज सुनी। लाखी तो थक कर चूर-चूर हो चुकी थी; इस कारण वह तो वहीं बैठ गई। परन्तु निन्नी धनुषबाण और भाला लेकर आगे बढ़ी। झाड़ी के पास ही कोई शिकार की तलाश की, परन्तु कुछ नजर नहीं आया। जैसे ही वह वापिस लौटी उसने फिर आवाज सुनी। उसने देखा तो झाड़ी में से दो घुड़सवार उसकी ओर बढ़े चले आ रहे हैं। पहले तो वह घबड़ाई। परन्तु फिर उसने

अपने में हिम्मत बांधी और उनसे कड़ककर पूछा : 'तुम कौन हो ? और यहाँ किसलिये आये हो ?' दोनों घुड़सवार घोड़ों पर से कूद पड़े। उनमें से एक ने कहा : 'हम सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी के आदमी हैं और तुम्हें ले जाने के लिये आये हैं। सुल्तान तुम्हें बेगम बनाना चाहते हैं।' घुड़सवार के मुख में से दो शब्द पूरे निकल भी नहीं पाये थे कि निन्नी ने कंधे से धनुष उतार कर सटाक देनी उस पर बाण छोड़ दिया और सवार की एक आँख फोड़ डाली। निन्नी के दूसरे तीर का लक्ष्य भी आँख ही थी। परन्तु सवार के दोनों हाथ आँख पर होने के कारण दूसरा तीर उसकी हथेली पर ही लटका रह गया। दूसरा सवार यह देख कर भागने लगा था, निन्नी उसके पीछे दौड़ी और भाले की एक ही चोट से उसे जमीन पर गिरा दिया। फिर क्रोधित हुई निन्नी ने काने सवार को भी भाला मारा और जमीन पर सुला दिया। और खूब जोरों से हाँफती-हाँफती स्वयं लाखी के पास जो नाला था, उसमें पानी पीकर वापिस आकर आराम करने लगी। निन्नी के द्वारा घुड़सवारों के समाचार सुनते ही लाखी के होश हवास उड़ गये, परन्तु निन्नी ने उसको हिम्मत बँधाई और तुरन्त ही गाँव में

वापिस लौटने को कहा ।

दूसरे दिन पूरे राई गाँव में निन्नी की वीरता के समाचार बिजली के समान फैल गये। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के कानों में भी यह बात पहुँच गई। वह इस बहादुर लड़की से मिलने के लिये उत्सुक हो उठा। उसके बाद जो कोई आदमी राई गाँव में से आता, उससे वह उस छोकरी के विषय में अवश्य पूछताछ करता। एक दिन गाँव का पुजारी मंदिर बनवाने के लिये सहायता की याचना करने राजा के पास पहुँचा। उसने निन्नी की वीरता की कितनी बातें राजा को सुनाईं। राजा को तो यह सुन-कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि निन्नी अकेली ही भाले और तीरन्दाजी से जंगली भैंसों के सामने जाकर उन्हें मार गिराती है। यह तो गजब की बात है। अन्त में एक दिन मानसिंह ने पुजारी द्वारा गाँव के लोगों की स्थिति देखने राई गांव आने के समाचार भिजवा दिये।

राजा के आगमन के संदेश के साथ ही पूरे गांव में आनन्द फैल गया। सब कोई स्वागत की तैयारी करने लगे। लोग अपने कच्चे मकानों को लीपने-पोतने लगे थे जिसके पास पैसे थे उन्होंने नये कपड़ों के जोड़े सिलवा

डाले और जिनके पास नहीं थे वे लोग नदी में जाकर कपड़े धो लाये। बड़ी आतुरता से लोग जिस दिन की बाट देख रहे थे वह दिन आ पहुँचा। उस दिन प्रत्येक घर के दरवाजे पर आम के पत्तों की तोरण बँधी हुई थी। लोग बगुला की पंख के समान सफेद कपड़े पहन कर आम रास्ते पर स्वागत करने के लिये खड़े हुए थे। सामने हार नोहरों में स्त्रियाँ खड़ी हुई थीं। उनके सिर पर रक्खे हुए घड़ों के ऊपर तेल के दीपक जल रहे थे। सभी के आगे निन्नी हाथ में अक्षत, कुमकुम, फूल तथा आरती के लिये घी का दीपक लेकर खड़ी हुई थी। उसके पास ही गांव के पुजारी भी खड़े थे। बाकी के सभी पुरुष हार लिये उनके पीछे खड़े हुए थे। जैसे ही राजा की सवारी आयी कि तुरन्त ही गांव के लोग जय-जयकार बोलने लगे। फिर पुजारी ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। उनके भाले पर चन्दन और कुमकुम का तिलक लगाया और माला पहनाई। राजा ने ब्राह्मण की चरण लीनी और पुजारी ने राजा को आशीर्वाद दिया। इसके वाद पुजारी ने गाँव के गौरव स्वरूप निन्नी की वीरता का वर्णन किया। निन्नी सिर झुकाये खड़ी हुई थी। उसने तुरन्त ही चावल और कुमकुम राजा के मस्तक

पर फेंके। फूल उनकी पगड़ी पर फेंके और आरती उतारी। मानसिंह की दृष्टि निन्नी के भोले मुख पर जमी हुई थी। मानसिंह की दृष्टि, निन्नी द्वारा फेंके गये फूलों में से एक फूल नीचे गिर गया था, उस पर पड़ी। उस फूल को नीचे झुक उठाया और अपनी पगड़ी में वापिस खोंस लिया। कितनी ही स्त्रियों ने इसे देखा और एक दूसरी के सामने देखकर मनोमन हँसने लगीं, परन्तु लाखी बोले बिना नहीं रह सकी। उसने निन्नी की बाँयीं बगल में चुटकी भरी और कहा: 'राजा ने तुम्हारी पूजा स्वीकार कर ली है। अब तू जरूर ग्वालियर की रानी बनने वाली है।' निन्नी के गोरे गालों पर रक्त भरी लाली छा गई, फिर तो वह तुरन्त ही स्त्रियों के झुंड में जा छिपी। राजा मन्दिर की तरफ चले गये।

म... के पास ही राजा का पड़ाव रखा गया था। रात के समय गांव की एक सभा में राजा ने मन्दिर के लिये पाँच हजार रुपये का दान दिया। गांव में कुंआ खुदवाने के लिये तथा सड़क बनवाने के लिये दस हजार रुपया देने के वचन दिया। अन्त में राजा ने मुगलों का सामना करने के लिये तैयार रहने को कहा। उन्होंने सब के बीच में निन्नी की बहादुरी का

भरपेट बखान किया और दूसरे दिन निन्नी के शिकार खेलने का ढंग देखने की इच्छा प्रकट की। पुजारी ने निन्नी के भाई अटल के सामने देखा। उसने निन्नी से पूछे बिना ही मांथा हिलाकर अपनी सहमति दे दी। फिर तो रात में देर तक वातावरण में भजन कीर्त्तन का माधुर्य गूँजता रहा।

दूसरे दिन शिकार की तत्परता से तैयारी होने लगी। राजा मानसिंह के लिये माचा तैयार किया गया। निन्नी ने भीत पर टाँगे हुए सभी हथियार साफ करके धारदार बना लिये। अपने हथियारों को साफ करते-करते निन्नी विचारों में खोई रहती। कभी ग्वालियर की रानी बनने के विचारों से रोमाँच अनुभव करती तो दूसरे ही क्षण हृदय के टुकड़े जैसे भाई का खयाल, गाँव का सुख, स्वतंत्र जीवन, साफ नदी का शीतल जल और जंगल के शिकार का आनन्द उसको अलौकिक जगत में पहुँचा देता। तभी अटल दौड़ता हुआ आया और निन्नी से कहा : 'उतावली कर। हमारी खबर के अनुसार राजा जंगल की ओर चल पड़े हैं।' तभी लाखी भी आ पहुँची। लाखी और निन्नी ने हाथों में हथियार उठा लिये।

छिपे हुए जानवरों को अपनी मांद और झाड़ियों

से बाहर निकालने के लिये राजा के आदमी जंगल में ढोल बजा रहे थे। निन्नी और लाखी एक बड़े वृक्ष के नीचे खड़ी हुई थीं तभी हरिण का परिवार बाहर आ गया। निन्नी के एक ही बाण से हरिणी गिर पड़ी और दूसरे बाण से उसने भागते हुए नर हरिण को भेद दिया। फिर निन्नी ने दौड़कर हरिण के दो बच्चों को प्रेम से उठा लिया और गोद में उठा कर वृक्ष के नीचे ले आयी। मानसिंह यह दृश्य देखकर मन ही मन निन्नी के कोमल हृदय की प्रशंसा करने लगे। इसके बाद तो कितने ही जंगली जानवर बाहर निकल आये और निन्नी ने उन्हें एकमात्र भाले से ही छेद डाला। इतने में ही एक जंगली भैंसा आ निकला। निन्नी के द्वारा पूरी ताकत से छोड़े गये बाणों से वे भी छेद दिये गये। तब तो घायल हुई भैंस नथुने फुलाकर निन्नी की तरफ झपटी। मानसिंह अपनी बन्दूक उठा कर गोली चलाने की सोच ही रहे थे कि तब तक निन्नी ने काल के समान भैंसे के आगे बढ़ कर उसके दोनों सींगों को जोर से मरोड़ डाला। फिर बिजली के वेग से भाला निकाल कर माथे में भोंक दिया। कान फाड़ डालने वाली चीख मार कर भैंसा जमीन पर गिर कर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

मानसिंह माँचे से नीचे उतरे और निन्नी के पास आये। उन्होंने अपने गले से कीमती हार उतार कर निन्नी के गले में डाल दिया। निन्नी ने झुककर राजा को प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गई। लाखी ने देखा कि निन्नी और राजा दोनों ही चुप हैं। वह जानवरों के शरीर से भाला निकालने के बहाने वहाँ से हट गयी। तब मानसिंह ने निन्नी का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा: 'शक्ति और रूप का संयोग कैसा तुम्हारे में उत्पन्न हुआ है निन्नी? वास्तव में तुम ग्वालियर के राजमहल की शोभा बढ़ाने वाली हो। तुम मेरे साथ विवाह करोगी? तुम वहां आ जाओगी तो हमारे राजमहल में तुम्हारे साथ सोलह आना सुख आ करके वहाँ वास करेंगे।'

निन्नी के गाल शरम से लाल हो गये। वह क्षण भर तो मौन ही रही और फिर बड़े ही नम्र स्वर में बोली: 'फिर मुझे गाँव का यह सुन्दर स्वतन्त्र जीवन कहाँ से मिलेगा?' वहाँ मुझे शिकार के लिये जंगल और जानवर कहां मिलेंगे? साफ नदी और शीतल पानी मुझे बहुत प्यारा लगता है, ये सब राजमहल में कहाँ मिलेंगे?'

'हृदेयश्वरी' निन्नी का हाथ में अपने हाथ में लेकर

मानसिंह बोले : 'तुम्हारी सभी इच्छा मैं परिपूर्ण करूँगा। तू वचन दे तो साफ नदी भी ग्वालयिर के महल तक ला दूंगा । बोल निन्नी, अब तू क्या कहती है ?'

परन्तु निन्नी के होंठ शर्म से सिवाई गये। इसी समय अटल और दूसरे आदमियों को अपनी ओर आते देखकर निन्नी ने अपना हाथ खेंच लिया ।

उसी दिन शाम को मानसिंह ने पुजारी द्वारा अटल के पास निन्नी के हाथ की मंगनी भेज दी। विवाह की बात से निन्नी के हर्ष का पार नहीं था। दूसरे ही दिन ब्याह होना था । अटल उसकी व्यवस्था में व्यस्त हो गया । लोग उससे पूछते : 'अटल ! बहन के विवाह के उत्सव के लिये पैसे कहां से आँयगे ?' तब अटल गर्व से उत्तर देता : 'कन्यादान करके गाय दे दूंगा ! सूखी हल्दी और चाँवल से टीका कर दूंगा। घर में कितने ही जंगली पशुओं का चमड़ा पड़ा हुआ है, उसे बेच कर बहन के लिये चांदी की हँसली बनवा दूंगा । इससे अधिक क्या चाहिये ।'

मानसिंह ने अटल की इन कठिनाइयों को सुन लिया, तब उन्होंने संदेशा भेजा कि वह ग्वालियर में विवाह करेंगे और दोनों ओर का खर्चा उठायेंगे। इससे स्वाभिमानी अटल को बड़ा दुःख हुआ । उसने

तुरन्त ही सन्देशा भेजा कि उसको यह बात मंजूर नहीं है। लड़की वाला, लड़के के यहाँ जाकर विवाह करे, ऐसा हमारी सात पीढ़ी में भी नहीं हुआ है। गरीब से गरीब माँ-बाप भी अपने यहाँ ही कन्यादान करते हैं। मैं अपनी बहन का अपने घर ही माँडवा गढ़ा कर ब्याह करूँगा। ग्वालियर के महाराज को यहीं बरात लेकर आना पड़ेगा। राजा ने यह बात स्वीकार कर ली। इसलिये पूरी रात जागकर सभी तैयारी करनी पड़ीं। जंगल में जाकर लकड़ी और आम के पत्ते लाकर मंडप बनाया। अनाज बेचकर निन्नी के लिये सुन्दर पोशाक तैयार करायी। गांव में बाँटने लिये गुड़ ले आया। फिर वैदिक रीति से दूसरे ही दिन राजा मानसिंह और निन्नी का विव ह हो गया। गाँव वालों ने निन्नी के लिये इतनी भेंट दी कि वह उनसे ढक गयी। बिदा के समय निन्नी अपने भाई अटल के गले लग कर खूब रोई। उसने रोते-रोते ही कहा: 'भाई! अब लाखी को जल्दी से जल्दी भाभी बनाकर घर ले आना। मेरे बिना तुमको कौन खाना बनाकर खिलायेगा?' भाई ने उसे आश्वासन दिया। निन्नी भाई की झोंपड़ी छोड़कर ग्वालियर के महलों में रहने के लिये चल निकली। उस समय दोनों भाई-बहनों की आँखें श्रावण भादों के मेघों के समान बरस रही थीं।

आया कप्पन

किसी समय एक नगर में एक सौदागर था। उसके आया कप्पन नामक एक ही पुत्र था। आया कप्पन के बचपन में ही उसके पिता की मृत्यु हो गयी थी। उसके पिता ने अपने जीवन में अच्छा धन पैदा किया था। आया कप्पन हर समय अनेक मित्रों से घिरा हुआ रहता था। उसने अपने पिता के द्वारा कड़ी मेहनत से कमाया हुआ धन शीघ्र ही अपने मित्रों पर लुटा दिया। जब उसके पास बहुत कम द्रव्य बचा रह गया, उसके मित्र भी तब उसके पास कम आने लगे। जब उसके मित्रों ने उसके यहाँ आना बिल्कुल ही बन्द कर दिया तब उसे पैसे का मूल्य मालूम पड़ा। अब उसने अपने पास बचा हुआ धन बड़ी मितव्ययिता से खर्च करना शुरू किया।

राजा और उसका मंत्री दोनों अपने देश में अपनी प्रजा की हालत का जायजा लेने के लिये प्रायः घूमने

जाया करते थे। एक बार जब वे दोनों इसी प्रकार घूम रहे थे, उन्होंने आया कप्पन को देख लिया। वे उसके पास आये और उससे कहा कि: 'हम मुसाफिर हैं और हम उसके साथ ही भोजन करना चाहते हैं।' आया कप्पन ने उत्तर दिया: 'मैं आप दोनों से मिलकर बहुत प्रसन्न हूँ और आपके साथ भोजन करना अपना अहोभाग्य समझूंगा।' उसने अपनी माँ से अच्छा खाना तैयार करने के लिये कह दिया।

राजा और उसके मंत्री ने उसके साथ भोजन किया। भोजन करने के बाद राजा ने कहा कि: 'हम तुम्हारे अतिथि-सत्कार के व्यवहार से बहुत प्रसन्न हैं। इन दिनों में आप सरीखा अतिथि-सत्कार करने वाला मनुष्य कठिनता से ही मिलता है। यदि आप कोई अपनी इच्छा की पूर्ति करना चाहते हैं, तो हमसे कह दीजिये। हम लोग भरसक आपकी इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयत्न करेंगे।'

आया कप्पन ने उत्तर दिया: 'मैं बहुत खुश हूँ। केवल यदि मैं राजा बन सकूँ इस देश का केवल एक दिन के लिये ही तो मैं अपने ही पड़ोसियों को सजा दे सकूँगा, जिन्होंने मेरे साथ दगा की है।' दोनों ने कहा: 'ठीक है, हम आपकी इस इच्छा को पूर्ण करने

का प्रयत्न करेंगे ।'

उन सबने बाहर आकर पान खरीदे । राजा ने कप्पन की आँख बचाकर उसके पान में बेहोशी की दवा डाल दी । अपना पान खाने के बाद आया कप्पन सब सुधबुध भूल गया । दोनों ही राजा और मंत्री उसको अपने साथ महल में ले गये । चूँकि तब रात हो चुकी थी । किसी ने भी आया कप्पन को महल में जाते हुए नहीं देखा । उन्होंने आया कप्पन को राजा के पलंग पर सुला दिया और राजा के ही कपड़े उसे पहना दिये ।

सबेरा होते ही राजा का प्रधान मंत्री आया कप्पन के पास पहुँचा और कहा : 'स्वामी ! यह समय आपके जागने का हो गया है । तमाम जनता दरबार में आपकी प्रतीक्षा कर रही है ।'

आया कप्पन जाग गया और अपने बिस्तर पर बैठ गया । वह अपने को ऐसे सजे हुए कमरे में देखकर चकित हो गया । वह यह सोचने लगा कि वह स्वयं कौन है और यहाँ वह किसके मकान में है । उसने सोचा यह स्वप्न है, इसलिये फिर लेट गया । तब मंत्री ने फिर कहा : 'स्वामिन् ! यह सोने का समय नहीं है । बहुत सारी जनता आपकी प्रतीक्षा कर

रही है। कृपया उठिये और उन्हें सम्बोधित करिये।' आया कप्पन ने तब मंत्री से पूछा : 'आप कौन हैं ? मैं किस तरह राजा का काम कर सकता हूँ ?' मंत्री ने उत्तर दिया : 'स्वामिन् ! आप आज इस प्रकार का प्रश्न क्यों कर रहे हैं ? ऐसा ज्ञात होता है कि आज रात को आपने कोई बुरा सपना देखा है जिससे आप अपने इस निजी सेवक को भी भूल गये हैं, जो गत दस वर्ष से आपकी निरन्तर सेवा कर रहा है।' जब आया कप्पन ने यह सब सुना, तब उसने सोचा कि किस तरह एक व्यापारी का लड़का राजा भी बन सकता है ? उसने सोचा कि निश्चय ही वह कोई स्वप्न देख रहा है। अतः उसने फिर एक बार सोने का प्रयत्न किया, लेकिन उसके मंत्री ने फिर उसे सोने नहीं दिया।

अन्त में आया कप्पन को जागने के लिये विवश होना ही पड़ा और स्वयं अपने आप यह मालूम करने लगा कि आया यह स्वप्न ही है या जागृत अवस्था। वह उठ खड़ा हुआ और जाकर सिंहासन पर बैठ गया। उसने जनता की सभी प्रार्थनायें धीरज के साथ सुनीं और उन पर फैसले भी दिये। राजा छिपा हुआ यह सब देख रहा था और संतुष्ट था।

एकाएक आया कप्पन को अपने पड़ोसियों की याद

आ गयी। उसने अपने-मंत्रियों को उन दोनों पड़ोसियों को तुरन्त बुलवाने की आज्ञा दी। और उनका सिर मुँडाकर एक गदहे पर सवार करके पूरे नगर में घुमाने के लिये कह दिया। उसने यह भी आज्ञा दी कि अपनी माता को पंद्रह हजार अशर्फियाँ तुरन्त भिजवा दी जावें। मंत्रियों ने उसकी आज्ञाओं का पालन किया।

इसके बाद आया कप्पन ने सोने की रकावियों में सबके लिये महल में भोजन कराया। जिस समय वह सबके साथ भोजन कर रहा था, तब सुन्दर लड़कियाँ उन सबको खाना परोस रही थीं। शाम के समय कितने ही प्रकार के खेल दिखाये गये। उसने शाम को भी सबके लिए प्रीतिभोज दिया। भोजन के अन्त में सबको पान सुपारी दिये गये। इन पानों के साथ उसे बेहोश करने के लिए उसके पान में फिर बेहोशी की दवा डाल दी गयी। जब वह बेहोश हो गया। उसकी राजकीय पोशाक उन्होंने उतार ली और उसको अपनी निजी पोशाक पहनाकर उसके निजी मकान में पहुँचा दिया।

दूसरे दिन सुबह ही, जब वह जागा, उसने अपने को राजमहल में नहीं पाया। उसने मंत्रियों को जोर-जोर से पुकार कर बुलाना शुरू किया। जब उसकी

माँ ने उसको पुकारते हुए सुना वह दौड़कर वहाँ आ गयी और बोली : 'बेटा ! तुम इतने जोर से क्यों चिल्ला रहे हो ? कल तुम कहाँ चले गये थे ? और वापिस कब आये ?' क्योंकि आया कप्पन का मकान बहुत बड़ा था, इसलिए उसकी माता राजा और उसके मंत्री को नहीं देख सकी, जोकि उसके पुत्र को अपने साथ ले जा रहे थे। आया कप्पन ने अपनी माँ से पूछा : 'तुम कौन हो ?' उसकी माँ ने कहा : 'क्या मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ ? मुझसे तुम इस प्रकार क्यों पूछ रहे हो ?' उसने कहा : 'तुम किसकी माँ हो ? मैं तो राजा हूँ। तुम मेरी माँ कैसे हो सकती हो ?' उसकी माँ बोली : 'इस प्रकार की बातें नहीं किया करते। राजा यह सुनकर क्रोधित होगा, और वह तुम्हें दण्ड भी दे सकता है, तुम उसके क्रोध को नहीं जानते। उन्होंने जो दण्ड हमारे पड़ोसियों को दिया है क्या वह भी तुमको मालूम नहीं है ?' आया कप्पन ने तब कहा : 'ओह ! क्या तुम इस बात को जानती हो। वह मैं ही था जिसने कल उनको दण्ड दिया था। तब तुम यह क्यों कह रही हो कि मैं राजा नहीं हूँ ?' उसकी मां ने उत्तर दिया : 'तुम्हें आज हो क्या गया है ? अगर राजा यह सब सुन लेगा तो न जाने क्या हो जायगा ?

यह उस राजा की ही कृपा है जो हमारे लिए पंद्रह हजार अशरफियाँ कल भेज दी हैं। क्या यह तुमको मालूम नहीं है।' जैसे ही आया कप्पन ने अशरफियों की बात सुनी वह बोला : 'वह भी मैं ही था जिसने यहाँ अर्शफियां भेजी थीं। तो भी तुम नहीं जानती कि किस प्रकार मेरा अदब करना चाहिये ? और मेरी माँ तुम कैसे हो सकती हो ?' ऐसा कहते ही उसने एक छड़ी उठा ली और अपनी माँ को पीटना शुरू किया और जबकि उसे इस प्रकार मारना नहीं चाहिये था। वह इस बात पर यकीन नहीं कर पाया कि वह उसकी ही माता है। पड़ोसी आकर उसे एक पागल-खाने में ले गये और वहाँ भरती कर दिया।

पागलखाने में उसे खाने के लिए खुराक बहुत कम दी गई और प्रतिदिन पिटाई होने लगी। उसकी माँ उसको देखने के लिए प्रतिदिन पागलखाने में जाती। आया कप्पन अब अपनी स्थिति को अच्छी तरह समझ गया था। जैसे ही उसने अपनी माँ को देखा, वह बोला : 'माँ कृपाकर मुझे क्षमा कर, जो कुछ गल्तियां मैंने तुम्हारे साथ की हैं उनको भूल जा। मैं तुमसे फिर माफी माँगता हूँ।' जब उसकी मां ने यह सब सुना उसकी खुशी वह अपने में समा नहीं सकी। और

वह तुरन्त वहाँ के अधिकारियों के पास गई और उसे वहां से छुट्टी दिलाकर घर ले आयी। बाद में तो वह अपने दिन बड़ी प्रसन्नता से बिताने लगा।

इसी प्रकार कुछ दिन बीत गये। राजा और उसका मंत्री अपने भेष बदलकर फिर एक दिन नगर में घूमने को निकल पड़े। जब आया कप्पन ने उनको आते हुए देखा, वह एक पेड़ की ओट में छिप गया। राजा ने उसे देख लिया और पूछा: 'तुम अपने को इस प्रकार क्यों छिपा रहे हो? मैंने तुमको क्या हानि पहुँचाई है!'

आया कप्पन ने कहा: 'कृपा कर आप अपने रास्ते पर चले जाइये। मेरे पास कहने के लिये कुछ नहीं है।' तब राजा बोला: 'मैं बहुत दूर से चला आ रहा हूँ और मुझे भूख भी जोरों से लगी है। मुझे खाना कौन खिलायेगा?' आया कप्पन तब उनको अपने घर ले जाने के लिए इनकार नहीं कर सका। उसने उनको भोजन कराया जिस समय वे भोजन कर रहे थे, राजा ने उससे पूछा: 'तुमने मुझे देखकर अपने को छिपाया किसलिये?' आया कप्पन ने उसके साथ जो कुछ भी बीता था, वह सब कह सुनाया। जब वह पागलखाने में था, उसकी वहाँ जो पिटाई हुई थी,

वह भी उसने अपनी पीठ उघाड़ कर उन्हें दिखा दी। राजा ने उसके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की और जिस समय वे पानी-सुपारी लेने में व्यस्त थे राजा ने एक पुष्प आया कप्पन को सुंघा दिया। जैसे ही आया कप्पन ने उस पुष्प को सूंघा वह बेहोश हो गया और उसे फिर राजमहल में पहुँचा दिया।

जब सुबह के समय उसने अपने को फिर राजमहल में देखा तो वह चकित रह गया। मंत्री उसे जगाने आया। तब आया कप्पन ने पूछा: 'आप कौन हैं, और यहाँ किसलिये आये हैं?' मंत्री ने उत्तर दिया: 'श्रीमान! अकसर आप स्वप्न देखते ही रहते हैं, यही कारण है कि आप मुझे भूल गये हैं।' आया कप्पन ने तब कहा: 'जाओ, अपना रास्ता पकड़ो। मैं राजा नहीं हूँ। मैं एक व्यापारी का बेटा हूँ। पहली बार जब मैं यहाँ आकर राजा बना था, मैंने बहुत मार खाई है। उसके निशान अब भी मेरी पीठ पर देख सकते हैं।' ऐसा कहते हुए उसने अपनी पीठ मंत्री को दिखा दी। राजा दरवाजे के बाहर खड़ा हुआ इन सब बातों को सुन रहा था, अब वह अपनी हँसी रोक नहीं सका। वह सामने आ गया और बोला: 'तो फिर आप यहाँ आ ही पहुँचे।' यह सुनते ही

आया कप्पन उसकी आवाज को पहचान गया और समझ गया कि वह आदमी जो उसके घर दो बार जा चुका है वह ही यह राजा है। तब उसने कहा : 'महाराज मैं बिल्कुल सही हूँ।' वह राजा के पैरों पर गिर पड़ा। राजा ने तब उसका परिचय अपनी रानी से भी कराया और उसके बाद उसे खुले रूप में आमंत्रित कर दिया कि वह जब चाहे तब राजमहल में कहीं भी आ जा सकता है।

आया कप्पन इसके बाद राजमहल में बराबर जाने-आने लगा। उसका एक दासी के साथ प्रेम भी हो गया। रानी को जब बात मालूम हुई तो उसने राजा को भी यह बात कह सुनायी। राजा ने उस दासी को आया कप्पन को दे दिया और विवाह करके उन दोनों के लिये राजमहल के पास ही एक बड़ी हवेली भी बनवा दी। राजा ने उसे बहुत धन भी दिया और उसी हवेली में दोनों रहने लगे। आया कप्पन ने वह सारा धन भी उड़ा दिया, यहाँ तक कि उसके खाने के लिये भी कुछ नहीं बचा। वह बहुत चतुर था। उसने सोचा, राजा से और द्रव्य प्राप्त करने के लिये कुछ नाटक रचना चाहिये। उसने अपनी पत्नी से कहा कि : 'तुम अपने बालों को खोलकर फैला लो

और रोती हुई रानी के पास जाकर कहो कि मेरा पति मर गया, उसकी अंतिम क्रिया करने के लिये कुछ धन चाहिये।'

जैसी कि बातें उसके पति ने सिखायी थीं, उन्हीं के अनुसार दासी रानी के पास गयी और उससे अपने मृत पति की अन्तिम क्रियाओं पर खर्च करने के लिये धन माँगा। रानी को उसके पति के मर जाने की खबर सुनकर बड़ा दुःख हुआ और उसने एक हजार अशरफी खर्चे के लिये दिलवा दीं तथा उसे अपने पास ही आकर रहने को कह दिया।

आया कप्पन की बीबी घर गई और एक हजार अशरफी अपने पति को दे दीं। आया कप्पन ने तब अपने बाल फैला लिये और मैले कपड़े पहन कर वह राजा के पास गया और बोला : 'श्रीमान्! मैं कुटुम्ब की झंझटों में नहीं पड़ कर अपना जीवन आराम के साथ बिता रहा था, परन्तु आपने अपनी दासी के साथ मेरा विवाह कर दिया। और वह अचानक बीमार पड़ कर मर गई। जो रुपया आपने मुझे दिया था, वह उसके इलाज करवाने में खर्च हो गया। अब उसका अन्तिम संस्कार करने के लिये कुछ भी नहीं बचा है। राजा को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ और उसने

आया कप्पन को एक हजार अशरफी खजाने से दिलवा दीं। राजा इस खबर को सुनाने के लिये रानी के पास चला गया।

रानी भी अपनी दासी के पति की मृत्यु की खबर से बहुत दुःखी थी, वह नहीं जानती थी दासी के पति की मृत्यु का समाचार अपने पति को कैसे बतावे? तभी राजा ने आकर कहा : 'भाग्य के खेलों के विषय में कौन बता सकता है। उसके दिन पूरे हो चुके थे। अब इस समाचार से दिल को अधिक दुखी मत करो।'

रानी ने कहा : 'इससे तो वह अनब्याही ही अच्छी थी। यहां आराम से रहती थी। हमने उसका विवाह कर दिया और वह मर गया।'

राजा यह सुनकर अवाक रह गया और कहा : 'तुम्हारी तो दासी की मृत्यु हुई है और तुम इस प्रकार बातें कर रही हो, गोया आया कप्पन मरा हो।'

रानी ने तब कहा : 'मैं अपनी दासी को हजारों बार खुश रखने का प्रयत्न करती थी। मेरी दासी बड़ी भाग्यशाली थी, मैं उसको विधवा के रूप में नहीं देख सक़ती। मैंने उसे अभी एक हजार अशरफियां अपने पति की अन्तिम क्रिया करने को दे दीं हैं।

राजा ने कहा : 'यह तो मेरे साथ चालाकी है।

केवल डेढ़ घंटा पहले ही आया कप्पन मेरे पास आया था और मुझसे यह कह कर कि मेरी बीबी मर गयी है, मुझ से एक हजार अशरफी उसकी अन्तिम क्रिया के लिये ले गया।' राजा ने सच्चाई क्या है यह जानने के लिये एक आदमी को आया कप्पन के घर भेज दिया।

जैसे ही आया कप्पन ने उस आदमी को आते देखा, उसने तुरन्त अपनी बीबी को जमीन पर लिटा कर कफन उढ़ा दिया और स्वयं रोने लग गया। आदमी ने आया कप्पन को रोते देखा और राजा को सूचित कर दिया कि उसकी बीबी मर गयी है। जब रानी ने यह सुना तो उसे बड़ा अश्चर्य हुआ और अपनी एक दासी को सच्चाई का पंता लगाने के लिये भेज दिया। जब आया कप्पन ने दासी को देखा तो वह स्वयं जमीन पर लोट गया और उसकी बीबी रोने लगी। दासी ने यह सब देखा और राजा को जाकर सूचित कर दिया कि कप्पन मर गया है।

तब राजा और रानी दोनों उसके मकान में चले गये। जैसे आया कप्पन ने उनको आते देखा तो दोनों पति और पत्नी जमीन पर लेट गये और मुरदा होने का नाटक करने लगे। जब राजा और रानी निकट

पहुँचे, राजा ने रानी से कहा : 'मालूम पड़ता है पहले तो बीबी मरी है और बाद में उसका पति।' रानी ने तब इसका उत्तर दिया : 'नहीं ऐसा नहीं हो सकता। जब पति मर गया तो उस दुःख को उसकी बीबी सहन नहीं कर सकी इसलिये उस दुःख के कारण वह भी मर गयी।' वे आपस में झगड़ने लगे। तब राजा ने कहा कि : 'जो भी कोई मुझे सत्य बात बता देगा, उसे मैं एक गांव इनाम में दूंगा' इसे सुनकर आया कप्पन उठ कर बैठ गया और राजा के चरणों में झुक कर बोला : 'अन्नदाता ! पहले मैं मरा था।'

तब दासी भी एकाएक उठकर खड़ी हो गयी और रानी के चरणों में झुक कर बोली 'मालिकन ! पहले मैं मरी थी।'

राजा और रानी हक्के-बक्के रह गये। आया कप्पन ने तब कहा : 'मालिक ! कृपा कर इस चालाकी के लिये मुझे क्षमा कीजिये, इस नाटक को किये बिना हमारा गुजारा नहीं हो पाता।' राजा बहुत खुश हुआ, आया कप्पन की इस सच्चाई पर। और उसे एक ग्राम और बहुत सा मालमत्ता भी इनाम में दिया। इसके बाद वे प्रसन्न रहने लगे।

ज्योतिर्मयी रानी

एक समय अवध का राजा शिकार खेलने
था। वह अचानक अपने साथियों से जुदा हो ग
रात होने पर वह एक नगर में जा पहुँचा। वह वा
में गया और दियासलाई की डिबिया खरीदनी
जिससे दीपक जला सके। दुकानदार ने कहा: '
बेकार तेल क्यों खर्च करते हैं? इस नगर में द
जलाने की आवश्यकता नहीं हैं।' 'यह कैसे?' च
होकर राजा ने पूछा। दुकानदार ने उत्तर दिया:
नगर की राजकुमारी बहुत सुन्दर है। वह रा
इक्कीस पानी के घड़ों से स्नान करती है, और
बाद महल की छत पर खड़ी हो जाती है।
शरीर की ज्योति पूरे नगर को ज्योतिर्मय बना
है।' राजा को बहुत आश्चर्य हुआ, और इस
स्त्री को देखने के लिये वह उत्सुक हो गया। इसी
के लिये वह महल की ओर चल दिया।

कुछ समय बाद राजकुमारी ने इक्कीस घड़ों के पानी से स्नान किया और अपनी छत पर जाकर खड़ी हो गई। पूरा नगर उसकी ज्योति से प्रकाशित हो गया। राजा ने सोचा कि ऐसी सुन्दर स्त्री तो उसकी पत्नी होनी चाहिये और एक दूती को उसके पास भेजा और कहा कि अवध का राजा उसके द्वार पर खड़ा है और उसे अपनी रानी बनाना चाहता है।

राजकुमारी की माता दरवाजे पर आयी और कहा: 'अगर आप हमारे लिये ऐसे दो कुंए बनवा दें, जिनका पानी इस नगर के निवासियों के लिये पर्याप्त हो, तो मैं अपनी पुत्री से आपका विवाह कर दूंगी।'

राजा ने सोचा कि यह तो बहुत छोटा काम है। उसने कुछ मजदूर और कारीगरों को एकत्र किया कि वे ऐसे दो कुंए बना दें। मजदूर काम करने लगे, परन्तु एक माह बीत जाने पर भी वैसे कुंए नहीं तैयार हो सके। राजा के पास और पैसा नहीं था कि वह उनको मजदूरी दे सके। इसलिये उसने स्वयं जमीन खोदना आरम्भ किया, कुओं को भरने के लिये। राजा को स्वयं कुए खोदते हुए देख कर राजकुमारी को दया आ गई। अपनी माता को बताये बिना, उसने राजा के पास एक अंगूठी भेजी कि इसके दो टुकड़े करके

हुआ कि वह पागल हो गया और नगर में सब ओर मेरी रानी, मेरी रानी चिल्लाता हुआ घूमने लगा।

जब वह इस तरह पुकारता हुआ, उस सौदागर की हवेली वाली गली से गुजरा तो रानी ने जो सबसे ऊपर की मंजिल में कैद थी, उसकी आवाज सुन ली और पहचान गई। खिड़की से देखती हुई उसने
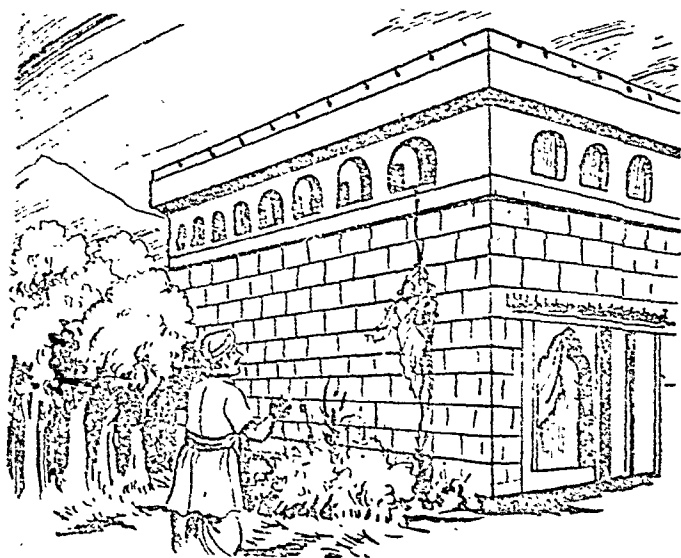
कहा : 'ओह ! अवध नरेश, मैं यहाँ कैद हूँ। एक रस्सी मुझे फेंक दो, जिससे उसकी मदद से मैं नीचे आ जाऊँ।' राजा बहुत खुश हुआ और रस्सी तलाश

करने लगा। लेकिन रानी की आवाज एक भंगी ने सुन ली थी। राजा के लौटने से पहले उसने स्वयं एक रस्सी ऊपर को फैंक दी। रानी नीचे उतरी तो उसने देखा कि वहां राजा के बजाय एक भंगी खड़ा हुआ है, जिसने रस्सी फैंकी थी। भंगी उसको जबरदस्ती अपने घर ले गया।

जब राजा लौटा तो रानी उसे नहीं मिली। वह जिस प्रकार पहले पागल होकर नगर की गलियों में चक्कर काट रहा था, उसी प्रकार अब भी चक्कर काटने लगा। सौदागर को भी वह नहीं मिली, वह भी उसी प्रकार पागल बना हुआ था।

भंगी हुक्का पीने का शौकीन था। वह रानी से चिलम भरवाता और दिन भर हुक्का पीता रहता। एक दिन रानी ने इतनी तेज तम्बाकू चिलम में भर दी कि वह बेहोश हो गया। रानी उसके घर से भाग निकली। और पड़ौस के राज्य में उसका भाई राजा था, उसके पास जा पहुँची। जब भंगी को होश आया, तब वह भी पागल हो गया और, 'अब मेरी चिलम कौन भरेगा' इस भाँति पुकारता हुआ गलियों में चक्कर काटने लगा।

रानी ने अपने भाई से कहा : 'जितने भी पागल

आदमी इस नगर में हैं, पकड़वा मँगाओ और मेरे सामने खड़े कर दो। और उनमें ही मेरा पति होगा, सौदागर और भंगी भी होगा।' रानी ने इन तीनों को रोक लिया और सबको छोड़ दिया। तब उसने सौदागर और भंगी को तो अच्छी तरह पिटवाया। राजा ने सोचा कि वह भी इसी तरह पीटा जायेगा, परन्तु उसको स्नान करके अच्छे नये कपड़े पहनाये गये और तब उसे महल में बुलाया गया। जब वह महल में पहुँचा, तब उसकी रानी ने जो कुछ बीता था, सब कह सुनाया। राजा अब पुनः अपनी रानी के साथ आनन्द से रहता हुआ कुछ दिन बाद अवध के लिये रवाना हो गया।

गैल हागरा

एक हांडारोखुं गाँव था। वहाँ हरजी पटेल नामक एक किसान रहता था। हरजी पटेल की अवस्था ढल चुकी थी। काम-काज कुछ होता नहीं था। राम-नाम की माला फेरने के दिन थे। परन्तु इनका मन स्थिर नहीं था, इसलिये कुछ सूझता नहीं था। इनके लिये तो ईश्वर के घर का दरवाजा खुल चुका था।

हरजी पटेल का बेटा मेपा का विवाह शहर में हुआ था। बहू का नाम चंपा था। वह शहर की रहने वाली थी, इसलिये गाँव में मन नहीं लगता था। आठ दस दिन होते-होते तो उसका मन गांव से उचट जाता था। वह मेपा की आज्ञा लेकर पीहर में मन बहलाने चली जाती।

बाकी आमतौर से चंपा चतुर सुजान और गुण-वान थी। काम करने में भी होशियार थी। मेपा को लगता था कि, ऐसा ही होता है, पीहर की माया एक-

दम कैसे छूट सकती है ? दिन बीतने पर इसका मन यहाँ अपने आप ही लग जायेगा ।

.........परन्तु हरजी पटेल का जीव घुट रहा था । उसको लगता था कि : 'बहू इस प्रकार बरबादी करती रहेगी तो उसको ढंग पर लाने में बड़ी कठि-नाई पड़ेगी । भला पीहर में ऐसा क्या रक्खा है जो इससे

नहीं कही जाती । मेपा तो तमाम दिन खेतों के काम से ही छुटकारा नहीं पाता है इसलिये इसे किसी

की अधिक परवाह नहीं है। जमाना वदल चुका है। ऐसा कुछ हो सकता कि इसे वंधन में रक्खा जा सकता। मैं हूँ ही कौन ? हरजी पटेल ! अच्छे-अच्छों को मैंने जमीन दिखा दी थी, तो एक वहू की क्या बिसात ? हा हा हा हा ? इस प्रकार खोखले मुख से वड़बड़ाते हुए मूँछों पर हाथ फेरकर खंखार दिया।

हरजी पटेल चल दिये शहर में और बहू को बुला लाने। उसने मन में निश्चय कर लिया था कि घर के दरवाजे पर बैठा रहना और बहू पर नजर रखना।

मेपा सवेरे ही उठ वैठा और जरूरी कामों से निपटने गाँव की सीमा पर चला गया। चंपा ने धड़ाधड़ घर का काम करना शुरू कर दिया। कुंए पर पाँच घड़ा पानी भर लिया। रांधने-खाने का काम-काज निपटा कर मेपा का खाना खेत पर पहुँचा दिया। कूड़ा-करकट झाड़ू लगाकर साफ किया और दोपहर का समय निकल गया। मेपा सुबह से कपड़े पहनकर चला गया था। चंपा तसले में कपड़े रखकर पानी की वाल्टी लेकर कुँए चली गई थी। हरजी पटेल तो वैठे हुए, वहू क्या करती है यह देख रहे थे। मानो कि चम्पा के ऊपर पक्का पहरा लगा रक्खा है।

कुंए के किनारे चार मुसाफिर पानी पीने के लिये आ गये। कुँए के पास ही नीम का छायादार वृक्ष था। उसकी छाया में चारों बैठ गये और रोटी खाना शुरू कर दिया। कुछ देर बाद चारों में से एक खड़ा होकर बोला कि : 'चलो, अब पानी पी लिया जाये।' ऐसा कहकर वे तो चंपा जहाँ कपड़े धो रही थी, वहाँ जाकर कहने लगे कि :

'बहन ! पानी पिला दो।'

'भाई ! पानी की गागर भरी हुई है और दूसरी भी भर दूँगी, परन्तु तुम्हारी जाति क्या है?'

'हम तो मुसाफिर हैं।'

'मुसाफिर तो दो हैं, परन्तु तीसरा कौन है? इसका उत्तर देने के बाद पानी पीना।'

मुसाफिर ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया और पानी पिये बिना वापिस चला गया।

पहले तीन आदमी नीम की छाया में बैठे थे वहीं गया। उन्होंने पूछा कि :

'भाई पानी पी लिया?'

'कुँए के किनारे एक बाई कपड़े धो रही थी, परन्तु पानी नहीं पिलाया।'

'दयावान तो कुंआ खुदवाते हैं और यह बाई कुँए

के किनारे प्यासे रखती है। बड़ी खराब बात है। लाओ, मुझे जाने दो' ऐसा कहकर दूसरा एक आदमी उठा। वह तो चम्पा के पास जाकर कहने लगा कि : 'बहन ! पानी पिला दे, पानी। कुंए के किनारे से तू प्यासा वापिस भेज देती है ? दयावान कुंआ खुदवाते हैं और तू वापिस भेजे, यह कहाँ का न्याय है ?'

'भाई ! यह एक गागर भरी हुई है। और दूसरी भर दूँगी। परन्तु मैं तुमसे पूछती हूँ कि तुम हो कौन ?'

'हम तो छैला हैं।'

'छैला तो दो हैं और तीसरा कौन ?' इसका उत्तर दो और पानी पी लो।

अगले को कुछ समझ नहीं पड़ा इसलिये उसने कोई उत्तर दिया नहीं और पानी पिया नहीं। मकान के दरवाजे बैठे हुए चम्पा पर कड़ी नजर रखते हरजी पटेल का जीव थर-थर काँपने लगा। उसने मन में सोचा कि : 'ये ही हैं भगाने वाले, दूसरे कोई नहीं। देखो न बाहर फिरती हुई इनसे कानाफूंसी कर रही है।'

दूसरा मुसाफिर भी नीम के नीचे वापिस जा पहुँचा। उससे तीनों ने पूछा कि : 'क्या कर आये ?'

'मेरी बेटी ! माथा मारती है। पानी पिलाती नहीं और आड़ी-टेढ़ी बातें बना रही है।'

'तब चारा ही क्या है। मैं पी आऊँ ?'

तीसरा मुसाफिर खड़ा हुआ और चम्पा के पास जाकर बोला : 'बहन ! पानी पिला। पूरा कुंआ पानी से भरा हुआ है और तुम प्यासे रखती हो, यह भी कोई बात हुई।'

'भाई ! धीरज रक्खो। एक गागर भरी हुई है और दूसरी भर दूँगी। परन्तु तुम हो कौन ?'

'हम तो हैं गरीब।'

'गरीब तो दो ही हैं, तू तीसरा कौन ? इसका उत्तर दे दे और पानी पी ले।'

उसको कुछ उत्तर नहीं सूझा, इसलिये वह भी पानी पिये बिना लौट गया।

पहलों ने इससे पूछा कि :

'क्यों दोस्त ! पानी पिया ?'

'नहीं पिलाती है।'

'अरे नहीं क्या होती है ? यह तो क्या, परन्तु इसके पीर को भी पानी पिलाना पड़ेगा।' ऐसा कह कर चौथा एक आदमी बचा था, वह कुँए पर जा पहुँचा।

उसने जाते ही आड़ा टेढ़ा बोलना शुरू किया। फिर कहा कि, 'पानी पिला दे न मेरी बहन, पिलाना होवे तो। हम को प्यासा रखकर तुम्हें क्या मिलेगा ? दयावान कुंआ खुदवाते हैं और तुम पानी पिलाने से भी इनकार करती हो !'

'पानी की मैंने ना कब करी ?··· परन्तु तुम हो कौन ?'

'जो और हैं वही !' ऐसा कहकर वह फिर अंट-संट बकने लगा।

फिर उसने कहा कि : 'मैं नहीं जानता।'

चंपा उसकी ओर देखती रही।

'हम तो हैं गैल हागरा !'

'गैल हागरे तो दो ही हैं फिर तीसरा कहाँ से आया ?' इसका उत्तर दे दो और पानी पी लो।

'इस प्रकार तो हमसे उत्तर दिया नहीं जाता। जा, उत्तर नहीं देता। तुम्हारे पानी पर चांद उगा है, दूसरे से ही पी लिया जायेगा।' ऐसा कहकर मुख आगे और पूँछ पीछे करके वह लौट गया।

चारों ही मुसाफिर कुँए के किनारे से प्यासे लौट गये।

इधर हरजी पटेल के मन में वहम के बादल घिर

आये। उसको लगा कि : 'मेरे बेटा ये ही भगाकर ले जाने वाले, दूसरा कोई नहीं। अब इनको तमाशा दिखाता हूँ कि कितने बीसी सौ होते हैं। हरजी पटेल ने किसी के गिरवी नहीं रखा, जिससे दब जाये।'

गंगा जमुनी ने हुक्का गुड़गुड़ाना छोड़ दिया और वह तो लपकर खड़ा हो गया और पहुँच गया। दरबारगढ़ के दरवाजे पर। दूर से ही पुकारने लगा :

'बापू ! फरियाद, फरियाद।'

सवासेर अफीम का कसुंबा लेकर गद्दी तकिये के सहारे बैठे हुए बापू ने जोर से आवाज लगाई : 'अरे क्या है गोली के बच्चे। हल्ला मचाता क्यों आया है। बारह बरस के बापू सीधे बैठ गये और बोले तुम्हें कौन निगले जा रहा है ?'

'हमारे बेटे की बहू को भगा ले जाने वाले अपने गांव की सीमा में आ पहुँचे हैं। चार आदमी हैं।'

'अरे ! कौन है बाहर ?'

एक बुलाने पर इक्यासी सिपाही प्यादे हाजिर हो गये।

'जाओ, हथकड़ियाँ लेकर पहुँचो और उन हरामखोरों को यहां हाजिर करो।' सिपाही प्यादों के साथ हरजी पटेल दौड़ पड़े। आगे से ही उँगली उठाकर उसने

कहा कि : 'वे रहे चारों ।'

तीन टके की नौकरी और बारह खंडो मिजाज ! सिपाही प्यादों ने चारों को हथकड़ी पहना दी और ले गये दरबारगढ़ के दरवाजे पर ।

उन चारों ने बहुत पुकार मचाई परन्तु वहाँ सुने कौन ?

सिपाही प्यादों ने कहा कि : 'बापू ! चारों को पकड़ लाये हैं ।'

हमारी नजरों के आगे इन काले मुख वालों को मत लाना । इन्हें तो अंधेरी कोठरियों में बन्द कर दो ।

चारों को ही चार कोठरियों में अलग-अलग बंद कर दिया ।

हरजी पटेल घर चले गये । चंपा कपड़े धोकर आ गई । कपड़े सूखने के लिये डालकर वह बचा हुआ काम निपटाने में लग गई ।

दरवाजे पर बैठे हुए हरजी पटेल कह रहे थे : 'बहू, कई दिन से तुम्हें भगा ले जानें की कोशिश कर रहे थे, परन्तु आज तो इन तुम्हारे लोंडों को बन्द करवा दिया है । कई दिन से मैं उनकी तलाश में बैठा हुआ था परन्तु वे आज पकड़ में आ ही गये । सज्जड बंध कर दिया है' ऐसे बड़बड़ाते रहे परन्तु साफ-साफ

कुछ नहीं कहा ।

चंपा को लगा कि : 'आज काका क्या बड़बड़ा रहे हैं ?'

कुछ देर के बाद दरबारगढ़ के सिपाही प्यादे हरजी पटेल के घर आकर खड़े हो गये । उन्होंने चंपा से कहा कि : 'अरे बाई ! तुम्हारे काका क्या कर रहे हैं ?'

अब चम्पा के मन में तुरन्त शक पैदा हो गया कि : 'काका ने कुछ कर डाला है । म्हारो बुड्ढा तभी कुछ बड़बड़ा रहा था ।'

चम्पा ने कहा कि : 'सुनो भाई ! दरबारगढ़ से बुलावा आया है इसलिये कुछ तो मामला होगा ही ।'

सिपाही प्यादों के साथ चम्पा पहुँची, दरबारगड़ के दरवाजे पर । खड़खड़ जूतों की आवाज करते हुए हरजी पटेल पीछे चल दिये ।

चम्पा एक तरफ घूंघट निकालकर सलाम करके खड़ी रही ।

दरबार ने कहा कि : 'इसमें तुम क्या जानती हो ?'

'किसमें ?'

'तुम्हारे सासरे में ये चारों ही आये हैं न ?'

चम्पा ने तुरन्त इन चारों के विषय में जो कुछ बीता था, वह साफ-साफ कह सुनाया। सुनकर मालिक सावधान हो गये।

उन्होंने कहा कि : 'यह सभी वात सत्य हैं, परन्तु यह वताओ कि वे दो मार्गी कौन हैं ?'

'चाँद और सूरज दो' तीसरा कोई नहीं ?

कान के कौने को पकड़ कर वापू वोले कि : 'यह तुम्हारी वात सोलह आने सत्य है। और ये दो गैल-हागरा कौन ?'

'आप और मेरा सासरा दो। इन्होंने तेल नहीं देखा, न तेल की धार देखी और आपके पास फरियाद कर डाली। और आप ने भी अन्दर हाथ डालकर कुछ छान नहीं की और हुकुम छोड़ दिया।' चम्पा ने अच्छा खासा उत्तर सुना दिया।'

वापू को लगा कि : 'वाई भी हमें दिमाग वाली मिली है। भारी पाठ पढ़ा दिया।

फिर उन्होंने सिपाही प्यादों को आज्ञा दी। चारों ही मुसाफिरों को रिहा कर दिया गया। चम्पा की अच्छी पहरावणी की। चम्पा हँसती मलकती अपने घर गई।

काना भाई

एक गाँव में दो भाई रहते थे। बड़ा भाई सुन्दर और चालाक था, परन्तु छोटा भाई काना था, परन्तु मूर्ख नहीं था। बड़ा भाई छोटे को पसन्द नहीं करता था। उसने छोटे भाई को घर से निकाल दिया।

बिचारे काने भाई से कोई शादी करना नहीं चाहता था। बहुत प्रयत्न करने पर उसको एक कानी लड़की मिल ही गई। उसके दुर्भाग्य को और बढ़ाने के लिये उसके भाई ने दो अच्छे बैल स्वयं रख लिये और उसके लिये एक काना बैल ही दिया। लाचार होकर छोटा भाई दूसरे बैल के स्थान पर अपनी स्त्री को ही हल में जोत लेता था।

एक दिन जब वह अपने खेत को जोत रहा था, अपनी पत्नी और एक बैल के साथ, तब भगवान शिवजी पार्वती के साथ उधर आ निकले। पार्वती जी बोलीं : 'स्वामी! चलो देखें कि यह कैसा आदमी है,

जो बैल के स्थान पर पत्नी को हल में जोतकर काम ले रहा है।' जब पार्वती जी ने काना भाई से पूछा, तब उसने इस दुःखदायी कहानी को स्पष्ट किया, पार्वती जी को दया आ गयी और शिवजी से कहा : 'यदि आपके लकड़ी के कमण्डल में कोई चीज है तो कृपाकर इस गरीब आदमी को दे दो।' महादेव जी ने अपने कमण्डल में हाथ डाला और लौकी के पाँच बीज काना भाई को दे दिये और उससे बोले : 'इन बीजों को अपने खेत में बो दो।' काना भाई ने चारों कोनों में चार बीज बो दिये और एक बीज खेत के बीच में बो दिया। कुछ ही दिनों में लौकी की बैलें खेत में चारों ओर फैल गईं, और सैकड़ों लौकियाँ प्रतिदिन मिलने लगीं। वह उनको देखकर खुशी से भर गया, और जब लौकियाँ काफी बड़ी हो गयीं, उसने अपनी स्त्री के साथ उनको तोड़-तोड़कर एक ढेर कर दिया तथा घर में ले जाकर रख दिया। जब काना भाई की पत्नी एक लौकी को काटकर पकाने लगी तब उसने चकित होकर देखा कि पूरे बर्तन में चावल भरे हुए हैं। उसनें सब लौकियों को काट डाला। फिर तो उसके घर में चावलों के ढेर लग गये।

इससे काना भाई के भाग्य की कहानी पूरे गांव में

फैल गयी। जब इस घटना के समाचार उसके बड़े भाई को मिले तब उसे वहुत बुरा मालूम पड़ा। एक रात को छिपकर वह काना भाई के घर में घुस गया और आग लगा दी। घर में राख ही राख भर गई। काना भाई को वड़ा दु:ख हुआ। उसने उस राख को एक वर्तन में भर लिया और उसको उठाते हुए अपनी पत्नी से कहा 'तुम यहीं रहना। मैं इस राख को वेचने जा रहा हूँ।'

जब काना भाई वाजार में से जा रहा था, तब राख से भरा हुआ बर्तन उसने वैल की पीठ पर रख रक्खा था। वह रास्ते में जाते हुए एक सौदागर से मिला। सौदागर दिन भर दुकान का काम करके उसे वंद करने के वाद घर जा रहा था। उसके साथ उसका वेटा भी था, जो थका हुआ था। उसने काना भाई से कहा : 'यह छोटा वच्चा वहुत थका हुआ है, इसे अपने वैल पर वैठा लो। घर पहुँचने पर मैं तुम्हें अच्छी मजदूरी दे दूंगा।' कान्हा भाई ने उत्तर दिया : 'नहीं सेठजी यह थैलियाँ पूरी सोने और चांदी से भरी हुई हैं। अगर आपका पुत्र उन्हें खराव कर देगा तो उन सवकी राख हो जायेगी।' सौदागर ने कहा, 'भाई ! डरो मत, अगर मेरा पुत्र थैलियों को खराब

कर देगा और तुम्हारा कीमती बोझा राख बन जायेगा तो मैं राख के बराबर वजन का सोना और चांदी तुम्हें दे दूंगा।'

काना भाई ने सौदागर के पुत्र को उठाया और थैलियों के ऊपर बिठा दिया। उस समय रात हो गई थी, जब वे सेठजी के घर पहुँचे। जैसे ही कानाभाई ने बच्चे को नीचे उतारा, वह गुस्से से गुर्राने लगा और कहा सेठजी, : 'देखिये मेरा तमाम सोना और चांदी कुछ नहीं बचा है, सब की राख हो गयी है, आपके पुत्र ने मेरी थैलियां खराब कर दी हैं।' सौदागर ने देखा कि वह सत्य था। वहाँ राख के सिवा कुछ नहीं था। जैसा कि उसने वादा किया था, बदले में राख के वजन के बराबर सोना-चांदी काना भाई को दे दिया। काना भाई खुशी में भरा हुआ अपना बैल लेकर घर लौट आया। भाई प्रसन्नता से दिन बिताने लगा।